अषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष 20 वर्ष, अंक 235 पृष्ठ 8 मूल्य 1.00

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज से प्रकाशित

www.akhandbharatsandesh.net

नगर संस्करण प्रयागराज | शुक्रवार 20 अगस्त 2021 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

क्रियायोग संदेश

स्थायी सुख, शान्ति व निर्भय वातावरण के लिए "क्रियायोग अभ्यास करें" सत्य की अनुभूति में सभी प्रकार के क्लेश हमेशा के लिए दूर हो जाते हैं। अध्यात्मिक वैज्ञानिकों ने सिद्ध कर दिया है कि क्रियायोग के द्वारा हम सत्य से जुड़ जाते हैं। ज्ञान, शक्ति, शान्ति, आनन्द, नाम-यश, धन आदि के लिए मनुष्य को दर-दर भटकना पड़ता है, और प्राप्त न होने पर मनुष्य में हिंसक प्रवृत्ति प्रकट होती है। क्रियायोग में भक्ति दृढ़ होने पर ज्ञान, शक्ति, शान्ति,आनन्द, धन आदि सब कुछ स्वयं मनुष्य के पास आ जाते हैं।

क्रियायोग प्राचीनतम् एवं नित्य नवीन पूर्ण विज्ञान है। ईश्वरीय नियमों के अनुसार कलिकाल में क्रियायोग का ज्ञान विलुप्त हो गया। आरोही द्वापर युग के आते ही मृत्युंजय अमर गुरु श्री महावतार बाबा जी द्वारा क्रियायोग को पुनर्जीवित कर पुनः परिष्कृत किया गया। उन्नीसवीं शताब्दी में महावतार बाबाजी ने क्रियायोग को लाहिड़ी महाशय जी के माध्यम से मानवजाति को दिया। क्रियायोग ही सनातन धर्म में वर्णित यज्ञ है। क्रियायोग ही वेदपाठ है। क्रियायोग अभ्यास से मनुष्य को अपने वास्तविक स्वरूप "अहंब्रह्मास्मि" की अनुभूति एक ही जन्म में सम्भव है।

स्वामी श्री योगी सत्यम्

क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान

प्रयागराज

10 मिनट का अभ्यास 20 वर्ष का विकास

यूपी चुनावः अमित शाह के घर पर हुई अहम बैठक

जेपी नड्डा और सीएम योगी के साथ साढ़े तीन घंटे तक मंथन

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव के लिए भारतीय जनता दल ने तैयारियां तेज कर दी हैं। इसको लेकर एक चुनावी बैठक गुरुवार को केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के आवास पर हुई। इस बैठक में हिस्सा लेने के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भी पहुंचे थे। उनके अलावा भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड?डा, यूपी भाजपा अध्यक्ष स्वतंत्र देव सिंह, संगठन मंत्री सुनील बंसल भी शामिल रहे। सूत्रों का दावा है कि करीब साढ़े तीन घंटे तक चली इस बैठक में उत्तर प्रदेश चुनाव से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई। गौरतलब है कि 2022 में उत्तर प्रदेश के साथ-साथ कई अन्य राज्यों में भी विधानसभा चुनाव होने हैं। इसको लेकर विभिन्न राजनीतिक दल अपनी तैयारियों में जुट गए हैं। इस बार तो औवैसी की पार्टी ने भी यूपी में चुनाव लड़ने का मन बनाया है।

अमित शाह के घर इस बैठक में क्या चर्चा हुई इस बारे में औपचारिक तौर पर कुछ नहीं बताया गया। लेकिन सूत्रों का दावा है कि इस दौरान उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से जुड़ी रणनीति की रूपरेखा को लेकर चर्चा हुई। साथ ही उत्तर प्रदेश विधान परिषद में खाली चार सीटों पर उम्मीदवारों के बारे में भी चर्चा की गई। इससे पहले, जून महीने के मध्य में योगी ने दिल्ली का दौरा किया था। उस दौरान उन्होंने भाजपा के शीर्ष नेताओं के अलावा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भी मुलाकात की थी। बता दें कि मुख्यमंत्री योगी का दिल्ली दौरा ऐसे समय में हुआ है जब उत्तर प्रदेश विधानसभा का मानसून सत्र निर्धारित समय से पहले ही अनिश्चित काल के लिए स्थगित कर दिया गया। इससे पहले विधानसभा में 2021-22 के लिए 7301.52 करोड़ रुपए का अनुपूरक बजट ध्वनिमत से पारित हुआ।

तालिबान संकट के बीच बोले रक्षा मंत्री राजनाथ, भारत के लिए बढ़ गईं चुनौतियां

नई दिल्ली (एजेंसी)। रक्षामंत्री राजनाथ सिंह ने देश में मजबूत, सक्षम और आत्मनिर्भर रक्षा उद्योग की आवश्यकता पर जोर देते हुए गुरुवार को कहा कि दुनिया में बदलते भूराजनीतिक हालात की वजह से भारत के लिए राष्ट्रीय सुरक्षा की चुनौतियां बढ़ गई हैं और जटिल हो गई हैं। रक्षामंत्री ने ये बातें ऐसे समय पर कही हैं जब अफगानिस्तान में तालिबान के कब्जे के बाद भारत सहित कई देशों में चिंताएं जाहिर की जा रही हैं। तालिबान या अफगान संकट का जिक्र किए बिना रक्षा मंत्री ने कहा, "आज पूरी दुनिया में सुरक्षा के हालात तेजी से बदल रहे हैं। इस वजह से, हमारी राष्ट्रीय सुरक्षा की चुनौतियां बढ़ रही हैं और जटिल हो रही हैं। वैश्विक भूराजनीतिक हालात में लगातार बदलाव आते रहते हैं। वह 'डिफेंस इंडिया स्टार्टअप चैलेंज 5.0' के उद्घाटन के बाद बोल रहे थे। रक्षामंत्री ने कहा कि सुरक्षा चुनौतियों में तेजी से बदलाव को ध्यान में रखते हुए भारत को मजूबत, सक्षम और आत्मनिर्भर रक्षा उद्योग पर फोकस करना होगा ताकि सशस्त्र बलों की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। उन्होंने आगे कहा, "यह आवश्यक है कि हम ना केवल मजबूत, आधुनिक और अच्छी तरह से सुसज्जित बल तैयार करें, बल्कि अपना रक्षा उद्योग भी विकसित करना होगा, जो मजबूत, सक्षम और सबसे बढ़कर पूरी तरह आत्मनिर्भर हो। रक्षामंत्री ने इस सेक्टर में निजी क्षेत्र को भी निवेश के लिए आमंत्रित करते हुए कहा, "जब-जब टेक्नॉलजी की बात होती है, मेरे मन में अमेरिका, जापान, दक्षिण कोरिया जैसे उनन्त देश आते हैं। मुझे बतलाया गया है कि ये उनन्त देश अपनी टेक्नॉलजी के दम पर आगे बढे हैं। मैं सरकार की ओर से सभी संभव सहयोग का आश्वासन देते हुए, निजी क्षेत्र का आह्वान करता हूं कि आप लोग आगे आएं, और एक सशक्त और आत्मनिर्भर रक्षा क्षेत्र के निर्माण में अपना योगदान दें।

यूएनएस में विदेश मंत्री ने पाकिस्तान को लताड़ा, बताया कोरोना और आतंकवाद में क्या है कॉमन

नई दिल्ली (एजेंसी)। हमें यह याद रखना होगा कि आतंकवाद उसी तरह से घातक है, जिस तरह से कोरोना। हममें से एक भी इससे सुरक्षित नहीं रहेगा, जब तब कि सभी सुरक्षित नहीं रहेंगे। यह बात भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने गुरुवार को कही। वह आतंकवादी कृत्यों द्वारा अंतरराष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा के लिए खतरों पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की उच्च स्तरीय बैठक को संबोधित कर रहे थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि भारत, आतंकवाद से संबंधित चुनौतियों और क्षति से अत्यधिक प्रभावित रहा है। जयशंकर ने कहा, दुनिया को आतंकवाद की बुराई से कभी समझौता नहीं करना चाहिए।

इस दौरान भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा कि भारत मानता है कि आतंकवाद को किसी धर्म, राष्ट्रीयता, सभ्यता या जातीय समूह से नहीं जोड़ा जाना चाहिए। आतंकवाद के सभी रूपों, अभिव्यक्तियों की निंदा की जानी चाहिए, इसे किसी भी तरह न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता। उन्होंने कहा कि कुछ ऐसे देश हैं जो आतंकवाद से लड़ने के हमारे सामूहिक संकल्प को कमजोर करते हैं, इसकी अनुमति नहीं दी जा सकती। आईएसआईएस का वित्तीय संसाधन जुटाना और अधिक मजबूत हुआ है।

सीधे डीएसपी बनेंगे इंटरनेशनल खिलाडी : सीएम

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी में अंतरराष्ट्रीय खिलाड.ियों को सीधे राज्यपत्रीत अधिकारी पद की नौकरी मिलेगी, वह सीधे पुलिस में डीएसपी बनेंगे। सीएम योगी ने यह बात ओलंपिक खिलाड.ियों के लिए आयोजित किए गए सम्मान समारोह के दौरान कही। लखनऊ के अटल बिहारी वाजपेयी इकाना स्टेडियम में आयोजित ओलंपिक खिलाड.ियों को सम्मानित करते हुए सीएम योगी ने कई बड़ी घोषणाएं कीं। इस दौरान सीएम योगी ने दो खेलों को गोद लेने की भी घोषणा की। खेल जगत में पश्चिमी यूपी को सौगात देते हुए सीएम योगी ने कहा कि मेरठ स्पोर्ट्स यूनिवर्सिटी मेजर ध्यानचंद के नाम होगी। यूपी में खेलों को बढ़ावा देने के लिए सीएम योगी ने क्रीड़ाधिकारी, उप क्रीड़ाधिकारियों और सहायक प्रशिक्षकों के करीब 350 नए अतिरिक्त पदों की भी घोषणा की। ओलंपिक खिलाड.ियों पर धनवर्षा करते हुए सीएम योगी ने राष्ट्रीय स्तर पर चैंपियनशिप के लिए दी जा रही राशि को बढ़ाते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर सब-जूनियर/जूनियर चैंपियनशिप के लिए राशि 50000 रुपये से बढ़ाकर पांच लाख रुपये की जा रही है।

कोरोना के खिलाफ कैसे जीतेंगे जंग? देशभर में 3.86 करोड़ लोगों को समय पर नहीं मिली टीके की खुराक

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश में एक तरफ टीकाकरण अभियान में तेजी लाने का प्रयास किया जा रहा है दूसरी ओर 3.86 करोड़ लोगों को तय समय पर दूसरी खुराक नहीं मिल पाई। सरकार ने एक आरटीआई के जवाब में कहा है कि 3.86 करोड़ से अधिक लोगों को कोविड टीकों (कोविशील्ड और कोवैक्सीन) की दूसरी खुराक निर्धारित समय के भीतर नहीं मिली। कोविन पोर्टल पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार गुरुवार दोपहर तक 442285854 लोगों ने अपनी पहली खुराक प्राप्त की है, जबकि 125907443 ने भी अपनी दूसरी खुराक ली है। एक्टिविस्ट रमन शर्मा ने सूचना का अधिकार (आरटीआई) अधिनियम के तहत एक सवाल किया था, जिसमें सरकार से यह जानने की मांग की गई थी कि कितने लोगों को टीके की पहली खुराक मिली थी लेकिन निर्धारित समय के भीतर के भीतर दूसरी खुराक नहीं ली। सवाल के जवाब में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के ण्दृन्क्-19 वैक्सीन एडमिनिस्ट्रेशन सेल ने कहा कि यह अनुशंसा की जाती है कि कोविशील्ड की दूसरी खुराक पहले के 84-112 दिनों के भीतर ली जाए, जबकि कोवैक्सीन के मामले में अंतर 28-42 दिन के बीच होना चाहिए।

यूपी में बंद होंगे आठ तक के सभी स्कूल! डिप्टी सीएम दिनेश शर्मा ने सदन में दिए संकेत

लखनऊ (एजेंसी)। यूपी में कक्षा आठ तक के स्कूलों को भी विद्यार्थियों के लिए खोलने की तैयारी कर रही प्रदेश सरकार ने गुरुवार को विधान परिषद में स्पष्ट किया कि स्कूलों में विद्यार्थियों की उपस्थिति अनिवार्य नहीं होगी और जरा सा भी प्रतिकूल संकेत मिलने पर स्कूलों को बंद भी किया जा सकता है। परिषद में प्रश्नकाल के दौरान शिक्षक दल के सदस्य ग्रुप कुमार त्रिपाठी द्वारा पूछे गए सवाल पर नेता सदन उपमुख्यमंत्री डॉक्टर दिनेश शर्मा ने कहा बेसिक शिक्षा में उपस्थिति को अनिवार्य नहीं किया गया है। हमने नौ से 12 तक की कक्षाओं के लिए भी उपस्थिति को अनिवार्य नहीं किया है। उन्होंने कहा अभिभावकों और शिक्षकों तथा राजनीतिक संगठनों द्वारा भी कहा गया है कि चाहे कम समय के लिए ही सही, लेकिन ऑफलाइन शिक्षण कार्य कराया जाए। यूपी में अभी जो वातावरण है, इसमें हम सुरक्षा की तरफ बढ़ चुके हैं लेकिन अगर चिंता के संकेत मिले तो हम स्कूल को बंद भी कर सकते हैं।दरअसल ध्रुव कुमार त्रिपाठी ने स्वास्थ्य मंत्री जय प्रताप सिंह से सवाल पूछा था कि क्या अभी तक टीका नहीं लगवाने वाले शिक्षकों और 18 साल से कम उम्र के बच्चों के लिए टीकाकरण की कोई व्यवस्था की गई है या नहीं। सपा सदस्य रुद्र प्रकाश ने भी अनुपूरक सवाल के जरिए इस पर चिंता जताते हुए कहा कि टीकाकरण कराए बगैर छोटे बच्चों को स्कूल भेजना क्या खतरनाक नहीं है? नरेश उत्तम पटेल ने स्वास्थ्य मंत्री से कहा कि विद्यालय खुल गए हैं, ऐसे में कोविड-19 संक्रमण बच्चों में फैलने को लेकर जो चिंता है उसे कैसे दूर किया जाएगा।

तालिबानी हुकूमत पर मेनका गांधी ने जताई चिंता, बोलीं-वह महिलाओं की कद्र नहीं करता

सुलतानपुर (एजेंसी)। तीन दिवसीय दौरे पर पहुंचीं सांसद मेनका गांधी का आज जिले की सीमा अलीगंज में भाजपा कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया। श्रीमती गांधी अपने तीन दिवसीय दौरे में बिरसिंहपुर में ऑक्सीजन प्लांट समेत कई योजनाओं का शुभारंभ करेंगी। अमृत महोत्सव के अवसर पर देशभर में 75 बंदे भारत हाई स्पीड ट्रेनों के संचालन व सैनिक स्कूलों में बालिकाओं के प्रवेश के प्रधानमंत्री के निणय का स्वागत करते हुए श्रीमती गांधी ने कहा कि इससे नए भारत का निर्माण होगा। अफगानिस्तान पर तालिबान के कब्जे पर मेनका गांधी ने कहा कि यह पूरी दुनिया के लिए चिंता का विषय है।

बंगाल में खेला होबे दिवस को लेकर ममता बनर्जी पर बरसीं स्मृति ईरानी, कहा- रेप और मर्डर टीएमसी खेला है

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी ने पश्चिम बंगाल में 'खेला होबे' दिवस मनाए जाने को लेकर तृणमूल कांग्रेस पर निशाना साधा है। खेला होबे दिवस मनाए जाने को लेकर ईरानी ने कहा कि टीएमसी ने क्या खेला किया है? रेप, मर्डर इनका खेला है। टीएमसी अब आधिकारिक तौर पर महिलाओं के बलात्कार का जशन मनाएगी। यहीं ममता बनर्जी की राजनीति है। दरअसल, टीएमसी की मुखिया और राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने पिछले महीने ऐलान किया था कि बंगाल में 16 अगस्त को खेला होबे दिवस मनाया जाएगा। जिसके बाद 16 अगस्त सोमवार को टीएमसी ने पूरे राज्य में खेला दिवस मनाया और फुटबॉल मैच आयोजित किए। बता दें कि इस साल अप्रैल-मई में हुए विधानसभा चुनाव में 'खेला होबे' नारे का इस्तेमाल हुआ था। चुनाव में टीएमसी ने भाजपा को करारी शिकस्त दी थी।

'खेला होबे' दिवस मनाए जाने को लेकर बीजेपी ने भी निशाना साध चुकी है। खेला होबे दिवस मनाए जाने के ऐलान के बाद बीजेपी सांसद स्वपन दासगुप्ता ने ट्विटर पर कहा कि ममता बनर्जी ने 16 अगस्त को खेला होबे दिवस घोषित किया है। उन्होंने कहा कि यह वह दिन है जब मुस्लिम लीग ने अपना प्रत्यक्ष कार्य दिवस शुरू किया और 1946 में ग्रेट कलकत्ता हत्याओं की शुरुआत की।

खबर संक्षेप

बदनीयति से घर में घुसे युवक को किया पुलिस के हवाले

प्रयागराज। बदनियति से घर में घुसे युवक को पकड़ कर परिजनों ने पुलिस के हवाले कर दिया। नवाबगंज थाना क्षेत्र के ठाकुरी का पुरवा (लवाना) गांव के रहने वाले एक युवक ने नवाबगंज थाने में तहरीर देकर बताया कि मंगलवार को वह रिश्तेदारी में गए थे। घर में उनकी पुत्री अकेली थी। गांव के ही राकेश पुत्र राम सुमेर मंगलवार की रात छत के रास्ते से घर के अंदर आ गया। पुत्री का मुंह दबाकर छेड़खानी की। शोर मचाने पर परिवार और गांव के लोग एकत्र हो गए। सुबह आरोपी राकेश को नवाबगंज पुलिस के हवाले कर दिया। जिसमें नवाबगंज पुलिस ने पीड़िता के पिता की तहरीर पर घर में घुसकर छेड़खानी का मुकदमा आरोपी के विरुद्ध पंजीकृत किया गया ।

मोहर्रम : नहीं निकलेंगी इमामबाड़े पर ताजिया : एसडीएम

थाना कोरांव को ऐन पर्व पर पीस कमेटी की बैठक की आई सुधि

ताजियादारों ने दबे मन से माना हुक्म, कहा पहले हिदायत दी गई होती तो न बनाते लोग ताजिया, कहा सिर्फ मुस्लिमों के त्योहारों पर होती है पाबंदियां

अखंड भारत संदेश

कोरांव। प्रयागराज। थाना कोरांव में आयोजित ऐन मोहर्रम त्योहार के वक्त पर बुलाई गई पीस कमेटी की बैठक में उपस्थित सभी के विचारों बातों को दृष्टि गत उप जिलाधिकारी कोरांव अभिनव कनौजिया ने मोहर्रम के पर्व पर निकाले जाने वाली ताजियों को इमाम बाडा चौकों पर न निकालने का फरमान जारी किया है।

उक्त विषय में उप जिलाधिकारी के अलावां इंस्पेक्टर कोरांव ने भी ताजिया दारों को चौक पर ताजिया न निकालने की चेतावनी दी है। उप जिलाधिकारी ने कहा कि सरकार की कोविड १९ गाइड लाइन के मुताबिक त्योहार घर पे ही मनाएं। और बारी बारी से फूल फातेहा कराएं। जिससे कानून व्यवस्था और शांति व्यवस्था कायम रहे। वहीं ताजियादारो का कथन है कि जिस दिन मोहर्रम का चांद निकला था उसी दिन से ताजिया भी न बनाने की हिदायत दी गई होती तो ताजिया निर्माण में धन न ब्यय किया जाता। कुछ ने कहा कि हर जगह भीड़ भाड़ है हर जगह बड़े कार्यक्रम हो रहे हैं किन्तु सरकार ने मुस्लिम धर्म के ही त्योहारों पे पाबंदियां लगाती है। ताजियादारों ने सरकार की मंशा के मुताबिक ताजिया न निकालने का फैसला किया। जिससे सरकार की मंशा पूरी हो जाए।बैठक में कुछ आम जन व पत्रकार,ताजियादार ग्राम प्रधान मुस्लिम समाज के लोग मौजूद रहे।

पीस कमेटी थाना कोरांव की बैठक में भाग लेते एसडीएम बी आम जन

पीस कमेटी की बैठक में ताजियादारों ने गिनाई समस्याएं

कोविड को ध्यान में रखते हुए मनाएं पर्व : अवधेश

शंकरगढ़ थाना परिसर में हुई पीस कमेटी की बैठक

शंकरगढ़। मोहर्रम के पर्व को लेकर शंकरगढ़ थाने में पीस कमेटी की बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्राधिकारी बारा अवधेश कुमार शुक्ल ने सभी ताजियादारों की समस्याएं सुनीं और उनके समाधान का आश्वासन दिया। सीओ ने कहा कि सभी ताजियादार आपसी मेल जोल के साथ मोहर्रम का पर्व मनाएं। शासन की गाइड लाइन के अनुपालन में सभी लोग घर में ही मोहर्रम का पर्व मनाएं। इस दौरान ताजिया घर में रखकर ही पर्व को संपन्न कराएं। इस दौरान कोविड गाइडलाइन का पालन करें। क्षेत्राधिकारी ने कहा कि पर्व मनाने के साथ-साथ सभी को कोरोना से बचना है। इस बीच कुछ ताजियदारों ने ताजिया निकालने की बात कही, इस पर एसओ कुलदीप कुमार तिवारी ने कहा कि छोटी ताजिया (एक से डेढ़ फिट तक) ही ले जा सकते हैं, लेकिन जुलूस नहीं निकाला जाएगा। नायब तहसीलदार विश्वदीपक त्रिपाठी ने कहा कि शांतिपूर्ण माहौल में मोहर्रम का पर्व मनाएं। बैठक में एसआई अवनेंद्र सिंह यादव, व्यापार मंडल अध्यक्ष मूलचंद्र गुप्ता, महामंत्री रतन केसरवानी, उपाध्यक्ष जय केसरवानी, अरविंद केसरवानी, अर्पण केसरवानी,राजेश केसरवानी, सभासद सुनीता, उमा वर्मा, जमील अहमद, छन्ने मिया, चिराग अली, मोहम्मद यूनुस, गोलू खान, मोहम्मद साहिल, मोहम्मद साजिद, रसीद, मुख्तार अहमद आदि।

अनुपूरक बजट में राहत न दिए जाने पर शिक्षकों ने की सरकार की निन्दा

अखंड भारत संदेश

करछना। उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ वित्तविहीन गुट की आकस्मिक बैठक राजाराम उच्चतर माध्यमिक विद्यालय करेहा करछना प्रयागराज में जिलाध्यक्ष ननकेश बाबू की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमे प्रदेश सरकार द्वारा माध्यमिक वित्तविहीन विद्यालयों के शिक्षकों को मानदेय के नामपर फूटी कौड़ी न दिए जाने पर माध्यमिक शिक्षामंत्री तथा मुख्यमंत्री द्वारा अपनाए गए मार्ग की कटु भरथना की गई तथा कोरोना काल में शिक्षकों एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के प्रति क्रूरता अपनाने की निन्दा की गई।

ज्ञात हो कि संघ के प्रदेश अध्यक्ष/शिक्षक विधायक मा.लाल बिहारी यादव ने है सत्र के साथ वर्तमान सत्र में भी शिक्षकों की सेवा नियमावली तथा मानदेय का मुद्दा बड़े ही मार्मिक ढंग से उठाया था परन्तु सरकार ने शिक्षकों की खुली अनदेखी की तथा शिक्षा जगत के प्रति कठोरतम निर्णय लेकर सबका साथ सबका विकास का दंभ भरने वाली भाजपा सरकार की दूषित करामात उजागर हो चुकी है। संघ के जिलाध्यक्ष ननकेश बाबू ने सरकार को आगाह किया कि आगामी विधानसभा चुनाव की परवाह न करते हुए सरकार ने शिक्षक विरोधी निर्णय लेकर कलुषित मानसिकता परिचय दिया है। बैठक में शिक्षकों ने प्रदेश अध्यक्ष श्री लाल बिहारी यादव की प्रतिभा एवं वाकपटता की सराहना करते हुए विधान परिषद में संसदीय समिति का सदस्य चुने जाने की बधाई दी गई।

अनुपूरक बजट में राहत न मिलने पर सरकार की निंदा करते शिक्षक गण

बैठक में अभयराज सिंह, गुलाब सिंह, फूलचंद कन्नौजिया, नवीन शुक्ला, सीताशरण सिंह, बुधराम यादव, बालेंदु गौतम, अमरबहादुर, मानसिंह पटेल, जेपी यादव, अमरचंद गुप्ता, अवधेश श्रीवास्तव, कमलचंद, प्रेमचन्द यादव, अरविन्द कुमार, शिवमोहन सिंह पटेल, सर्वेश सहित अनेक शिक्षक एवं पदाधिकारी मौजूद रहे।

जितेन्द्र कुमार ने बीडीओ करछना का पद भार ग्रहण किया

करछना। विकास खंड करछना में विकास खंड अधिकारी नवीन गुप्ता का गत दिनों हस्तांतरण होने के पश्चात रिक्त पद पर गुरुवार को दोपहर बाद जिलें के आदेश पर जितेन्द्र कुमार को करछना का खंड विकास अधिकारी के पद पर आदेश होने पर चार्ज लेकर पद भार ग्रहण किया, और ब्लाक में तैनात सभी कर्मियों से काम काज के विषय में जानकारी से अवगत हुए ।जिसमें मनरेगा, आवास, शौचालय व अन्य कार्यों की प्रगति रिपोर्ट भी उपस्थित स्टाप से विभाग वार जानकारी से अवगत हुए ।इस बीच अल्प नरायन सिंह, मनीष शुक्ला, संतोष पांडेय, एडीओ पंचायत विवेक कुमार मिश्रा, मोहम्मद फिरोज, सहित सभी ब्लाक कर्मी मौजूद रहे।

पुलिस के हत्थे चढ़ा गैंगस्टर का आरोपी

अखंड भारत संदेश

पुलिस की गिरफ्त में गैंगेस्टर का आरोपी

शंकरगढ़,प्रयागराज। अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के क्रम में शंकरगढ़ थाने की पुलिस ने गैंगस्टर के एक अभियुक्त को गिरफ्तार किया है। गिरफ्त में आए अभियुक्त के खिलाफ शंकरगढ़ के साथ ही जीआरपी मिजार्पुर में भी दो मामले पंजीकृत हैं। उक्त जानकारी देते हुए एसओ कुलदीप कुमार तिवारी ने बताया कि अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के क्रम में अपराधियों की छानबीन की जा रही थी। इसी दौरान मुखबिर की सूचना पर पुलिस ने गैंगस्टर के अभियुक्त शनी भारतीया पुत्र रंगलाल भारतीया (निवासी ग्राम कांटी, घूरपुर) को धर दबोचा। थानाध्यक्ष ने बताया कि यह गिरफ्तारी पुलिस चौकी नारीबारी क्षेत्र से की गई है। शनी भारतीया के खिलाफ जीआरपी मिजार्पुर में दो मामले दर्ज हैं। जबकि शंकरगढ़ थाने में भी वह दो मामलों में वांछित था। इस गिरफ्तारी में एसओ के साथ कांस्टेबल विपिन कुमार, कांस्टेल आलोक पटेल, महिला कांस्टेबल लक्ष्मी आदि मौजूद रहीं।

सचिन गोस्वामी बने भाजपा युवा मोर्चा के क्षेत्रीय उपाध्यक्ष हुआ स्वागत

अखंड भारत संदेश

प्रतापपुर।अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के पूर्व पदाधिकारीसचिन गोस्वामी को भाजपा युवा मोर्चा काशी क्षेत्र का क्षेत्रीय उपाध्यक्ष बनाये जाने पर एबीवीपी कार्यकताओं में हर्ष की लहर है सचिन गोस्वामी 2013 से विद्यार्थी परिषद में सक्रिय रहे हैं। परिषद में कौशाम्बी जिला के संगठन मंत्री व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सह महाविद्यालय विद्यार्थी प्रमुख तक का सफर तय किया।काशी क्षेत्र के उपाध्यक्ष बनाए जाने पर समूचे प्रयागराज के कार्यकताओं में काफी खुशी है विद्यार्थी परिषद व भाजयुमो के कार्यकताओं ने अंग वस्त्र व माला पहनाकर बधाई दिया।इस मौके पर विद्यार्थी परिषद के जिला संयोजक शिवकुमार तिवारी तेजस्वी, पूर्व प्रदेश कार्यसमिति सदस्य सुमित तिवारी, पूर्व प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य आशीष त्रिपाठी, जिला मंत्री युवा मोर्चा दिलीप मणि सिंह, अनुराग ठाकुर, युवा मोर्चा मंडल अध्यक्ष हंडिया सूबेदार गुप्ता, चाहत पांडेय सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

क्षेत्रीय उपाध्यक्ष का स्वागत करते लोग

औद्योगिक नगरी नैनी में अनुप्रिया पटेल का हुआ जोरदार स्वागत

औद्योगिक नगरी नैनी में राज्यमंत्री अनुप्रिया पटेल का जोरदार स्वागत करते लोग

अखंड भारत संदेश

नैनी। औद्योगिक नगरी नैनी में जन आशीर्वाद यात्रा लेकर पहुंची केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल का अपना दल व भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारियों व कार्यकताओं ने जोरदार स्वागत किया। नैनी के शंकरढाल तिराहे पर भा.ज.पा मंडल महामंत्री पंडित रामजी मिश्रा के नेतृत्व एवं मंडल अध्यक्ष दिलीप केसरवानी की अध्यक्षता में शानदार स्वागत एवं अभिनंदन किया गया। इस दौरान सांसद रीता बहुगुणा जोशी, केसरी देवी पटेल, महापौर अभिलाषा गुप्ता नंदी, महानगर के अध्यक्ष गणेश केसरवानी, विधायिका नीलम करवरिया, पूर्व विधायक दीपक पटेल, विधायक हर्षवर्धन बाजपेयी, वरिष्ठ भाजपा नेता आशिक बाबा एवं अन्य हजारों गणमान्य लोग उपस्थित रहें। इसी प्रकार औद्योगिक क्षेत्र के आईटीआई लिमिटेड के मुख्यद्वार पर केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया को जन आशीर्वाद यात्रा में भाजपा नेताओं ने गाजे- बाजे के साथ स्वागत किया। इस मौके पर सांसद रीता बहुगुणा जोशी, यमुनापार महिला मोर्चा अध्यक्ष सविता शर्मा, आईटीआई मजदूर संघ पूर्व अध्यक्ष राजेश गिरि , राकेश निषाद, उमाशंकर शर्मा, गणेश तिवारी, टी बी सिंह, जयशंकर सिंह, मोहन लाल पांडेय, लालबहादुर साहू आदि लोग मौजूद रहे।

केंद्रीय राज्यमंत्री का जन आशीर्वाद यात्रा में कचरी गांव में हुआ भव्य स्वागत

अखंड भारत संदेस

करछना में जन आशीर्वाद यात्रा को लेकर राज्यमंत्री का हुआ स्वागत

करछना। जन आशीर्वाद यात्रा में राज्यमंत्री का भाजपा जिला उपाध्यक्ष एवं पूर्व जिला पंचायत सदस्य त्रिवेणी प्रसाद पाण्डेय के नेतृत्व में किया गया जोर दार स्वागत केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग राज्यमंत्री भारत सरकार व अपना दल एस की राष्ट्रीय अध्यक्ष माननीय श्रीमती अनुप्रिया पटेल के द्वारा जन आशीर्वाद यात्रा की शुरूआत बुधवार को रायबरेली से शुरू हुआ। जो दूसरे दिन बृहस्पतिवार को विधानसभा करछना क्षेत्र रामपुर, पचदेवरा, भीरपुर होते हुए कचरी ग्राम सभा में यात्रा पहुंचा। जहां केंद्रीय राज्य मंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल जी के साथ फूलपुर सांसद श्रीमती केसरी देवी पटेल, प्रयागराज की सांसद डॉ रीता बहुगुणा जोशी रही ।

यात्रा के दौरान जगह जगह अपना दल एस व भाजपा पार्टी के जनप्रतिनिधि व कार्यकताओं ने जन आशीर्वाद यात्रा का भव्य स्वागत और अभिनंदन किया। जिसके बाद केंद्रीय राज्य मंत्री का यात्रा कचरी गांव पहुंचा, जहां हजारों की संख्या में लोगों ने फूल माला देकर स्वागत हुआ। इस मौके पर देवी शंकर पटेल, पूर्व विधायक करछना दीपक पटेल, जिला अध्यक्ष बृजेश पटेल, मनोज पटेल, विष्णु शुक्ला, त्रिवेणी प्रसाद पांडे, डॉक्टर भगवत पांडे,परमानंद पटेल, आदि लोग रहे।

रक्षाबंधन: इस बार चाइना नहीं मेड इन इंडिया का जलवा

आलोक गुप्ता

रंगबिरंगी राखी से सजी दुकानें, बाजारों में बढ़ रही चहल-पहल मिठाई की दुकानों पर भी रक्षाबंधन को लेकर चल रहीं तैयारियां

शंकरगढ़,प्रयागराज। भाई-बहन के प्रेम का प्रतीक रक्षाबंधन 22 अगस्त को मनाया जाएगा। देश में रक्षा बंधन का पर्व बड़े उल्लास के साथ मनाया जाता है। रक्षा बंधन को लेकर क्षेत्र में तैयारियां जोरों पर हैं। रक्षाबंधन के सप्ताहभर पहले से ही क्षेत्रीय बाजारों में चहल-पहल बढ़ गई है। स्थाई दुकानों के साथ ही अस्थाई दुकानें सडक पर लगने लगी हैं, जिससे बाजारों में चहल -पहल बढ़ गई है। रक्षाबंधन के इस पर्व पर सजी राखी की दुकानों पर चाइन मेड की अपेक्षा भारतीय/देशी राखियों की भरमार दिख रही है। इसमें बड़ों के साथ-साथ बच्चों को आकर्षित करने वाली राखियां हैं, जिसमें टीवी चैनल के कार्टून वाले तमाम किरदारों के चित्र छपे हैं। सिर्फ धागे से बनी राखियों की भी खूब डिमांड है। सराफा कारोबारियों ने भी चांदी की राखी का स्टाक रखा है। शहर के सिविल लाइंस के साथ ही कटरा, चौक, घंटाघर, खुल्दाबाद, सदर बाजार, राजापुर, कटरा, दारागंज सहित फाफामऊ, झूंसी और फाफामऊ में रक्षाबंधन पर्व को लेकर खासी चहल-पहल देखी जा रही है। पिछले वर्ष रक्षाबंधन का पर्व कोरोना के साले में बीता था, इस बार लोगों को काफी राहत है। ऐसे में व्यापारियों ने भी रक्षाबंधन की तैयारियां कर रखी हैं।

यमुनापार के मेजा, मेजारोड, मांडा, कोरांव, करछना, कौंधियारा, जसरा, घूरपुर, नारीबारी और शंकरगढ़ सहित सभी स्थानीय बाजारों में रंगबिरंगी राखी की दुकानें सज गई हैं। इन दुकानों पर चाइनीज राखियों की अपेक्षा हाथ की बनी देशी राखियों की भरमार है। इस दफा बहनें अपने भाइयों को मेड इन इंडिया राखी बांधेंगी। घरेलू उद्योगों को बढ़ावा दिए जाने का असर इस बार के रक्षाबंधन में साफ-साफ दिखाई पड़ रहा है। हालांकि यहां की बनी राखियां चाइना से आयातित राखियों की अपेक्षा थोड़ी महंगी जरूर पड़ती हैं, पर भारतीय राखियां डिमांड में हैं।

रक्षाबंधन पर्व को लेकर मिष्ठान विक्रेताओं ने भी तैयारियां शुरू कर दी हैं। मिष्ठान विक्रेताओं ने सप्ताहभर पहले से ही मावा का स्टाक कर रखा है और अब उनसे रंग-बिरंगी मिठाइयां बनाई जा रही हैं। मेजारोड बाजार में पटरी पर पिछले तीन दिन से दुकान लगे रहे रमेश ने बताया कि हमने रक्षाबंधन की पूरी तैयारी कर ली है। उम्मीद है कि पिछली बार की तरह इस बार माल (राखी) बर्बाद नहीं होगी। शंकरगढ़ बाजार के राखी विक्रेता सूरज ने बताया कि इस बार उन्होंने अपनी दुकान पर स्थानीय राखियों को ज्यादा तवज्जो दी है। भारतीय राखियों को लोग खूब पसंद कर रहे हैं।

हालांकि जनपद अभी तक बाढ़ की विभीषिका झेल रहा था। इसकेबाद से जनपद में रुक-रुककर बरसात हो रही है। इन दिनों हो रही बरसात से इस धंधे पर भी थोड़ा-बहुत असर है। पर, दुकानदारों ने अभी उम्मीद नहीं छोड़ी है। रक्षाबंधन 22 अगस्त को है। यदि मौसम और ऊपरवाले ने साथ दिया तो इस बार लोगों की अच्छी कमाई हो जाएगी।

कोई जल्दबाजी नहीं, दिनभर रहेगा शुभ मुहूर्त

इस बार रक्षा बंधन 22 अगस्त को है। 22 अगस्त को प्रातः 6:15 बजे तक ही भद्रा है। जबकि राहुकाल शाम 5:16 बजे से छह बजे तक है। इसलिए इस बार राखी बांधने और बंधवाने के लिए दिनभर का वक्त रहेगा। पूरे दिन राखी बांधी जा सकती है। शाम को राहुल के उपरांत छह से नौ बजे तक भी राखी बांधी जा सकती है। 22 अगस्त को प्रातः 6:15 बजे से 7:51 तक सिंह लग्न, दोपहर 12:00 बजे से 14:45 तक वृश्चिक लग्न और शाम 18:31 बजे से 19: 59 बजे तक कुंभ लग्न है और तीनों लग्न स्थिर है।

जिला पंचायत अध्यक्ष ने फीता काटकर किया सब्जी व फल मंडी का उद्घाटन

सब्जी व फल मंडी का उद्घाटन करते

उतरांव (प्रयागराज)। उतरांव थाना क्षेत्र के बलीपुर में किसान मंडी का उद्घाटन मुख्य अतिथि जिला पंचायत अध्यक्ष कुंवर वीके सिंह ने गुरुवार को फीता काटकर किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि ग्रामीण क्षेत्र में सब्जी व फल मंडी खुल जाने से अब क्षेत्र के व्यापारी व ग्राहकों को दूर शहरों में सब्जी व फल खरीदने की जरूरत नहीं है। अब उन्हें अच्छे वह सस्ते भाव में बलीपुर में ही सब्जी व फल उपलब्ध हो जाएंगे। वही सब्जी व फल मंडी खुलने से लोगों का रोजगार भी बड़ा है। अब मंडी में लोग फल व सब्जी को आदान प्रदान कर पैसे भी कमा सकते हैं। उक्त अवसर पर हास्य कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसकी शुरुआत प्रतापगढ़ से आई कवयित्री प्रीति पांडेय की वाणी वंदना से हुई। प्रथम कवि के रूप में अमीन नाजा ने स्वागत गीत के माध्यम से आये हुए अतिथियों का स्वागत किया।उसके बाद हास्य कवि धनंजय शास्वत ने जब पढ़ा कि मैं कैसे मान लू कि बेरोजगारी है बहुत,जब मुर्दे भी मनरेगा से तनख्वाह ले रहे हैं तो लोग इधर उधर झांकने लगे। उसके बाद ओज कवि अमित आभास ने राष्ट्र प्रेम की रचनाओं के माध्यम से भारत माता का जयघोष करवाया।वरिष्ठ कवि लालजी देहाती ने अपनी दुर्दशा पुराण सुना कर लोगो को गुदगुदाया। शायर शकील फूलपुरी ने पढ़ा कि सिर्फ शब्दों से किया करते है माँ की पूजा और माँ अकेले ही घर मे दम तोड़ दिया।कवि अरुण विश्वास ने अपनी कविता से लोगो रुला दिया।कार्यक्रम के समापन में बिहारी लाल अम्बर ने अपनी रचनाओं से लोगो को हंसा के लोटपोट कर दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वरिष्ठ समाजसेवी एसबी यादव ने की वही संचालन का कार्य कर रहे राजकुमार अंजाना ने अपने संचालन से लोगों को खूब हंसाया।आयोजक महेंद्र कुमार व सुनील कुमार ने आए हुए सभी अतिथियों का आभार जताते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। उक्त अवसर पर जिला पंचायत सदस्य अशोक केसरवानी, जिप सदस्य अनिल पटेल,ब्लाक प्रमुख प्रत्याशी संतोष कुशवाहा,पूर्व सदस्य अशोक चेतरा, प्रबंधक आरबी सिंह,अरुण कुशवाहा,अरुण विश्वास,मनोज पटेल प्रधान राकेश आदि लोग मौजूद रहे।

खबर संक्षेप

बीईओ ने बसमहुआ मे शिक्षक संकुल की मासिक बैठक की

सहसों। स्कूल खुलने से पहले बीईओ ने कहा सारी तैयारियां पूरी करले संकुल शिक्षक गंण। बहरिया के चंदरपुर उर्फ बसमहुआ में गुरुवार को शिक्षक संकुल की मासिक बैठक का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि खंड शिक्षा अधिकारी धर्मेंद्र कुमार मौर्य ने सर्वप्रथम सरस्वती प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर किया। बैठक में बीईओ ने मोहल्ला पाठशाला, शिक्षक डायरी, बच्चों के लिए विद्यालय खोलने से पहले की तैयारी, टाइम एंड मोशन का पालन आदि पर चर्चा की गई। बैठक में शिक्षकों ने भी अपनी समस्याओं को बीईओ के सामने रखा जिसका निराकरण कराने का उन्होंने आश्वासन भी दिया। बैठक में ए आर पी देवेंद्र शुक्ला, अशोक यादव, रामचंद्र यादव, सतीश चंद्र यादव, संघ के अध्यक्ष शिवनारायण यादव आदि रहे।

जमीनी विवाद में दौड़ा-दौड़ा कर लाठियों से पीटा पति की मौत पत्नी गंभीर

अखंड भारत संदेश

आधा दर्जन के खिलाफ केस दर्ज,

एक माह पूर्व भी हुई थी मारपीट

जमीनी विवाद को लेकर एक माह पूर्व भी दोनो पक्षों में मारपीट हुई थी । जिसमे दोनो पक्ष के लोगों को चोटें आई थी । मामले में पुलिस ने मारपीट का मुकदमा भी दर्ज किया था।

घूरपुर। घूरपुर थाना क्षेत्र के चकसेमरा गांव में गुरुवार की शाम जमीनी विवाद को लेकर दो भाइयों के बीच विवाद हो गया । जिसमें लाठी डंडे चले जिसमे एक की लाठी डंडों की गंभीर चोट से मौत हो गई । जब कि उसकी पत्नी के साथ कई लोग गंभीर रूप से घायल हो गए जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है ।

घूरपुर थाना क्षेत्र के चकसेमरा गांव निवासी भोला पटेल और उसके भाई गौरी शंकर पटेल के बीच कई वर्ष से जमीनी विवाद चल रहा है । गुरुवार की शाम भोला पक्ष के और गौरी पक्ष के बीच जमीन के विवाद को लेकर विवाद शुरू हुआ । इसी बीच दोनो पक्षों में लाठियां चटकने लगी । जिसमे गौरी शंकर पटेल और उसकी पत्नी संतोष कुमारी को गहरी चोटें आ गई । सड़क किनारे एक दूसरे को दौड़ाकर हो रही मारपीट को देख लोगों ने स्थानीय पुलिस को सूचना दी तो मौके पर पहुंची पुलिस को देख आरोपी भाग निकले ग्रामीणों की मदद से घायल गौरी शंकर व उसकी पत्नी संतोष कुमारी को पुलिस ने इलाज के लिए एसआरएन में भर्ती कराया। जहां पर देर शाम इलाज के दौरान गौरी शंकर को डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया । जबकि पत्नी संतोष कुमारी की हालत नाजुक बनी हुई है। घटना के बाद घूरपुर पुलिस ने आरोपी भाई भोला पटेल को गिरफ्तार कर लिया है । पुलिस ने आधा दर्जन के खिलाफ केस दर्ज. कर लिया है। बवाल आगे न बढ़े इसके लिए गांव में फोर्स तैनात कर दी गई है।

बेटे की खुदकुशी के बाद दो महिलाओं के खिलाफ दर्ज कराई रिपोर्ट

प्रयागराज। न्यू ममफोर्डगंज के रहने वाले प्रदीप कुमार यादव ने बेटे की खुदकुशी के बाद शादीशुदा महिला समेत तो महिलाओं के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई है। उनका आरोप है कि दोनों महिलाओं की वजह से उनके बेटे ने खुदकुशी कर ली थी।न्यू ममफोर्डगंज के रहने वाले इंटर के छात्र उत्कर्ष यादव ने 27 जून को फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली थी। घर वाले घटना से सन्न रह गए थे। कहीं कोई बात ही नहीं थी। बाद में पता चला कि फांसी से पहले उत्कर्ष ने दो नंबरों पर 27 बार बात की थी। उन्होंने अपने स्तर से तहकीकात की। इसके बाद दोनों महिलाओं के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई। प्रदीप ने बताया कि उनके बेटे का शोषण किया गया जिससे उसने आत्महत्या कर ली। इंस्पेक्टर के मुताबिक इस बारे में पूछताछ की जाएगी।

अस्पताल से 82 साल के बुजुर्ग लापता, हाईकोर्ट सख्त, 27 तक पेश करने का दिया निर्देश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने टीबी सप्रू अस्पताल से तीन माह से लापता कोरोना के 82 वर्षीय वृद्ध मरीज कनिष्ठ अभियंता रहे राम लाल यादव को तलाश कर 27 अगस्त को पेश करने का निर्देश दिया है। साथ ही चिकित्सा एवं स्वास्थ्य तथा गृह विभाग के प्रमुख सचिवों/अपर मुख्य सचिवों को लापरवाही बरतने वाले अस्पताल के अधिकारियों पर तत्काल कार्रवाई करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने राज्य सरकार को टीबी सप्रू अस्पताल की सुरक्षा व सुविधाएं मुहैया कराने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने कहा है कि अस्पताल में उच्च सुरक्षा उपकरण लगाए जाएं, नियमित देखभाल की जाए और उनका आडिट कराया जाए। दोनों अधिकारियों को आडिट रिपोर्ट कोर्ट में पेश करने का निर्देश दिया गया है और सप्रू अस्पताल के मुख्य चिकित्सा अधीक्षक से व्यक्तिगत हलफनामा मांगा है। साथ ही अधिकारियों को सुनवाई के समय मौजूदरहने को कहा है। यह आदेश न्यायमूर्ति एस पी केसरवानी तथा न्यायमूर्ति पीयूष अग्रवाल की खंडपीठ ने राहुल यादव की बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका पर दिया है। कोर्ट ने कहा कि जिला व पुलिस प्रशासन व अस्पताल के अधिकारियों ने कर्त्तव्य पालन में घोर लापरवाही बरती है। अस्पताल से मरीज लापता हो गया। सीसीटीवी कैमरे खराब पड़े हैं। अस्पताल की दुर्दशा है। सीएमओ ने कहा कि अस्पताल का प्रशासनिक व वित्तीय नियंत्रण सीएमएस का है और उस पर डायरेक्टर का सीधा नियंत्रण है। सीएमओ का कोई नियंत्रण नहीं है। डीएम ने कहा कि सिटी मजिस्ट्रेट को एक हफ्ते में सही तथ्यों का पता लगाने की जिम्मेदारी दी गई है। एसएसपी ने कहा कि रामलाल यादव का दिल्ली में मकान है। उनके गृह जनपद कौशाम्बी में लोगों ने बताया अक्सर वहीं रहते थे। कोर्ट ने कहा कि अस्पताल में भर्ती मरीज तीन माह से लापता है। जिला पुलिस व अस्पताल प्रशासन गंभीर नहीं हैं।

अधिवक्ता के वाहन से उच्चको ने उड़ाया बैग चेकिंग के डर से गली में फेंका, बरामद

अखंड भारत संदेश

पुलिस ने बरामद किया अधिवक्ता का बैग

नैनी। कोतवाली क्षेत्र के मेवालाल बगिया तिराहे के समीप एक अधिवक्ता के चार पहिया वाहन से मौका पाते ही उचक्कों ने मौका पाते ही जेवरात व रुपयों से भरे बैग को उड़ा दिए। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और चेकिंग अभियान चलाया तो उचक्कों ने पुलिस के डर से एक गली में फेंक कर फरार हो गए। पुलिस ने बैग को बरामद करते हुए भुक्तभोगी अधिवक्ता को सुरक्षित सौंप दिए।

जानकारी के मुताबिक मूल रूप से जसरा के रहने वाले संदीप कुमार केसरवानी नैनी कोतवाली क्षेत्र के विकास खंड चाका मुख्यालय के समीप गोविंदपुरम कॉलोनी में रहते हैं और पेशे वह से अधिवक्ता हैं। गुरुवार दोपहर बाद अपने चार पहिया वाहन से नैनी की ओर से गुजर रहे थे तो जैसे ही वह मेवालाल बगिया के समीप एक पंक्चर बनाने की दुकान पर पहुंचे तभी मौका पाते ही उचक्कों ने वाहन से जेवरात व नकदी समेत जरूरी कागजात से भरे बैग को उड़ाते हुए फरार हो गए। जब वाहन स्वामी आगे जाने के लिए तैयारी कर ही रहा था तो वाहन से बैग गायब देखा तो दंग रह गया। वाहन स्वामी पंक्चर बनाने वालों के खिलाफ बैग गायब करने का आरोप लगाने लगा। सूचना मिलने पर नैनी कस्बा पुलिस चौकी प्रभारी सुशील कुमार दुबे अपने हमराही अजीत कुमार प्रजापति व सिद्धार्थ सिंह के साथ उक्त स्थल पर पहुंचे और जांच पड़ताल करते हुए सीसीटीवी फुटेज को खंगाला। हालांकि काफी देर के बाद भी वाहन से गायब बरामद बैग बरामद नहीं हो पाया। पुलिस इधर जांच पड़ताल करने में जुटी हुई थी कि मेवालाल बगिया के समीप अंग्रेजी शराब की दुकान के ठीक कुछ दूरी पर स्थित एक गली में कुछ लोगों ने एक लावारिस बैग को सड़क के किनारे पड़ा देखने पर चौकी प्रभारी सुशील कुमार दुबे और सिपाही अजीत कुमार प्रजापति को तत्काल सूचना दे दिए। मौके पर पुलिस वहां पर पहुंची और जांच पड़ताल के बाद बैग को कब्जे में लेकर पुलिस चौकी पर उठा लाई। बैग के अंदर से मौजूद अंकित मोबाइल नंबर पर भुक्तभोगी संदीप कुमार केसरवानी को बुलाया गया। जहां पर उसने अपने समस्त बैग के अंदर रखें उपकरणों को बताया कि लगभग 20 ग्राम के सोने की जंजीर, करीब दस हजार रुपए नकदी और जरूरी बैंक दस्तावेज व अन्य कागजात मौजूद हैं। पुलिस ने जांच पड़ताल करते हुए बरामद बैग को अधिवक्ता को सुरक्षित सौंप दिए। वहीं गायब हुए बैक को सुरक्षित पाकर अधिवक्ता ने नैनी कस्बा पुलिस चौकी प्रभारी सुशील कुमार दुबे, सिपाही अजीत कुमार प्रजापति व सिद्धार्थ सिंह के प्रति शुक्रिया अदा किया।

विद्यालयी कार्यों में लापरवाही अक्षम्य : ओपी मिश्रा

लालगोपालगंज। बेसिक शिक्षा की बदल रही तस्वीर को और बेहतर बनाने के लिए ब्लॉक में तैनात परिषदीय स्कूलों के प्रधानाध्यापकों की समीक्षा बैठक तलब की गई। एकेडमिक के 17 तो वहीं प्रशासनिक के 11 बिंदुओं पर विधिवत समीक्षा की गई। अधिकारियों के भ्रमण के दौरान विद्यालयों में पाई गई खामियों पर सख्त नाराजगी जाहिर की गई। विद्यालय कार्यों में लापरवाही करने वाले शिक्षकों को माफ न किए जाने की सख्त चेतावनी दी। हालांकि कार्यों में हर संभव सहयोग करने का जहां भरोसा दिलाया। वहीं बैठक के दौरान समस्याओं के निवारण में मददगार साबित हुए। कौड़िहार ब्लॉक के तहत परिषदीय स्कूलों के प्रधानाध्यापकों की नवाबगंज स्थित राम वाटिका गेस्ट हाउस में समीक्षा बैठक आयोजित हुई। कौड़िहार खंड शिक्षा अधिकारी ओम प्रकाश मिश्रा ने हाल में ही ब्लॉक की बागडोर संभाला है। ब्लॉक की जमीनी हकीकत जानने के लिए विद्यालयों का भ्रमण किया। तत्पश्चात ब्लॉक के समस्त प्रधानाध्यापकों की बैठक आयोजित कर समस्याओं से रूबरू हुए। एकेडमी के 17 बिंदुओं पर आधारित ई-पाठशाला, मोहल्ला पाठशाला, क्विज प्रतियोगिता, दीक्षा एऐप, रीड अलांग एऐप, प्रेरणा लक्ष, विद्यालयों में पुस्तकालय, टीएलएम, राकेट लर्निंग ग्रुप, विद्यालयों में प्रेरणा सूची, प्रेरणा तालिका के विद्यालयों की दीवार पर चस्पा होने की स्थिति की जानकारी हासिल की।

समर्थकों की भीड़ देख गदगद हो गई अनुप्रिया, नहीं रहा खुशी का ठिकाना

सुनील गिरि

नैनी। उत्तर प्रदेश में आगामी महीनों बाद विधानसभा का चुनाव होना तय है केंद्र और उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है और उक्त पार्टी को पुनः बहुमत मिले इसके लिए एड़ी चोटी का दमखम लगाए हुए हैं। वहीं बीते दो साल के अंतराल में कोविड-19 यानी कि कोरोना वायरस समेत महंगाई पर सरकार विपक्ष के निशाने पर है। सरकारी तंत्र ने कोरोना वायरस को मात देने के लिए हर संभव प्रयास करने में सफल रहे, लेकिन विपक्ष के निशाने पर हमेशा सरकार ही रही है। ऐसे में सरकार हर एक प्रकार का खेल व महाखेल खेलने के लिए तैयार है। यानी कि पुनः उत्तर प्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की सरकार सहयोगी पार्टियों के दमखम पर बने और एक बार फिर आगामी पांच वर्ष के लिए जनता हित में कार्य करें। इसी कड़ी में अपना दल कि नेता एवं केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल के नेतृत्व में जन आशीर्वाद यात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा विभिन्न स्थानों से होते हुए जैसे ही प्रयागराज जिले के यमुनापार क्षेत्र स्थित औद्योगिक नगरी नैनी में पहुंची तो अपना दल व भारतीय जनता पार्टी से जुड़े सांसद, विधायक, पदाधिकारी और कार्यकर्ता समेत लोगों ने जन आशीर्वाद यात्रा की शिरकत कर रही अनुप्रिया पटेल का जोरदार स्वागत करते हुए गगनभेदी नारेबाजी स्वागत व अभिनंदन किया। वहीं भारी भीड़ देखकर अनुप्रिया पटेल भी गदगद रही, उन्होंने कुछ स्थानों पर केंद्र सरकार और उत्तर प्रदेश में काबीज योगी सरकार की भी जमकर सराहना करते हुए उनके विकास कार्यों की तारीफ की। जनता को अपने पक्ष में लाने के लिए उन्होंने हर संभव प्रयास भी किया। आगामी उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव को देखते हुए भारतीय जनता पार्टी ने अपने सहयोगी पार्टी अपना दल के प्रमुख अनुप्रिया पटेल के कंधों पर हाथ रखते हुए जन आशीर्वाद यात्रा को निकाला हुआ है जो कार्यकताओं का भरपूर सहयोग प्राप्त हो रहा है। सूत्रों की मानें तो आगामी कुछ महीनों के अंदर ही समाजवादी पार्टी भी एक यात्रा निकालने के लिए दमखम लगाए हुए हैं। जो जनता को अपने पक्ष में लाने के लिए प्रयास करेगी। हालांकि आगामी विधानसभा के चुनाव में मतदाता ही तय करेंगे कि आगे किसकी सरकार उत्तर प्रदेश में बनेगी।

उपजिलाधिकारी कोरांव की अध्यक्षता में पीस कमेटी की बैठक में शामिल लोग

एसडीएम कोरांव की अध्यक्षता में पीस कमेटी की बैठक संपन्न

अखंड भारत संदेश

लेडियारी। गुरुवार को थाना परिसर खीरी में एसडीएम कोरांव व थानाध्यक्ष राजेश कुमार मौर्य की अध्यक्षता में के प्रमुख त्यौहार मोहर्रम एवं रक्षाबंधन को लेकर पीस कमेटी की बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान एसडीएम को कोरांव द्वारा पर्व के मद्दे नजर आने वाली समस्याओं को जाना गया। और उनके द्वारा यह बताया गया कि वैश्विक महामारी करोना के मद्देनजर सभी लोग त्यौहार को अपने घरों में मनाए और कुबार्नी के मलबे को आम रास्ते पर न रखें। रक्षाबंधन भाई चारे के साथ निभाये और सरकार की गाइड लाइन का पालन करना हम सबका कर्तव्य होता है। उपस्थित क्षेत्र से आए प्रधान व गणमान्य लोगों ने सरकार के गाइडलाइन को भी कहा। खीरी प्रधान युसूफ अली ने कहा की सरकार के गाइडलाइन का अवश्य पालन होगा। जिला पंचायत सदस्य ओंकार केसरी, खीरी प्रधान युसूफ अली, मुस्ताक अली प्रकाश मिश्रा विनोद दुबे महताब आलम लवकुश दुबे आनंद तिवारी रीता देवी अन्नू दुबे राष्ट्रीय महिला शांति देवी सुधा पांडे रत्नाकर पांडे के अलावा सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

आरडी मेमोरियल मोडर्न कानवेंट इंटर कॉलेज जंघई में प्रवेश प्रारंभ

जंघई। आरडी मेमोरियल मोडर्न कानवेंट इंटर कॉलेज जंघई में अंग्रेजी, हिन्दी माध्यम से प्रवेश प्रारंभ है।एलकेजी से इंटर तक अंग्रेजी व हिन्दी मीडियम की अलग अलग कक्षाएँ संचालित होती है।प्रवेश हेतु इच्छुक विद्यार्थी विद्यालय कार्यालय में आकर अपना प्रवेश सुनिश्चित करायें यह जानकारी प्रधानाचार्य राकेश दुबे ने दिया है।

नीलामी सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि दिनांक 24.08.2021 को उ0प्रा0वि0/हथिगहाँ वि0ख0 कौड़िहार, प्रयागराज परिसर में स्थित चिन्हित जर्जर भवन की नीलामी विद्यालय परिसर में होनी है। इच्छुक व्यक्ति/फर्म नीलामी प्रक्रिया में निर्धारित तिथि को प्रातः 11.00 बजे प्रतिभाग करना सुनिश्चित करें।

सचिव
वि0प्र0स0/उ0मा0वि0
हथिगहाँ, कौड़िहार, प्रयागराज

खण्ड शिक्षा अधिकारी
कौड़िहार, प्रयागराज

नीलामी सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि दिनांक 24.08.2021 को प्रा0वि0/उ0प्रा0वि0/क0वि0 कोराली वि0ख0 कौड़िहार, प्रयागराज परिसर में स्थित चिन्हित जर्जर भवन की नीलामी विद्यालय परिसर में होनी है। इच्छुक व्यक्ति/फर्म नीलामी प्रक्रिया में निर्धारित तिथि को प्रातः 11.00 बजे प्रतिभाग करना सुनिश्चित करें।

सचिव
वि0प्र0स0 प्रा0वि/
उ0प्रा0वि0/क0वि0
कोराली, कौड़िहार, प्रयागराज

खण्ड शिक्षा अधिकारी
कौड़िहार, प्रयागराज

नीलामी सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि दिनांक 24.08.2021 को क0वि0सम्हई वि0ख0 कौड़िहार, प्रयागराज परिसर में स्थित चिन्हित जर्जर भवन की नीलामी विद्यालय परिसर में होनी है। इच्छुक व्यक्ति/फर्म नीलामी प्रक्रिया में निर्धारित तिथि को प्रातः 11.00 बजे प्रतिभाग करना सुनिश्चित करें।

सचिव
वि0प्र0स0/क0वि0
सम्हई, कौड़िहार, प्रयागराज

खण्ड शिक्षा अधिकारी
कौड़िहार, प्रयागराज

कार्यालय ग्राम पंचायत लखनपुर
विकास खण्ड शंकरगढ़, प्रयागराज
अल्पकालीन निविदा 2021-22

पत्रांक मेमो 19.08.2021

वित्तीय वर्ष 2021–22 में मनरेगा/राज्य वित्त/15वां वित्त योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित निर्माण कार्यों को कराने/सामग्री आपूर्ति हेतु ग्राम पंचायत लखनपुर में पंजीकृत ठेकेदारों सामग्री आपूर्तिकर्ताओं से निविदाएं सील बन्द लिफाफे में अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 20.08.2021 से 23.08.2021 को दोपहर 2 बजे तक आमंत्रित की जाती है। दिनांक 23.08.2021 को शाम 4 बजे गठित समिति के समक्ष निविदा खोला जायेगा नियम व शर्तें किसी भी समय कार्यालय में कार्य दिवस में देखी जा सकती है।

संख्या	योजना का नाम	कार्य का नाम	कार्य की लागत (लाख में)	निविदा मूल्य
1	मनरेगा	वि0खण्ड शंकरगढ़ कैम्पस में प्रेरणा कैन्टीन का निर्माण	4 लाख	500रू.
2	मनरेगा	प्रा0 वि0 हिनौती पाण्डेय का बाउंड्री वाल निर्माण	8.66 लाख	500रू.

राजजतन
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत लखनपुर
विकास खण्ड शंकरगढ़, प्रयागराज

राजेन्द्र कुमार मौर्य
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत लखनपुर
विकास खण्ड शंकरगढ़, प्रयागराज

कार्यालय ग्राम पंचायत कल्याणपुर
विकास खण्ड शंकरगढ़, प्रयागराज
अल्पकालीन निविदा 2021-22

पत्रांक मेमो 19.08.2021

वित्तीय वर्ष 2021–22 में मनरेगा/राज्य वित्त/15वां वित्त योजना के अन्तर्गत निम्नलिखित निर्माण कार्यों को कराने/सामग्री आपूर्ति हेतु ग्राम पंचायत कल्याणपुर में पंजीकृत ठेकेदारों सामग्री आपूर्तिकर्ताओं से निविदाएं सील बन्द लिफाफे में अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 20.08.2021 से 23.08.2021 को दोपहर 2 बजे तक आमंत्रित की जाती है। दिनांक 23.08.2021 को शाम 4 बजे गठित समिति के समक्ष निविदा खोला जायेगा नियम व शर्तें किसी भी समय कार्यालय में कार्य दिवस में देखी जा सकती है।

संख्या	योजना का नाम	कार्य का नाम	कार्य की लागत (लाख में)	निविदा मूल्य
1	मनरेगा	ग्राम पंचायत कल्याणपुर के मजरा नयका में सूरज पाल के दुकान से राम मिलन के घर तक कार्य	4 लाख	500रू.
2	मनरेगा	प्रा0 वि0 गोबर हेवार की बाउंड्री वाल का निर्माण	4 लाख	500रू.

राममिलन
(ग्राम प्रधान)
ग्राम पंचायत कल्याणपुर
विकास खण्ड शंकरगढ़, प्रयागराज

राजेन्द्र कुमार मौर्य
ग्राम विकास अधिकारी
ग्राम पंचायत कल्याणपुर
विकास खण्ड शंकरगढ़, प्रयागराज

जन आशीर्वाद यात्रा का इस्तकबाल कर कार्यकताओं ने मंत्री का फूल-मालाओं से किया स्वागत

अखण्ड भारत सन्देश

सिरसा/मेजा। प्रयागराज मेजा विधानसभा क्षेत्र गुरुवार को भाजपा का जन आशीर्वाद यात्रा का कारवां मेजा विधानसभा के मेजारोड पहुंचा भाजपा नेता और कार्यकर्ताओ ने गर्मजोशी से स्वागत किया । जन आशीर्वाद यात्रा में केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल,सांसद रीता बहुगुणा जोशी,जिला अध्यक्ष विभवनाथ भारतीय,आदि पदाधिकारी मौजूद रहे। जगह-जगह जन आशीर्वाद यात्रा का स्वागत किया गया।इस दौरान केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल ने डीजीएस गेस्ट हाउस में बने मंच से सपा, बसपा और कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा। जनता के लिए काम कर रही है भाजपा सरकार अनुप्रिया ने कहा कि पहले की सरकारों में गरीब जनता को न तो पर्याप्त आवास मिला ना ही शौचालय मिला यही नहीं प्रयाप्त बिजली भी कभी नहीं मिल पाई जबकि हमारी मौजूदा सरकार ने गरीबों को आवास दिलाने का काम किया है, शौचालय दिलाने का काम किया है। इसके साथ ही पर्याप्त बिजली भी मिल रही है। यही नहीं गरीबों को मुफ्त राशन भी दिया जा रहा है।गरीब बेटियों की शादी का खर्च भी आज सरकार पहले से ज्यादा दे रही है। श्रीमती पटेल ने आगे कहा कि हमारी सरकार ने साढ़े चार साल के कार्यकाल मे प्रदेश को खुशहाल बनाने का काम किया। इस दौरान मंत्री ने कोरोना वैक्सीन कराने को लेकर लोगों से अपील किया।

जन आशीर्वाद यात्रा के तहत भाजपा की सहयोगी पार्टी अपना दल (एस) की केंद्रीय वाणिज्य राज्यमंत्री अनुप्रिया पटेल का डीजीएस गेस्ट हाउस मेजारोड में भव्य स्वागत किया गया।डीजीएस गेस्ट हाउस में राजू शुक्ला, वरिष्ठ भाजपा नेता जयशंकर पाण्डेय, वरिष्ठ समाजसेवी नित्यानंद उपाध्याय, पूर्व ब्लाक प्रमुख मुन्नन शुक्ला, अशोक सिंह, पूर्व जिलाध्यक्ष शिवदत्त पटेल, राजू शुक्ला, विनय शुक्ला व मेजारोड पटेल नगर चौराहे पर मेजा मंडल अध्यक्ष कामेश्वर पटेल मंडल मंत्री राजू तिवारी महामंत्री अमरेश तिवारी अपना दल यस के राजेश पटेल उर्फ बुलबुल पटेल ने स्वागत किया। इसी तरह मेजारोड गोल चौराहे पर भाजपा नेत्री बीना मिश्रा जिला महामंत्री कृष्ण दास गुप्ता नाथू ने स्वागत किया।लखनपुर विधायक कार्यालय पर मेजा विधायक नीलम करवरिया ने जन आशीर्वाद यात्रा में पहुंची केंद्रीय राज्य मंत्री अनुप्रिया पटेल का जोरदार स्वागत किया। इस दौरान विधायक ने अंगवस्त्रम व प्रतीक चिन्ह देकर केंद्रीय मंत्री का स्वागत किया इस दौरान विधायक प्रतिनिधि शैलेश पांडेय,भाजपा युवा नेता शिव जी पांडेय (शिवा जी),प्रधान संघ अध्यक्ष राजेश द्विवेदी, टुनटुन तिवारी, राहुल द्विवेदी, बाबा ओझा, विनय शुक्ला, आशीष मिश्रा मुन्ना भैया, सुशील मिश्रा मेजा ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि गंगा प्रसाद मिश्रा व प्रधान गडेवरा अनिल शुक्ला ने आदि बड़े संख्या में बीजेपी कार्यकताओं ने स्वागत किया।

जिले के 32 केन्द्रों पर आयोजित होगी पेट परीक्षाः डीएम

अफीम कोठी के सभागार में डीएम की अध्यक्षता में हुई बैठक

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग लखनऊ द्वारा आयोजित प्रारंभिक अहर्ता परीक्षा यानी पेट परीक्षा जो 24 अगस्त को जनपद में 32 केंद्रों पर आयोजित की जाएगी इसके संबंध में परीक्षा को सकुशल संपनन कराने के लिए जिलाधिकारी डॉ0 नितिन बंसल की अध्यक्षता में बैठक अफीम कोठी सभागार में संपनन हुई। जिलाधिकारी ने बैठक को संबोधित करते हुए कहा इस प्रारंभिक अहर्ता परीक्षा को हमको जनपद में सकुशल शुचिता पूर्ण एवं शांतिपूर्ण ढंग से संपनन कराना है। उन्होंने कहा कि सभी केंद्र अध्यक्ष अपने यहां सभी मूलभूत सुविधाओं को जैसे पानी जनरेटर लाइट आदि को व्यवस्थित कर लें। सीसीटीवी कैमरा और वॉइस रिकॉर्डर को भी व्यवस्थित करके चेक कर लें। महिलाओं की तलाशी अलग से महिला शिक्षिकाओं के माध्यम से करवाएं। समय से परीक्षा प्रारंभ हो और समय से परीक्षा समाप्त हो। उन्होंने बताया कि प्रथम पाली की परीक्षा दस से बारह बजे तक, द्वितीय पाली की परीक्षा तीन से पांच बजे तक संपनन होगी। सभी स्टैटिक मजिस्ट्रेट और सेक्टर मजिस्ट्रेट अपनी ड्यूटी को अच्छे से संपनन कराएंगे। बैठक में सभी स्टैटिक मजिस्ट्रेट जोनल और सेक्टर मजिस्ट्रेट पर्यवेक्षक एवं समस्त केंद्र अध्यक्ष एवं परीक्षा से जुड़े हुए अधिकारी, अपर जिलाधिकारी शत्रोहन वैश्य, जिला विद्यालय निरीक्षक सर्वदानंद, अपर पुलिस अधीक्षक पश्चिमी विवेक मिश्रा, प्राचार्य अफीम कोठी शिव प्रकाश, विंध्याचल सिंह आदि लोग मौजूद रहे। संचालन डा0 मो0 अनीस ने किया।

पत्रकार से अमर्यादित व्यवहार करने पर सिपाही लाइन हाजिर

पत्रकारों ने जताया था गहरा रोष

प्रतापगढ़। कुण्डा तहसील में कार्यरत एक प्रमुख दैनिक अखबार के संवाददाता शिवराम गिरि के साथ पीआरवी के एक सिपाही द्वारा गाली-गलौज कर अभद्र व्यवहार करने से पत्रकारों में गहरा रोष व्याप्त था जिसे देखते हुए अडिशनल एसपी ने सिपाही को लाइन हाजिर कर दिया है। घटना के बारे में बताया जाता है कि पत्रकार शिवराम गिरि अपने पैतृक गांव सगरा ओरी थाना लालगंज में अपने घर पर कुछ निर्माण करा रहे थे जिसे विपक्षी रोकना चाह रहे थे। जब पत्रकार ने निर्माण कार्य नहीं रोका तो जेठवारा थाना के 112 पीआरवी सिपाही विपक्षियों से मिलकर निर्माण रोकने पहुंचा। जब उसे बताया गया कि विपक्षियों के पास कोई कागजात नहीं है तब भी वह पत्रकार से गाली-गलौज करने लगा जिसकी सूचना पत्रकार ने लालगंज कोतवाल को दी। घटना की सूचना पत्रकारों को मिलने पर पत्रकारों ने इस घटना पर गहरा रोष व्यक्त किया। इधर कुण्डा के प्रमुख पत्रकार के विरुद्ध सिपाही की हेकड़ी उस समय निकल गई जब अडिशनल एसपी ने आरोपी सिपाही को लाइन हाजिर कर दिया। बताया जाता है कि बड़बोला सिपाही बहुत दिनों से इस तरह के मामले में हस्तक्षेप कर कमाई करता था लेकिन इस बार पत्रकार से भिड़ना उसे महंगा पड़ा।

योगी सरकार का अनुपूरक बजट महज खानापूर्तिः मोना

बेरोजगारों व किसानों के लिये की गई घोषणा हवा-हवाई

लालगंज प्रतापगढ़। कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने प्रदेश की योगी सरकार द्वारा अनुपूरक बजट को महज खानापूर्ति का बजट करार देते हुए इसे महिलाओं तथा युवाओं और बेरोजगारो एवं किसानो के लिए हवाहवाई घोषणाओ एवं खोखले दावों का जीता-जागता उदाहरण करार दिया है।

मिश्रा मोना ने सरकार के इस दावे कि इस बजट मे तीन हजार करोड रूपये युवाओ के रोजगार पर खर्च होगें को भी जमीनी हकीकत से विपरीत करार दिया है। विधानसभा में अनुपूरक बजट पर कांग्रेस की कई जनकल्याणकारी मांगो की चर्चा करते हुए उन्होनें कहा कि पिछले चार वर्षो मे नौजवान रोजगार की चाहत मे दर दर भटक रहे है और बदले मे इन्हें सिर्फ पुलिसिया लाठी खाने को मिली है। विधानसभा मे कांग्रेस दल की नेता आराधना मिश्रा ने नारी उत्पीड़न की भी प्रदेश मे लगातार बढ़ रही घटनाओं को खौफनाक ठहराते हुए बजट मे विपक्ष की मांग के बावजूद नारी उत्पीड़न फण्ड की स्थापना न किये जाने को बजट का सबसे बड़ा निराशाजनक पहलू करार दिया है। उन्होने कहा कि सरकार को नारी सम्मान व अस्मिता की रक्षा की राशि के लिए शीर्ष प्राथमिकता पर घोषणा करनी चाहिये थी।

मोहर्रम की नवीं पर मांगी गई दुआएं

प्रतापगढ़। मोहर्रम की नवीं पर शासन की गाइडलाइन के अनुसार ताजिया शरीफ अपने-अपने इमामबाडे़ पर रखी गई जिसमें नियाज, फातेहा कराकर लोगों ने मगफिरत और दुनिया में चल रही कोरोना महामारी की दुआ की। खुशखुशवापुर, बुड्ढा ताजिया इमामबाड़ा, हुसैनिया इमामबाड़ा टक्करगंज, पंजतन इमाम बाड़ा पुराना माल गोदाम रोड हजरत मौला अली इमामबाड़ा पर मोहर्रम की नवीं पर ताजिया रखी गई। रात भर लोगों ने ताजिया शरीफ पर नियाज व फातेहा पढ़ी। नाते-पाक भी पढ़ा गया और दुआएं की गई। अंजुमन आशिकाने रसूल के प्रबंधक इरशाद सिद्दीकी, मोहर्रम कमेटी के अध्यक्ष हैदर अली, उपाध्यक्ष फरीद आलम, सचिव शकील अहमद, बरकत अली, सलमान रात भर ताजिया शरीफ की देखरेख में लगे रहे। इस दौरान लंगर ए हुसैनिया भी चलता रहा।

विवाहिता से मारने के मामले में तीन पर रिपोर्ट दर्ज

प्रतापगढ़। विवाहिता को जान से मारने के प्रयास तथा गालीगलौज एवं घर मे घुसकर मारपीट को लेकर तीन आरोपियो के खिलाफ पुलिस ने गुरूवार को हत्या के प्रयास का केस दर्ज किया है। कोतवाली के धारूपुर निवासी दाउद की पतनी नसरा ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि बीती सोलह अगस्त को उसके पति दाउद, अफराज व अख्तर ने रंजिशन घर मे घुसकर मारपीट की। आरोपियो ने पीडिता को गाली देते हुए दुपटटे से उसका गला दबाकर हत्या का प्रयास किया। शोर मचाने पर आरोपी जानलेवा धमकी देते चले गये। पीड़िता का कहना है आरोपी आये दिन उसके साथ मारपीट किया करते है। तहरीर के आधार पर दाउद समेत तीन के खिलाफ हत्या के प्रयास समेत कई गंभीर धाराओं मे केस दर्ज किया गया है।

दो आरोपियों के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली पुलिस ने सरकारी चकमार्ग का निर्माण कराते समय पीडित की पिटाई को लेकर दो आरोपियो के खिलाफ केस दर्ज किया है। कोतवाली के अर्जुनपुर निवासी घनश्याम सरोज ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि अठारह अगस्त को वह सरकारी चकमार्ग पर काम करा रहा था। इस बीच गांव के मोहन लाल तथा तेजाराम ने गाली देते हुए उसे लाठी डंडे से मारापीटा। शोर मचाने पर आरोपियो ने जानलेवा धमकी दी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने दोनो आरोपियो के खिलाफ मारपीट तथा गालीगलौज व धमकी का केस दर्ज किया गया है।

अभ्यर्थियों का साक्षात्कार 23 को

प्रतापगढ़। जिला खादी एवं ग्रामोद्योग अधिकारी विनोद कुमार श्रीवास्तव ने बताया है कि परम्परागत कारीगरों को निःशुल्क इलेक्ट्रानिक चाक वितरण हेतु कार्यालय को आवेदन पत्र प्राप्त हुये है। पात्र अभ्यथिर्यों का चयन मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में गठित कमेटी के द्वारा किया जाना है। निःशुल्क इलेक्ट्रानिक चाक वितरण हेतु अभ्यथिर्यों के प्राप्त आवेदन पत्रों का साक्षात्कार 23 अगस्त को पूर्वान्ह 11 बजे जिला ग्रामोद्योग कार्यालय में किया जायेगा। साक्षात्कार में सम्मिलित होने वाले अभ्यथिर्यों हेतु जो मानक निर्धारित किये गये है उनमें माटीकला से सम्बन्धित परम्परागत कारीगर, परम्परागत कारीगर परिवार के शिक्षित बेरोजगार अभ्यर्थी, माटीकला की किसी विधा से प्रशिक्षित/प्रमाण पत्र प्राप्त अभ्यर्थी, स्वतः रोजगार में रूचि रखने वाले परम्परागत कारीगर परिवार की महिला/साक्षात्कार में अभ्यथिर्यों को अपनी शैक्षिक योग्यता, जाति प्रमाण पत्र, पट्टा/मिट्टी निकालने सम्बन्धी कागजात, अनुभव प्रमाण पत्रों की मूल प्रति लाना अनिवार्य है।

नगर पालिका ने आठ आवारा पशुओं को भेजा गोशाला

हाईवे से पशुओं को हटाने के लिये चलेगा अभियान

प्रतापगढ़। नगर पालिका ने गुरुवार को दहिलामऊ क्षेत्र से आठ आवारा पशुओं को पकड़कर बराछा स्थित गोशाला भेज दिया। बताया जाता है कि इन दिनों नगर में हाईवे पर भंगवा चुंगी, चौक, सदर बाजार आदि चौराहे पर लावारिस पशुओं का झुण्ड दिखाई पड़ता है। इससे न केवल आवागमन प्रभावित होता है बल्कि आए दिन दुर्घटना भी होती है।

इस बारे में पूछने पर नगर पालिका ने अधिशाषी अधिकारी मुदित सिंह ने बताया कि नागरिक अपने पशुओं को लावारिस न छोड़ें. अन्यथा नगर पालिका उन्हें पकड़कर गोशाला भेज देगी। बता दें कि इन्हीं आवारा पशुओं का लाभ गोतस्कर भी उठाते हैं। रात के सननटे में ये आवारा पशु आसानी से बाहर ले जाये जा सकते हैं। ऐसे में आवारा पशुओं पर नियंत्रण बहुत जरुरी है। फिलहाल नगर पालिका ने इसकी पहल कर दी है। अधिशाषी अधिकारी ने यह भी कहा कि छुट्टा पशुओं को हाइवे से हटाने के लिये अभियान चलाया जाएगा जिससे लोगों को आवागमन में कोई दिक्कत न हो।

डिप्टी कमिश्नर से मिलकर व्यापार मण्डल ने समस्याओं का मुद्दा उठाया

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार प्रतिनिधिमण्डल के जिलाध्यक्ष राजेन्द्र कुमार केसरवानी ने बताया कि उनका प्रतिनिधिमण्डल वाणिज्य कर विभाग के डिप्टी कमिशन्र से मिलकर विभिनन समस्याओं को अवगत कराया जिस पर डिप्टी कमिशन्र ने व्यापारियों को आश्वासन दिया। साथ ही उन्होंने जानकारी दी कि किसी भी व्यापारी भाई के ऊपर यदि किसी भी तरह का टैक्स बकाया हो तो प्रदेश अध्यक्ष बनवारी लाल कंछल की माग पर शासन द्वारा आदेशित एकमुश्त समाधान योजना अपनाकर पंजीकृत व्यापारी वर्ग 30 अगस्त तक बकाया टैक्स जमा कर पेनाल्टी से बचें। उन्होंने बताया कि आनलाइन पोर्टल पर होने वाली समस्या काफी हद तक समाप्त हो चुकी है। प्रतिनिधिमण्डल में जिला महामंत्री संजय सोनी, वरिष्ठ उपाध्यक्ष लखन बाबा, प्रांतीय सदस्य अंकित केसरवानी समेत कई पदाधिकारी मौजूद रहे।

विद्यार्थियों के वैज्ञानिक चिंतन को पुष्ट करती है विज्ञान पत्रिका : डा0 दयाराम

साहित्यिक संस्था सृजना ने किया विज्ञान पत्रिका का लोकार्पण

प्रतापगढ़। सृजना साहित्यिक संस्था के तत्वावधान में सृजना कुटीर अजीत नगर में विज्ञान पत्रिका का लोकार्पण किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ साहित्यकार डॉ0 दयाराम मौर्य रत्न ने कहा कि आज का युग विज्ञान का युग है। हमें विद्यार्थियों एवं अभिभावकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं चिंतन को दृढ़ करने की ओर कदम बढ़ाने चाहिए। विज्ञान पत्रिका विद्यार्थियोंके वैज्ञानिक चिंतन को पुष्ट करती है।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एलायंस क्लब इंटरनेशनल के अन्तर्राष्ट्रीय कमेटी चेयरपर्सन रोशनलाल ऊमर वैश्य ने कहा कि विज्ञान हमारे जीवन का अभिनन अंग है। वैज्ञानिक प्रयोगों और प्रयासों से हमने अंतरिक्ष तक अपनी पहुँच बना ली है। विज्ञान परिषद प्रयाग की प्रतापगढ़ शाखा का गठन शीघ्र होना सुनिश्चित किया गया है। इससे जनपद में विज्ञान कहानी, कविता,गीत, नाटक आदि विधाओं के साहित्य लेखन बढ़ावा मिलेगा एवं संगोष्ठी व प्रतियोगिताओं का आयोजन कर विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं चिंतन को पनपने के अवसर प्रदान किये जाएंगे। कार्यक्रम का संचालन अनिल कुमार निलय ने किया। इस अवसर पर आनंद मोहन ओझा, राजीव कुमार आर्य, प्रेम कुमार त्रिपाठी प्रेम, श्रीनाथ मौर्य सरस, राधेश्याम दीवाना, विवेक आदि ने अपने विचार रखे।

मैजिक की टक्कर से वृद्ध की मौत

बाघराय, प्रतापगढ़। बाघराय थाना क्षेत्र के बंशियारा गांव निवासी गजाधर सरोज 65 वर्ष पुत्र भगवानदीन बीते बुधवार की देर शाम पौन दस बजे गांव के ही किराना की दुकान पर सामान खरीदने के लिए जा रहे थे तभी सामने से आ रही तेज रफ्तार में मैजिक चालक ने जोरदार टक्कर मारते हुए भाग निकला जिससे वृद्ध गजाधर सरोज गिरकर अचेत हो गए। यही नहीं मैजिक चालक ने भागते समय एक दीवार को टक्कर मारी जिससे दीवार गिर गई। मैजिक चालक गांव का ही बताया जाता है। आनन-फानन में स्वजन इलाज हेतु सीएचसी बाघराय ले गए जहां डॉक्टरों ने वृद्ध गजाधर सरोज को मृत घोषित कर दिया। मौके पर पहुंचे थाना बाघराय के एसआई धनंजय राय ने शव को पीएम के लिए भेज दिया।

न्यू एंजिल्स स्कूल में मेधावी किये गये सम्मानित

उज्जवल भविष्य के लिये प्रबंधिका ने दिये टिप्स

प्रतापगढ़। नगर के कटरा रोड पर स्थित न्यु एन्जिल्स सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल के सभागार में सत्र 2020-2021 में उत्तीर्ण कक्षा-12 की टाप 20 की मेरिट में आए हुए कक्षा-12 के अंशिता सिंह, अरुण कुमार मिश्रा, शिवाम्बुज मिश्रा, मो. फ़ैज़ुल्ला, आस्था केसरवानी, अभिनव मिश्रा आदि एवं कक्षा 10 की टाप 20 की मेरिट के अंशुल चावला, स्वस्तिका सिंह, रुद्र त्रिपाठी, आयुष यादव, शुभांशु विश्वकर्मा आदि छात्र एवं छात्राओं को प्रबन्धिका डा0 शाहिदा द्वारा मेडल एवं सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर स्कूल की प्रबंधिका ने कहा कि बच्चों ने कोरोना काल में बहुत विपरीत परिस्थितियों में पढ़ाई की है। कक्षा-12 के मेधावी छात्रों को अब प्रतियोगी परीक्षाओं में भी बैठना होगा। उन्हें आगे भी परिश्रम करना है और कक्षा-10 के मेधावी छात्रों को और बेहतर करने के लिये परिश्रम करना होगा। उन्होंने सभी छात्र-छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना की। इस अवसर पर कालेज के प्रधानाचार्य बी.के. सोनी, एच आर मैनेजर एफ ज़ीनत, आर.के सिंह, रवि सिंह, सुनील विश्वकर्मा, पूनम श्रीवास्तव, शशि पांडे, दीपिका शुक्ला, शकुन्तला सिंह आदि उपस्थित रहे।

समस्याओं की पूर्ति के लिये डीएम को भाजयुमो ने सौंपा ज्ञापन

जिला स्टेडियम में शुद्ध पेयजल, शौचालय आदि की समस्या को उठाया

प्रतापगढ़। भाजयुमो जिलाध्यक्ष रवि गुप्ता ने ज़िलाधिकारी नितिन बंसल से मिलकर जिला स्टेडियम में व्याप्त मूलभूत समस्याओं के समाधान के लिए माँगपत्र सौंपा। उन्होंने ज़िलाधिकारी से स्टेडियम में शुद्ध पेय जल की समुचित व्यवस्था, महिला एवं पुरूष मूत्रालय एवं शौचालय की पृथक समुचित व्यवस्था, स्टेडियम मार्ग व परिसर में पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था एवं परिसर में वर्षा जल संचयन की दिशा में गम्भीरता से कार्यवाही हेतु माँग पत्र देकर कार्यवाही की माँग की। भाजयुमो जिलाध्यक्ष रवि गुप्ता ने विज्ञप्ति के माध्यम से बताया कि केन्द्र की मोदी सरकार खेलो इंडिया और फिट इंडिया जैसी पहल से न सिर्फ खेलों को बढ़ावा दे रही है, युवा प्रतिभाओं को निखारने के लिए उत्तर प्रदेश की योगी सरकार लगातार प्रयास कर रही है लेकिन क्रीड़ा अधिकारी व खेल से जुड़े विभागों की लापरवाही की वजह से जिला स्टेडियम में मूलभूत सुविधाओं का अभाव है। उन्होंने बताया कि विगत दिनों चल रहे ओलम्पिक खेलों में प्रतिभाग कर रहे भारतीय खिलाड़ियों के प्रोत्साहन के संदर्भ में कई बार जिला स्टेडियम जाना हुआ इस दौरान वहां प्रशिक्षण ले रहे महिला पुरुष खिलाड़ियों और उनके कोच व कर्मचारियों से सीधा संवाद करने का अवसर मिला। उन्होंने ज़िलाधिकारी से माँगपत्र के माध्यम से शीघ्र समस्या निदान की माँग की।

देवेन्द्र गुप्ता बने शासकीय अधिवक्ता

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेश शासन द्वारा जिला न्यायालय प्रतापगढ़ में विशेष शासकीय अधिवक्ता फौजदारी के पद पर देवेन्द्र कुमार गुप्ता को नियुक्त किया गया है। इस पर अधिवक्ताओं ने हर्ष व्यक्त करते हुए उत्तर प्रदेश शासन के प्रति आभार व्यक्त करते हुए श्री गुप्ता को शुभकामनाएं दी है। देवेंद्र कुमार गुप्ता को विशेष शासकीय अधिवक्ता फौजदारी के पद पर नामित होने पर जिला उमरवैश्य समाज सभा के पदाधिकारियों ने खुशी जाहिर की जिसमें संरक्षक रोशनलाल उमरवैश्य, अध्यक्ष गुलाब चंद, महामंत्री शोभनाथ, कोषाध्यक्ष मदन लाल, श्रीराम, राष्ट्रीय अध्यक्ष राम जी पट्टी, मनोज कुमार, रमेश चंद्र, डॉ0 श्याम, राजकुमार उमरवैश्य आदि ने खुशी जाहिर कर मिठाई बाँटी।

घर में घुसकर महिला के साथ किया छेड़छाड़

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के लवाना ठकुरी का पुरवा में मंगलवार की रात गांव के एक आरोपी युवक ने घर के अंदर 26 वर्षीय महिला के साथ छेड़छाड़ किया। परिजनों के विरोध करने पर जान से मारने की धमकी देते हुए फरार हो गया। घटना की तहरीर पीड़ित ने दूसरे दिन नवाबगंज पुलिस को दी। तहरीर मिलने पर थाना प्रभारी रुकुमपाल सिंह ने मामले को गंभीरता से लेते हुए आरोपी युवक के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।

आज आएंगे प्रमोद तिवारी

लालगंज, प्रतापगढ़। केन्द्रीय कांग्रेस वर्किंग कमेटी के सदस्य प्रमोद तिवारी आज शुक्रवार को मध्यान्ह बारह बजे क्षेत्र के धधुआगाजन स्थित आइंसटीन पब्लिक स्कूल मे पं. भागवत प्रसाद शुक्ल बाबूजी की पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम मे बतौर मुख्यअतिथि शामिल होगें। उक्त जानकारी विद्यालय के प्रधानाचार्य विल्सन जार्ज ने दी है। इधर मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने बताया कि प्रमोद तिवारी दिन मे ढ़ाई बजे नगर स्थित कैम्प कार्यालय पर कार्यकर्ताओं से मुलाकात करेगें।

असलहा सटाकर युवक को पीटने का आरोप

पट्टी, प्रतापगढ़। बाजार से वापस आ रहे युवक को गांव के ही तीन लोगों ने रोककर असलहा सटा दिया और मारा-पीटा जान से मारने की धमकी दिए। पीड़ित ने मामले में कोतवाली पट्टी में तहरीर देकर आरोपियों पर कार्यवाही की मांग की है। पट्टी कोतवाली क्षेत्र के अमुवाही गांव के रहने वाले अजीत कुमार यादव ने पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर बताया कि बीते बुधवार को वह बाजार से घर वापस आ रहा था रास्ते में गांव के ही तीन लोग अवैध असलहे के साथ उसको रोक लिया तथा कनपटी पर सटाकर उसे मारा पीटा जान से मारने की धमकी दी।

सोनामऊ घाट सौंदर्यीकरण व शमशान गृह से वंचित

परियावां, प्रतापगढ़। गंगा को स्वच्छ व निर्मल बनाये रखने के लिए केंद्र की मोदी सरकार नमामि गंगे का आयोजन कर लोगो को संदेश दे रहे हैं जबकि विकास क्षेत्र कालाकांकर की ग्राम पंचायत मुरस्सापुर सोनामऊ गंगाघाट का सौंदर्यीकरण व शमशान गृह के लिए तत्कालीन कुंडा उपजिलाधिकारी को क्षेत्रीय लेखपाल व राजस्व की टीम ने सर्वे करके अपनी रिपोर्ट कोरोना काल मे उपजिलाधिकारी को दिया था, लेकिन अभी तक उपजिलाधिकारी की तरफ से कोई पहल नहीं शुरू हो सकी। जबकि गंगातट किनारे प्राचीन व ऐतिहासिक तीन चार मंदिर है। गंगातट किनारे शव गृह न होने से अंतिम संस्कार के लिए लोगो को बड़ी परेशानी का सामना करना पड़ता है। ग्रामीणों ने नमामि गंगे के अधिकारियों को इस संदर्भ में कई बार प्रार्थना पत्र रजिस्टर्ड डाक से भेजकर अवगत कराया लेकिन अभी तक किसी प्रकार की कोई कार्यवाही का आदेश जारी नही किया नवनिर्वाचित ग्राम प्रधान संगीता यादव पतने सुरेश कुमार यादव ने जिलाधिकारी डॉ नितिन बंसल से मुरस्सापुर सोनामऊ गंगाघाट का सौंदर्यीकरण कराने की पुरजोर मांग की है जिससे लोगो को परेशानी से निजात मिल सके और गंगा मइया का सौंदर्यीकरण हो सके।

अधिवक्ता से गाली-गलौज के मामले में रिपोर्ट दर्ज

लालगंज, प्रतापगढ़। अधिवक्ता के साथ गालीगलौज तथा धमकी को लेकर पुलिस ने बलवा समेत कई गंभीर धाराओ मे बुधवार की रात केस दर्ज किया है। कोतवाली के तेलियाही निवासी महेन्द्र प्रसाद अधिवक्ता है। पीडित ने दी गई तहरीर मे कहा है कि बीती ग्यारह अगस्त को शाम पांच बजे विपक्षियो ने मवेशियो से उसके खेत की मिटटी गिरा दी। विरोध करने पर गाली देते हुए जानलेवा धमकी दी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने आरोपी गांव के दशाराम, अनिल, हेमंत, अजय, रवि, सोनू, बब्लू, जीतेन्द्र के खिलाफ गालीगलौज तथा धमकी एवं बलवा का केस दर्ज किया है।

जिला अधिकारी ने समीक्षा बैठक कर दिए आवश्यक दिशा निर्देश

समीक्षा बैठक में अपराधों पर अंकुश लगाने, लंबित प्रकरणों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने का दिया निर्देश

अखंड भारत संदेश

भदोही। जिलाधिकारी आर्यका अखौरी ने कानून व्यवस्था एवं अपराध अभियोजन कार्यों की मासिक समीक्षा में अपराधों पर अंकुश लगाने सम्बंधी बैठक करते हुए कानून व्यवस्था को दुरुस्त रखने, लंबित प्रकरणों का गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी महोदया आर्यका अखौरी ने पास्को, एससीएसटी, गैंगेस्टर अपराधों के बारे में जानकारी ली। जिलाधिकारी महोदया ने केश को डिस्पोजल करके सीएनआर नंबर भी उपलब्ध कराएं। जिलाधिकारी महोदया ने कहा की बार बार कुछ अधिकारियों के शून्य पोर्टल पर निस्तारण रिपोर्ट अपलोड होना बहुत ही खराब स्थिति है।जिलाधिकारी महोदया ने अभियोजन अधिकारी से कहा कि अपराधी चाहे जो भी हो, सजा पाने से बचना नहीं चाहिये यह सुनिश्चित किया जाये। उन्होंने अपराधियों को समाज के लिये नासूर बताते हुये कहा कि अपराधियों के प्रति कतई रहम न बरतते हुये सामाजिक हित में उनके अपराध की सजा बतौर उन्हें जेल भिजवाया जाना बहुत जरूरी है साथ ही निर्दोष लोगो को किसी भी प्रकार की समस्या न होने पाये। उन्होने महिला अपराधों से सम्बन्धित मुकदमों पर प्रभावी ढंग से कार्यवाही करने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी महोदया ने आपराधिक मामलों में लिप्त अपराधियों को सजा दिलाने के लिये न्यायालयों में मुकदमों की प्रभावी ढंग से पैरवी करने के लिये अभियोजन अधिकारियों को कड़े निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि कानून के प्रति भय कायम करने और सजा काटने के लिये अपराधियों को जेल भिजवाने हेतु पुलिस और अभियोजन अधिकारी एकजुट होकर ठोस कदम उठायें। एससी एसटी में पेंडिंग 42 फाइल अभी तक रखी हुई उस पर कोई अभी तक कारवाई नहीं होने पर नाराजगी जताई। पास्को, एससीएसटी पर लम्बित मुकदमों की संख्या अधिक होने पर नाराजगी जाहिर करते हुए अभियोजन अधिकारियों तथा पुलिस विभाग को समन्वय स्थापित करते हुए कार्यवाही करते हुए निस्तारण करने के निर्देश दिये। महिला अपराधों से सम्बन्धित कोर्ट में लम्बित प्रकरणों का प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण करने के निर्देश दियें।जिलाधिकारी महोदया ने जिले में शांति और कानून-व्यवस्था कायम रखने की प्राथमिकता व्यक्त की और कहा कि पुलिस की छवि ऐसी होनी चाहिये कि अपराधियों में भय और आम लोगों को सुरक्षा का अहसास हो। जिलाधिकारी महोदया ने कहा कि पुलिस क्षेत्र में छोटी से छोटी घटना को भी गंभीरता से लेकर तत्काल प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित करे ताकि ऐसी घटना की पुनरावृति न हो और आगे किसी बड़े खतरे की वजह न बन सके। अपर जिलाधिकारी शैलेन्द्र कुमार मिश्रा ने पास्को, एवं बलात्कार केश में संबंधित अभियोजन कार्यों के पदाधिकारियों से आग्रह किया कि प्रोफार्मा बनाए जिसमें नाम, केश की वर्तमान स्थिति, गवाहों का पता, मोबाइल नंबर फ़ीड कराकर एक सप्ताह के अंदर उपलब्ध करा दे जिससे गवाहों को जल्द से जल्द बुलाकर केश को डिस्पोजल किया जाय। अपर पुलिस अधीक्षक आर के वर्मा ने सुरक्षा और शांति व्यवस्था के लिये खतरा पैदा करने वाले लोगों के विरूद्ध सख्ती से कार्यवाही करने हेतु पुलिस अधिकारियों को निर्देश दिये। उन्होने कहा कि गुण्डा एक्ट के प्रकरणों में गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दे। उनके खिलाफ कडी कार्यवाही किया जाना सुनिश्चित करे। गम्भीर प्रकरणों के सम्बन्ध में उच्च अधिकारियों को अवश्य अवगत कराये। उन्होने कहा कि लम्बित केसों का प्राथमिकता के आधार पर चयन करते हुए निस्तारण कराने के निर्देश दिये।

इस अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक शैलेन्द्र कुमार मिश्रा, अपर पुलिस अधीक्षक आर के वर्मा, जे डी राम गोविन्द पांडेय, एसपीओ ओमकारनाथ तिवारी, उप जिलाधिकारी ज्ञानपुर चन्द्र शेखर, जिला सूचना अधिकारी प्रवीण मालवीय, समाज कल्याण अधिकारी महेंद्र यादव, जिला पूर्ति अधिकारी सीमा सिंह, नारायण सिंह, तथा अन्य अभियोजन सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

उप कृषि निदेशक अरविन्द कुमार सहायक निर्वाचन अधिकारी नियुक्त

अखंड भारत संदेश

भदोही। जिला मजिस्ट्रेट/निर्वाचन अधिकारी आर्यका अखौरी ने बताया कि जनपद भदोही में जिला पंचायत के निर्वाचित सदस्यों में से जिला योजना समिति के सदस्यों के निर्वाचन को सकुशल एवं निर्विघ्न रूप से सम्पनन कराने हेतु आयोग के अधिसूचना के क्रम में मैं आर्यका अखौरी जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी (पं0) जिला योजना समिति निमन विवरण के अनुसार सहायक निर्वाचन अधिकारी नियुक्त करती हूँ तथा निर्देशित किया जाता है कि नामांकन फामी की बिक्री से लेकर मतगणना तक के सभी कायी का सकुशल सम्पादन आयोग के निर्देशानुसार सम्पनन करायेंगे। निर्वाचन की समस्त प्रक्रिया निमन विवरणानुसार निर्धारित स्थान पर की जायेगी। जिला पंचायत भदोही में पद सदस्य जिला योजना समिति, नामांकन पत्रों की बिक्री से लेकर मतगणना कराये जाने का स्थान, न्यायालय कक्ष जिलाधिकारी कलेक्टेट्रट मुख्यालय सरपतहां, सहायक निर्वाचन अधिकारी का नाम पदनाम अरविन्द कुमार उप कृषि निदेशक किया गया है।

जिपंः सदस्यों के निर्वाचन हेतु सूची चस्पा

अखंड भारत संदेश

भदोही। जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी (पंचायत) आर्यका अखौरी ने बताया कि सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि उत्तर प्रदेश जिला योजना समिति नियमावली-2008 के नियम-8 के अन्तर्गत जिला पंचायत भदोही के निर्वाचित सदस्यों में से जिला योजना समिति के निर्वाचित होने वाले सदस्यों के निर्वाचन हेतु मतदाताओं जिला पंचायत सदस्य की सूची तैयार करा दी गई है तथा उसकी प्रमाणित प्रति अधोहताक्षरी के कार्यालय पर तथा जिला पंचायत के सूचना पट्ट पर चस्पा करा दी गई है।

मिशन शक्तिः आयोजित होगा मेगा इवेंट रक्षा उत्सव

अखंड भारत संदेश

भदोही। प्रदेश में महिलाओं तथा बच्चों की सुरक्षा, सम्मान एवं स्वालंबन के लिए मिशन शक्ति के अन्तर्गत इस माह से दिसम्बर तक की कायच्योजना तैयार की जा चुकी है। मिशन शक्ति की कायच्योजना के क्रियान्वयन के सम्बन्ध में महिला एवं बाल विकास विभाग की प्रमुख सचिव वी. हेकाली झिमोमी ने जिलाधिकारियों को पत्र भेजा है। प्रमुख सचिव ने बताया कि मिशन शक्ति 3 के अंतर्गत महिला कल्याण विभाग और बाल विकास सेवा एवं पुष्टाहार विभाग द्वारा संयुक्त कायच्योजना के अंतर्गत गतिविधियों का संचालन किया जा रहा है। जिला प्रोबेशन अधिकारी महेन्द्र यादव ने बताया कि इसी क्रम में 21 अगस्त को मेगा इवेन्ट रक्षा उत्सव के अन्तर्गत बच्चों तथा महिलाओं को विभिनन प्रकार की हिंसा से बचाव संबंधी हाट-बाजार आदि सार्वजनिक स्थानों पर कार्यक्रमों का आयोजन कर जन-सामान्य को जागरूक किया जायेगा। बेटियों से पहचान -नारी सम्मान थीम पर समस्त स्तरों पर जनजागरूकता कार्यक्रम का आयोजन कर परिवारों तथा दुकानदारों आदि को जागरूक किया जायेगा कि वह अपने घरों व दुकानों को अपने परिवार की महिलाओं व बेटियों के नाम से पहचान दें। कायच्योजना के मुताबिक गत सात अगस्त को हक की बात जिलाधिकारी के साथ महिला इंटरफेस कार्यक्रम आयोजित किया गया। उन्होंने बताया कि 19 अगस्त को मेगा इवेन्ट रक्षा उत्सव आयोजित किया जायेगा। और 25 अगस्त को स्वावलंबन कैम्प लगाया जायेगा। प्रमुख सचिव ने बताया कि मिशन शक्ति के अन्तर्गत हर महीने अलग-अलग गतिविधियां आयोजित की जाएंगी।

महिला शक्ति, सुरक्षा, सम्मान एवं स्वावलंबन कार्यक्रम 21 को

मुख्य विकास अधिकारी ने संबंधित अधिकारियों संग बैठक कर दिया आवश्यक दिशा निर्देश

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। महिलाओं तथा बच्चों की सुरक्षा सम्मान एवं स्वालंबन के लिये मिशन शक्ति के अन्तर्गत की जा रही सभी तैयारियों के सम्बन्ध में मुख्य विकास अधिकारी भानू प्रताप सिंह ने विकास भवन सभागार में बैठक कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये। उन्होने बताया कि महिला शक्ति, सुरक्षा, सम्मान एवं स्वावलंबन कार्यक्रम 21 अगस्त 2021 को समय 11:00 बजे से 12:00 बजे के बीच काशी नरेश सनतकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर में आयोजित की जायेगी।

उन्होंने सभी विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिया कि योजनाओं से संबंधित सभी विभाग अपना-अपना सम्मान प्रशस्ति पत्र छपवा लें। उन्होंने मुख्य चिकित्साधिकारी को निर्देशित किया कि कार्यक्रम स्थल पर सैनिटाइजर, मास्क पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध करायेंगे। मुख्य विकास अधिकारी ने मुख्य चिकित्साधिकारी को निर्देश दिया कि कार्यक्रम स्थल पर 50 आशा कर्मी तथा जिला कार्यक्रम अधिकारी को निर्देश दिये कि कार्यक्रम स्थल पर 50 आगनबाड़ी कार्यकत्री उपस्थित रहनी चाहिए। कार्यक्रम स्थल पर काशी नरेश राजकीय सनतकोत्तर महाविद्यालय की छात्राओं के द्वारा सास्कृतिक कार्यक्रम तथा मार्सल आर्ट कार्यक्रम कराया जायेगा। उन्होंने जिला प्रोबेशन अधिकारी को निर्देश दिया कि सभी व्यवस्था को समय से पूर्ण करा ले। इसमें किसी प्रकार की लापरवाही या उदाशीनता किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नही की जायेगी। इस अवसर पर जिला पंचायत राज अधिकारी बालेश्वरधर द्विवेदी, जिला समाज कल्याण अधिकारी महेन्द्र यादव, जिला सूचना अधिकारी प्रवीण मालवीय, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी भूपेन्द्र नारायण सिंह, डॉ0 कामीनी, डिप्टी कमीशनर एनआरएलएम अधिकारी एवं सम्बन्धित विभागों के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

न्यायालय ने किशोर को सौंपा मां की सुपुर्दगी में

अखंड भारत संदेश

ज्ञानपुर। न्यायालय बाल कल्याण समिति के अध्यक्ष पीसी उपाध्याय ने बताया कि थाना सुरियावां अन्तर्गत पंजीकृत मु0अ0सं0 157/21 धारा 363 भा0दं0वि0 से एक नाबालिक बालक मो0 समर उम्र लगभग 14 वर्ष पुत्र मो0 सहनवाज निवासी ग्राम-सराय ममरेज, जनपद प्रयागराज हाल पता भोला शुक्ला का मकान नेता नगर थाना-सुरियावां जनपद भदोही जो कि बालक अपने घर से घूमने के उद्देश्य से दिनांक 13 अगस्त 2021 को घर पर किसी भी सदस्य को बिना बताये प्रयागराज जनपद से चला गया था। बालक की काफी खोजबीन करने पर जब उसका पता नही चल पाया तो घर के सदस्यों ने थाना-सुरियावां में एफ0आई0आर0 दर्ज करा दिया। कुछ दिन बाद बालक को अपनी गलती का एहसास होने पर स्वयं वह दिनांक 15 अगस्त 2021 को अपने घर वापस आ गया। बाल मो0 समर को उप निरीक्षक प्रकाश मिश्र द्वारा न्यायपीठ के समक्ष प्रस्तुत किया गया है। न्यायपीठ की महिला सदस्य संगीता खनन एवं संरक्षण अधिकारी कु0मीना गुप्ता द्वारा बालक की काउन्सलिंग करने पर ज्ञात हुआ कि वह अपनी माता के साथ घर जाना चाहता है। बालक की माता शमीमा शमरीन भी इस न्यायपीठ में उपस्थित है। बालक की माता भी अपने लड़के को अपने साथ ले जाने और बालक की उचित देखभाल एवं शिक्षा-दीक्षा निर्वहन करने की जिम्मेदारी भी ली है। बालक के माता द्वारा प्रार्थना पत्र और अपना एवं बच्चे का आधार कार्ड भी प्रस्तुत किया है। ऐसी स्थिति में महिला सदस्य एवं संरक्षण अधिकारी की संस्तुति एवं बालक के सर्वोत्तम हित को देखते हुए उसे उसकी माता को सुपुर्द किया जाना न्यायोचित होगा।

आईआईसीटी में वितरित हुआ औषधीय पौधे

जड़ी बूटी पौधों का बड़े पैमाने पर नर्सरी लगाकर रोपड़ कराया जाएगा

भदोही। औषधि पौधों के रोपण व वितरण अभियान के अंतर्गत भारतीय कालीन प्रौद्योगिकी संस्थान आईआईसीटी में संस्थान के डायरेक्टर सहित सभी प्राध्यापक, प्राध्यापिका एवं कर्मचारियों को औषधि पौधे अश्वगंधा, गिलोय, श्वेत मूसली, चिरायता, नीम, श्यामा तुलसी आदि पौधे वितरित किए गए। भूमि सुपोषण व संरक्षण के लिए संकल्प भी दिलाया गया।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डॉ आलोक कुमार ने कहा कि महर्षि चरक सुश्रुत धनवंतरी आदि ऋषियों द्वारा प्रतिस्थापित आयुर्वेद की परंपरा को आगे बढ़ाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि संस्थान में भी इन जड़ी बूटी औषधि पौधों का बड़े पैमाने पर नर्सरी लगाकर रोपड़ कराया जाएगा। जिससे लोगों को बीमारियों से मुक्त किया जा सके और मानवता की सेवा की जा सके। इस अवसर पर पतंजलि योग समिति के राज्य प्रभारी संदेश योगी ने जड़ी बूटी औषधि पौधों के गुणों की चर्चा करते हुए कहा कि गिलोय अश्वगंधा तुलसी हल्दी आदि औषधि पौधों की कुरोना काल में लोगों का जीवन बचाने में बहुत बड़ी भूमिका रही उन्होंने कहा कि गिलोय हमें कफ पित्त वात तीनों दोषो से मुक्ति दिलाता है। उन्होंने कहा कि अश्वगंधा तनाव, थकान और सामान्य दुर्बलता शारीरिक कमजोरी को दूर कर हमें मजबूत बनाता है। इसके सेवन से व्यक्ति युवा बना रहता है ।सतावर सभी प्रकार की कमजोरी में लाभदायक है। इस अवसर पर निदेशक सहित डॉ एसके पाल, श्रवण कुमार गुप्ता, डॉ हिमांशु महापात्रा, बेटी दासगुप्ता, डॉ मोनिका वेरा, डॉक्टर करमाकर सहित सभी संस्थान के प्राध्यापक प्राध्यापिका वितरण कार्यक्रम उपस्थित रहे।

सकरी गली में फंसने से पशु की मौत

चौरी। थाना क्षेत्र के बरदहां में बुधवार की देर रात छुट्टा पशु एक सकरी गली में जा फंसा। सुबह जानकारी होने पर स्थानीय लोगों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने उसे किसी तरह निकाल तो जरूर लिया। लेकिन तब तक उस छुट्टा पशु की मौत हो गई। बताया गया है कि गुरुवार की सुबह पतली गली में फंसे एक पशु देख ग्रामीणों ने पुलिस को सूचना दी। मौके पहुंचे पशु की हालत देख पुलिस ने फायर ब्रिगेड को बुलाया।

कांग्रेस ने किया जनसंपर्क

चौरी। देश में 75वीं गणतंत्र दिवस मनाये जाने पर कांग्रेस पार्टी की तरफ से सभी पदाधिकारी अन्य गावों में 75 घंटे रहकर विभिनन कार्यक्रम करेंगे। इसी क्रम मे उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सदस्य संजीव दुबे की अगुआई में कांग्रेसियों ने लठियां गांव में तय कार्यक्रम के अनुसार पहले दिन बृहस्पतिवार को डोर टू डोर जनसंपर्क किया है। वहीं कार्यक्रम में मौजूद जनपद प्रभारी गुलजारी लाल उपाध्याय, संजीव दुबे, जजलाल राय ने बताया कि दूसरे दिन प्रभात फेरी व अन्तिम दिन बैठक कर गणमान्य लोगों को पार्टी की तरफ से सम्मानित भी किया जायेगा। इस दौरान पार्टी की नीतियों को जन-जन तक पहुंचाने का काम किया जायेगा। इस दौरान संजीव दुबे, अवधेश शुक्ल, सौरभ दुबे, मनीष दुबे, जयकांत त्रिपाठी, रविकांत त्रिपाठी, इंद्रमणि त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

गंदे पेयजल आपूर्ति से नागरिक परेशान, बढ़ रहा संक्रामक रोग का खतरा

सभासद संदीप गुप्ता ने लिखा नगरपालिका को पत्र

अखंड भारत संदेश

गोपीगंज भदोही। नगर पालिका परिषद के वार्ड नंबर 5 गल्ला मंडी व छोटी चौराहा निवासियों को दूषित और गंदे पेयजल आपूर्ति से परेशानी उठानी पड़ रही है। बताया जाता है कि काफी दिनों से पेयजल आपूर्ति के समय नलों से गंदे पानी की आपूर्ति हो रही है। जिससे वार्ड निवासियों सहित लोगों को जहां शुद्ध पेयजल नहीं मिल रहा है। वहीं संक्रमण और बीमारी फैलने की आशंका बनी हुई है। इस संबंध में स्थानीय नागरिकों कमलेश चंद्र सेठ, सुभाष चंद्र सेठ, कमल मोदनवाल, प्रमोद बरनवाल, विनय बरनवाल आदि की शिकायत पर वार्ड सभासद संदीप गुप्ता द्वारा नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी अमिता सिंह को लिखित शिकायत करते हुए अभिलंब शुद्ध पेयजल आपूर्ति कराए जाने तथा लीकेज पाइप लाइन को ठीक कराए जाने की मांग की गई है।

परिषदीय विद्यायालयों में पहले दिन दिखेगा उत्सव सा नजारा

बीईओ नीरज कुमार श्रीवास्तव ने प्रधानाध्यापकों के साथ की बैठक, दिए निर्देश

लंबे समय बाद खोले जा रहे उच्च प्राथमिक विद्यायालयों की सफाई शुरू

ज्ञानपुर। कोरोना की वजह से बंद चल रहे परिषदीय स्कूलों के दरवाजे 23 अगस्त से बच्चों के लिए खोल दिए जाएंगे। दो चरणों में खोले जा रहे परिषदीय स्कूलों में प्रथम फेज में कक्षा छह से आठ तक के ही बच्चों को बुलाया जा रहा है। स्कूलों को खोले जाने के संबंध में खंड शिक्षाधिकारी अभोली नीरज कुमार श्रीवास्तव ने आज प्रधानाध्यापकों के साथ बैठक की। बीईओ ने सभी प्रधानाध्यापकों से कहा कि 23 अगस्त को स्कूलों को खोलने से पहले सभी तैयारियां पूरी कर लें।

स्कूलों की साफ-सफाई से लेकर एमडीएम के बर्तन, मिड डे मील इत्यादि की तैयारी कर लें। कहा कि स्कूल का पहला दिन उत्सव की तरह होना चाहिए। लंबे समय बाद स्कूल आने वाले बच्चों को ऐसा लगे कि यह विद्यालय उन्ही का इंतजार कर रहा है। बीईओ ने अभिलेखों के रखरखाव, मानव संपदा पर अवकाश लेने की प्रक्रिया, कायाकल्प योजना के सभी पैरामीटर की समीक्षा की, साथ ही विद्यालयों में प्रधानों, ग्राम शिक्षा समिति और स्थानीय लोगों की मदद लेने का निर्देश दिया। बीईओ ने कहा कि बच्चों के खाते में कनवर्जन कास्ट एवं खाद्यानन का वितरण पूर्ण करा लिया जाए। इस पर सभी प्रधानाध्यापयों ने बीईओ को आश्वस्त किया कि विद्यालय में सभी प्रकार की तैयारियां की जा रही हैं। आपके द्वारा दिये गये निर्देशों का अक्षरशः पालन करते हुए विकास खंड अभोली को प्रेरक ब्लाक बनाने में कोई कसर नही छोडेंगे। कहा कि विद्यालय का पहला दिन उत्सव जैसा ही होगा। बैठक में एआरपी संतोष कुमार सिंह, संतोष कुमार, कमलेश पांडेय, अविनाश मिश्र, भूपेंद्र कुमार यादव, कमलेश कुमार, परीश पांडेय आदि मौजूद रहे।

अन्ह व्यक्ति गुरू गोविन्द सिंह राष्ट्रीय एकता पुरस्कार हेतु करें आवेदन

ज्ञानपुर। मुख्य विकास अधिकारी भानू प्रताप सिंह ने बताया कि वर्ष 2021-22 के लिये गुरू गोविन्द सिंह राष्ट्रीय एकता पुरस्कार हेतु प्रस्ताव उपलब्ध कराये जाने के सम्बन्ध में जनपद से इस पुरस्कार के मापदण्डों को पूरा करने वाले पात्र महानुभावों के प्रस्ताव उनके द्वारा किये गये महत्वपूर्ण कायी का तथ्यात्मक विवरण एवं अभिलेखीय साक्ष्यों के साथ संलगन प्रारूप में स्पष्ट आख्या प्रस्तुत सहित शासन द्वारा दिनांक 30 सितम्बर 2021 तक चार प्रतियों में उपलब्ध कराये जाने हेतु निर्देशित किया गया है। उन्होंने बताया कि पुरस्कार हेतु चयनित व्यक्ति भारत का मूल नागरिक हो, उत्तर प्रदेश राज्य की सीमा के भीतर पुरस्कार पर विचार किये जोन के वर्ष में सामान्यतया निवास करता रहा हों, मानवाधिकार, सामाजिक न्याय व राष्ट्रीय एकीकरण के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान रहा हो। गुरू गोविन्द सिंह राष्ट्रीय एकता पुरस्कार योजना के अधिन पूर्व में इस राज्य सरकार द्वारा पुरस्कार न दिया गया हो।

पायलट की सक्रियता से बची 400 लोगों की जान

भदोही। बनारस से प्रयागराज की तरफ जा रही चौरीचौरा एक्सप्रेस को उस समय दस किलोमीटर बैक ले जाया गया, जब एक स्थान पर गड्ढा हो जाने से रेलवे ट्रैक धंस गया था। समय रहते लोको पायलट ने उक्त स्थान (धंसे हुए) को देख लिया और ब्रेक लगाकर गाड़ी को रोकी और उच्चाधिकारियों से बात की। इसके बाद गाड़ी को दस किलोमीटर बैक ले जाया गया।जानकारी के मुताबिक लोको पायलट सुजीत राय और गार्ड त्रिलोकीनाथ चौरीचौरा एक्सप्रेस को लेकर बनारस से प्रयागराज की तरफ जा रहे थे। जैसे ही यह गाड़ी भदोही जनपद के गोपीगंज थाना क्षेत्र के आल मऊ हाल्ट के समीप पहुंची, लोको पायलट को रेलवे ट्रैक धंसा हुआ दिखाई पड़ा। माजरा समझ में आने पर सुजीत राय ने इमरजेंसी ब्रेक का इस्तेमाल करते हुए गाड़ी रोकी। बताया जाता है कि जहां पर गाड़ी रुकी, उस स्थान से कुछ ही फासले पर ट्रैक धंसा हुआ था। इसके बाद पायलट और गार्ड ने नीचे उतरकर ट्रैक मुआयना किया।चौरीचौरा एक्सप्रेस में इमरजेंसी ब्रेक लगाए जाने की वजह से यात्रियों में भी हडकंप मच गया। बीच राह में गाड़ी रोके जाने से तमाम यात्री भी गाड़ी से उतर गए और आगे जाकर देखा तो वहां का नजारा देख लोग पायलट सुजीत राय की तारीफ किए बगैर नहीं रह पाए। इसके बाद पायलट और गार्ड ने मामले की जानकारी उच्चाधिकारियों को दी। उच्चाधिकारियों से मिले निर्देश के बाद पायलट ने गाड़ी को दस किलोमीटर बैक किया और गाड़ी को लेकर माधो सिंह स्टेशन पहुंचे।इसके बाद यात्रियों ने राहत की सांस ली। बताया जाता है कि रेलवे के पोल संख्या 839 के समीप यह ट्रैक धंसा हुआ था। बताया जाता है कि उस स्थान पर तकरीबन दस फिट से ज्यादा का एक बड़ा गड्ढा हो गया था। यह काफी चौड़ाई में था। यदि गाड़ी अपनी रफ्तार में ही आगे बढ़ती तो पूरा इंजन उस गड्ढे में जा सकता और फिर भारी जनहानि होने से कोई रोक नहीं पाता।

शराब की दुकान में घुसकर नगद सहित हजारो की चोरी

चौरी। क्षेत्र के लक्षापुर में बीती रात चोरो ने एक देशी शराब की दुकान में घुसकर नगद सहित हजारो रुपये के सामान पर हाथ साफ कर दिया। घटना की जानकारी मिलती ही मौके पर पहुंची पुलिस ने मामले की जांच पड़ताल शुरू कर दी है।बताया जाता है कि बुधवार की रात छत के सहारे टीनशेड तोड़कर अंदर घुसे चोर नगदी सहित शराब की पेटी आदि सामान उठा ले गए। सुबह में दुकान खोलने के लिए सेल्समैन श्यामनारायण गौतम पहुंचे और ज्योंही दुकान के अंदर गये बिखरा सामान व ऊपर टूटे टीनशेड को देख अवाक रह गये। सेल्समैन ने तत्काल घटना की सूचना 112 नम्बर पर पुलिस को दी। सूचना पाकर पुलिस मामले की जांच पड़ताल शुरू कर दी है। सेल्समैन श्यामनारायण ने बताया कि रोज की तरह दुकान बंद कर घर चला गया। सुबह आया तब घटना की जानकारी हुई। पुलिस को दिए तहरीर में सेल्समैन ने कहा है कि चोर 25 हजार नगद, पांच पेटी शराब के अलावा, टीवी, डिबियार, सीसी कैमरा का सेट उठा ले गए है।

सम्पादकीय

एनडीए में महिलाएं!

कोर्ट का ध्यान मुख्य तौर पर इस बड़े सवाल पर था कि आखिर आर्मी में महिलाओं के सवाल पर खुलापन क्यों नहीं दिख रहाघ् क्यों हर बार कोर्ट को दखल देकर फैसला सुनाना पड़ता है और फिर भी बात उस खास मामले से जुड़े फैसले पर अमल तक ही सीमित रह जाती हैए उससे आगे नहीं बढ़ती सुप्रीम कोर्ट ने एक महत्वपूर्ण फैसले में एक बार फिर इस बात पर जोर दिया कि आर्मी में महिलाओं के साथ भेदभाव करने वाली मानसिकता के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। अंतरिम आदेश के जरिए कोर्ट ने यह साफ कर दिया कि आगामी 5 सितंबर को होने वाली एनडीए ;नैशनल डिफेंस अकैडमीद्ध प्रवेश परीक्षा में महिलाएं भी बैठ सकेंगी। हालांकि उनका नामांकन इस मामले में आने वाले अंतिम फैसले पर निर्भर करेगाए लेकिन कोर्ट के इस फैसले की अहमियत महज एडमिशन प्रॉसेस तक सीमित नहीं है।

कोर्ट का ध्यान मुख्य तौर पर इस बड़े सवाल पर था कि आखिर आर्मी में महिलाओं के सवाल पर खुलापन क्यों नहीं दिख रहाघ् क्यों हर बार कोर्ट को दखल देकर फैसला सुनाना पड़ता है और फिर भी बात उस खास मामले से जुड़े फैसले पर अमल तक ही सीमित रह जाती हैए उससे आगे नहीं बढ़तीघ् गौर करने की बात है कि अन्य तमाम क्षेत्रों में तो महिलाएं काफी तेजी से आगे बढ़ी हैए लेकिन सेना में उनकी गति काफी धीमी रही। करीब 14 लाख सैनिकों वाली आर्मी में आज भी महिलाओं का प्रतिशत 0ण्56 ही है। इस मामले में पिछले साल फरवरी में आया सुप्रीम कोर्ट का वह फैसला ऐतिहासिक माना जाता हैए जिसमें अदालत ने न केवल महिलाओं को कमांड पोस्टिंग के लायक बताया बल्कि केंद्र सरकार को यह सुनिश्चित करने का निर्देश भी दिया कि उन्हें परमानेंट कमिशन दिया जाए।

ध्यान रहे उस मामले में महिलाओं को परमानेंट कमिशन न दिए जाने के पक्ष में यह दलील भी दी गई थी कि सेना में ज्यादातर ग्रामीण पृष्ठभूमि के लोग होते हैए जिनके लिए महिलाओं से आदेश लेना सहज नहीं है। कोर्ट ने न केवल इस दलील को खारिज किया बल्कि इस मानसिकता को भी बदलने की जरूरत बताई। उसके बाद हालांकि इस दिशा में कई कदम उठाए गए हैंए लेकिन एनडीए परीक्षा में महिलाओं को बैठने से रोकना और उसे नीतिगत मामला बताना स्वीकार्य नहीं हो सकता। सुप्रीम कोर्ट ने ठीक ही प्रवेश परीक्षा में महिलाओं को बैठने देने से ज्यादा अहमियत इस सवाल को दी कि आखिर सेना में इस मानसिकता को बदलने के कारगर प्रयास क्यों नहीं किए जा रहे। कोर्ट ने फिलहाल खुद को अंतरिम आदेश तक सीमित रखते हुए कहा कि हर मामले में उसके आदेश का इंतजार करना सही नहीं है। सरकार और सेना खुद आवश्यक कदम उठाकर अपनी नीति दुरुस्त करे। हालांकि सेना में लिंग निरपेक्ष नीतियों का मामला उतना सरल नहीं है। महिलाओं के लिए अलग टॉयलेट और ठहरने की अलग व्यवस्था के लिए आवश्यक इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास भी जरूरी हैए जो रातोरात नहीं हो सकता। लेकिन महिलाओं को हर फील्ड में समान अवसर देने के संवैधानिक तकाजे को पूरा करने की राह में किसी भी बाधा को स्वीकार नहीं किया जा सकता। उम्मीद की जाए कि अब इस मामले में सेना और सरकार प्रो.ऐक्टिव रोल में नजर आएगी।

भारत का दुश्मन नहीं है तालिबान, मोदी सरकार को उनसे सीधी बात करनी चाहिए

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

रूस और अमेरिका ने चाहे अफगानिस्तान में अरबों.खरबों रुपए बहा दिए लेकिन आम अफगान जनता में भारत की जो सराहना हैए वह इन देशों की नहीं है। भारत खुद मालदार देश नहीं है लेकिन अफगानिस्तान के नव.निर्माण में भारत ने तीन बिलियन डॉलर लगाए हैं। अफगानिस्तान में अशरफ गनी सरकार गिर चुकी है लेकिन तालिबान की सरकार ने अभी तक औपचारिक सत्ता.ग्रहण नहीं किया है। किसी भी देश में जब भी तख्ता.पलट होता है तो नए शासक की घोषणा तुरंत होती है लेकिन ऐसा लगता है कि तालिबान अभी सलाह.मशवरा में मशगूल हैं। पहले तो उन्हें विश्वास ही नहीं हुआ होगा कि अशरफ गनी की साढ़े तीन लाख की फौज बिना लड़े ही हथियार डाल देगी। तालिबान को क्याए अमेरिकियों को भी इल्म नहीं था कि अफगान.सेना इतनी जल्दी धराशायी हो जाएगी। अमेरिका का जासूसीकृतंत्र दुनिया का सबसे बड़ा और सक्षम तंत्र है लेकिन राष्ट्रपति जो बाइडन भी बिल्कुल गलत सिद्ध हो गए। और भारत का तो कहना ही क्या घ् वह दक्षिण एशिया का सबसे शक्तिशाली देश है। उसका प्रधानमंत्री कार्यालयए उसका विदेश मंत्रालय और उसका गुप्तचर विभाग टापता रह गया। उसे पता ही नहीं चला कि काबुल सूखे पत्ते की तरह टूट कर तालिबान के हाथ में गिरने ही वाला है। सुरक्षा परिषद के अध्यक्ष के नाते भारत चाहता तो काबुल में संयुक्त राष्ट्र की शांतिकृसेना भिजवा सकता था लेकिन यह मौका उसने खो दिया। यह मौका तो अभी भी है। पिछले हफ्ते ही मैंने लिखा था कि तालिबान मूलतः पश्तूनों का संगठन है। अगर उसने हेरात और मजारे.शरीफकृ जैसे गैर.पश्तून इलाके इतनी आसानी से कब्जा लिये तो कंधारए काबुल और जलालाबादकृ जैसे पश्तून इलाके तो अपने आप उसकी शरण में आ जाएंगे लेकिन भारत सरकार ने कोई चतुराई नहीं दिखाई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 15 अगस्त को जब लाल किले से भाषण दे रहे थेए उस समय तालिबान काबुल के राजमहल में घुस रहे थे लेकिन उनके भाषण में इसकी ज़रा भी कोई चिंता नहीं दिखी।

अफगानिस्तान में जो भी उथल.पुथल होती हैए उसका सबसे ज्यादा असर पहले पाकिस्तान और फिर भारत पर होता है लेकिन आप जरा देखें कि अफगान.संकट में सबसे सक्रिय भूमिका कौन.से देश अदा कर रहे थेघ् अमेरिकाए चीनए रूसए तुर्कीए क़तरए यूएई और ईरान आदि! अफगान मुजाहिदीन और तालिबान ने रूस और अमेरिका के हजारों जवानों को मौत के घाट उतार दिया और उनके अरबों.खरबों डॉलरों पर पानी फेर दिया लेकिन इसके बावजूद वे उनके साथ पिछले दो साल से खुलकर बात कर रहे हैं लेकिन भारत आज क्या कर रहा है घ् भारत ने अपना दूतावास खाली कर दिया है। अपने राजदूत और अन्य राजनयिकों की जान बचाकर उन्हें किसी तरह भारत ले आया गया है। अभी भी भारत के लगभग डेढ़ हजार नागरिक वहाँ फंसे हुए हैं। क्या वजह है कि अमेरिकाए रूसए चीनए ईरान और तुर्की जैसे देशों ने काबुल में भारत की तरह अपने दूतावास खाली नहीं किए हैं घ् क्या वजह है कि रूसए चीन

और ईरान ने घोषणा कर दी है कि वे तालिबान के साथ सहयोग करेंगे घ् और क्या वजह है कि भारत की बोलती बंद हैघ् भारत सरकार का प्रवक्ता सिर्फ प्रवासी भारतीयों की सुरक्षा के बारे में चिंतित दिखाई पड़ रहा हैघ् यह ठीक है कि अफगानिस्तान में फंसे भारतीयों को निकाल लाने में भारत सरकार मुस्तैदी दिखा रही है लेकिन क्या वह इस अफगान.संकट में भारतीय राष्ट्रहितों की रक्षा करने का पर्याप्त प्रयतन कर सकी है। रूस और अमेरिका ने चाहे अफगानिस्तान में अरबों.खरबों रुपए बहा दिए लेकिन आम अफगान जनता में भारत की जो सराहना हैए वह इन देशों की नहीं है। भारत खुद मालदार देश नहीं है लेकिन अफगानिस्तान के नव.निर्माण में भारत ने तीन बिलियन डॉलर लगाए हैं। उसके दर्जनों नागरिकों और राजनयिकों को आतंकवादियों ने अपना निशाना बनाया है। भारत ने 200 किण्मीण् की जरंज.दिलाराम सड़क बनाकर अफगानिस्तान को फारस की खाड़ी तक जाने का वैकल्पिक मार्ग दिलवा दिया है। पाकिस्तान पर उसकी निर्भरता को ऐच्छिक बना दिया है। यह ठीक है कि हामिद करजई और अशरफ गनी सरकारों के साथ भारत के संबंध घनिष्ट रहे लेकिन वे खुद तालिबान के साथ खुलकर बात करती रहीं तो भारत सरकार को किसने रोका था घ् कहीं ऐसा तो नहीं कि हमारी सरकार अमेरिका के भरोसे रह गई।

तालिबान को हम अछूत मानते रहेए क्योंकि वे पाकिस्तान के हमजोली रहे हैं लेकिन हम क्यों भूलते हैं कि तालिबान भारत के दुश्मन नहीं हैं। दिसंबर 1999 में जब हमारे अपहृत जहाज को कंधार ले जाया गयाए तब उसे छुड़वाने में तालिबान के सर्वोच्च नेता मुल्ला उमर ने ही हमारी मदद की थी। प्रधानमंत्री अटलजी के कहने पर पीर गैलानी से मैं लंदन में मिलाए वाशिंगटन स्थित ष्तालिबानी राजदूतष् अब्दुल हकीम मुजाहिद और कंधार में मुल्ला उमर से मैंने सीधा संपर्क किया और हमारा जहाज मुक्त हो गया। अब भी तालिबान प्रवक्ता ने कहा है कि कश्मीर भारत का आंतरिक मामला है। उसने यह भी कहा है कि अफगानिस्तान में तीन बिलियन डॉलर का निर्माण.कार्य करने के लिए वह भारत की सराहना करता है। इसके अलावा तालिबान ने अभी तक जो घोषणाएं की हैंए उनसे ऐसा लगता है कि पिछले 25 साल में उन्होंने कई सबक सीखे हैं। वे पहले से अधिक परिपक्व और उदार हो गए हैं। अगर ऐसा नहीं होता तो क्या अभी तक करजई और अब्दुल्ला.जैसे नेताओं की जान को खतरा नहीं हो जाता घ् तालिबान ने अफगान महिलाओं से सरकार में हिस्सेदारी की अपील की है। उसने सर्वसमावेशी सरकार चलाने की घोषणा की है। अभी तक भयंकर खून.खराबे की कोई गंभीर खबर नहीं है। कोई आश्चर्य नहीं कि तालिबान काबुल में अब कोई मिली.जुली सरकार चलाने के लिए तैयार हो जाएं। जहां तक पाकिस्तान का सवाल हैए वह भी तालिबान की विजय से बाग.बाग है लेकिन वह डरा हुआ भी है। तालिबान नेता मुल्ला बिरादर पाकिस्तानी जेलों में आठ साल काट चुके हैं। तालिबान के भी कई खुदमुख्तार गुट हैं। उनमें से कुछ डूरेंड लाइन को अवैध मानते हैं और पठानों का राज पेशावर तक चाहते हैं। इस समय इस्लामाबाद में गैर.तालिबान नेताओं का एक दल काबुल में संयुक्त सरकार बनाने की कवायद भी कर रहा है। यदि इस मौके पर अमेरिका और चीनए जो एक.दूसरे के दुश्मन बने हुए हैंए उनके विदेश मंत्री भी एक.दूसरे से बात कर रहे हैं तो भारत अपनी दुम दबाए क्यों बैठा हुआ हैघ् भारत चाहे तो तालिबान से सीधा संवाद करके उन्हें लोकतांत्रिक मार्ग पर चलने के लिए भी प्रेरित कर सकता है।

अफगानिस्तान आतंकिस्तान बन गया पर दुनिया खामोश क्यों है?

अनुराग मिश्रा

अफगानिस्तान में तालिबान की हुकूमत आ चुकी है। भारत के बनाए संसद भवन में जनप्रतिनिधियों के बैठने वाली कुर्सियों पर हथियार लिए आतंकियों की तस्वीरें अफगानिस्तान के कल का खतरनाक पूर्वानुमान लगाने पर मजबूर कर रही हैं। पहले की तरह अमेरिका और उसके मित्र देश पल्ला झाड़कर पलायन कर चुके हैं। सोचने.समझने की क्षमता रखने वाला दुनिया का हर शख्स इस समय अफगानिस्तान के हालात पर चिंतित है। उसके मन में एक ही सवाल कौंध रहा है. ऐसा क्योंघ् क्या इसे रोका नहीं जा सकता थाघ् क्या लोकतांत्रिक सरकार को आतंकी हुकूमत के सामने घुटने टेकने से बचाया जा सकता थाघ् जवाब में उंगली अमेरिका की तरफ उठती है। उसे जब सूट किया तो उसने अफगानिस्तान में आक्रमण कर सत्ता को कठपुतली की तरह नचाया और जब खर्चे उद्देश्यों पर भारी पड़ने लगे और अपना काम निपट गया तो देश को मझधार में छोड़कर उसके जहाज उड़ चले। वैसेए अमेरिका अपनी सफाई में भ्रष्टाचार और अन्य कारणों को अफगानिस्तान के मौजूदा हालात के लिए जिम्मेदार बता रहा है।खैर अगर अमेरिका नहीं तो और कौनघ् कैसे एक पूरा देश अफगानिस्तान से ष्आतंकिस्तानष् की राह पर चला गयाघ् ऑस्ट्रेलिया से लेकर जापानए चीनए फ्रांसए यूके होते हुए कनाडा तक का मैप देख डालिए। फिर नजरें अमेरिका पर ही टिकेंगी। जी हांए यहीं न्यूयॉर्क में खामोश खड़ा है संयुक्त राष्ट्र। अगर इसके बनने का उद्देश्य देखें तो तीसरा विश्व युद्ध होने से रोकना और अंतरराष्ट्रीय शांति कायम करना था। पर आज यह पंगु कैसे हो गया। वास्तव में यह पंगु तो उसी दिन हो गया था जब इसके पांच स्थायी सदस्य देशों को वीटो पावर मिल गया था। मतलब कहने को तो संयुक्त राष्ट्र है पर हकीकत में यह पांच देशों के स्वार्थों में पिस रहा है। संयुक्त राष्ट्र अपने पांच पहियों के कारण अकेले अस्तित्व में ही नहीं रह सकता है। पांचों पहिए जिधर चलेंगे संयुक्त राष्ट्र उधर चलेगा। अब ऐसा कम ही संभव होगा कि पांचों एक दिशा में चलेंए दुर्भाग्य से दुनिया के सबसे बड़े संगठन का हाल भी कुछ ऐसा ही है।रूसए अमेरिकाए चीनए फ्रांस और ब्रिटेन ये पांच देश तय करते हैं और संयुक्त राष्ट्र को वही करना पड़ता है। इन पांच में से चीन और रूस ने तो तालिबानी शासन के समर्थन की बात भी कहनी शुरू कर दी है तो भला ऐक्शन कौन करेगा। यही वजह है कि काबुल पर तालिबान के कब्जे के बाद जब संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक बुलाई गई और उसके बाद संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस का बयान आया तो वह सख्ती के संदेश की बजाय ष्अपीलष् ही रहा। यह हास्यास्पद है कि बंदूक के दम पर सत्ता हथियाने वालों से दुनिया के सबसे बड़े संगठन का मुखिया अपील कर रहा है। उन्होंने कहाए ष्मैं सभी पक्षों विशेष रूप से तालिबान से आग्रह करता हूं कि वह मानवीय जीवन की रक्षा के लिए संयम बरते3 मैं विश्व के सभी देशों से अफगानिस्तान से दूसरे देशों में जाने वाले शरणार्थियों को स्वीकार करने की अपील करता हूं। साफ है कि अफगानिस्तान से अमेरिका ही नहीं भागाए संयुक्त राष्ट्र भी अपनी जिम्मेदारियों से भाग खड़ा हुआ है। उसे पता है कि रूस और चीन की मंजूरी के बगैर वह सिर्फ आपात बैठक कर बयान ही जारी कर सकता है। सदस्य देशों की फंडिंग पर चलने वाला संयुक्त राष्ट्र वास्तव में कोई बड़ा मसला नहीं निपटा सकता। पांच पहिए एक दिशा में चलेंगेए यह दुर्लभ है। दूसरी तरफ काबुल पर कब्जे के बाद तालिबान ने पहली प्रेस कॉन्फ्रेंस में मायावी सब्जबाग भरपूर दिखाया। सबको माफ किया और महिलाओं को इस्लाम के आधार पर अधिकार देने की बात कह उसने अपनी छवि सुधारने की मंशा जाहिर कर दी है। यह उसकी कूटनीति है और इस लिहाज से वह दुनिया के ताकतवर मुल्कों से आगे निकल चुका है। ऐसा कर वह अफगानिस्तान के लोगों के दिलों में तालिबान हुकूमत को जायज ठहराकर दुनिया के देशों से मान्यता हासिल करना चाहता है। न चाहते हुए भी अब देशों को उसे स्वीकार करना होगा। तालिबान के प्रवक्ता ने कहा है कि वह सभी देशों के दूतावास की सुरक्षा करेगा और किसी भी देश को चिंतित होने की जरूरत नहीं है। तालिबान की यह बात खुद संयुक्त राष्ट्र को बौना बना दे रही है।दशकों से संयुक्त राष्ट्र की संरचना में सुधार की बात की जा रही है। पर अब आम लोग भी सोचने लगे हैं कि यह कर क्या सकता है। वैसेए संयुक्त राष्ट्र मानवीय मिशन कई देशों में चला रहा है जिससे लाखों जिंदगियों को भोजनए पानी और सुरक्षा मिल रही है पर उससे सख्त फैसले की उम्मीद फिलहाल करना बेमानी होगी।

जल योजना से बीजेपी का राजनीतिक कल्याण होगा

नरेन्द्र नाथ

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लाल किले से अपने भाषण में किसी बड़ी योजना का ऐलान नहीं किया। यह संकेत जरूर दिया कि वह 2024 के आम चुनाव में भी 2019 के विजय फॉर्म्युले को जारी रखेंगे। यानी वह अपनी सरकार की महत्वपूर्ण कल्याणकारी योजनाओं को अधिक से अधिक जरूरतमंदों तक पहुंचा कर लोगों के बीच वोट मांगने जाएंगे। इस बार भी पिछले साल की भांति ही प्रधानमंत्री मोदी ने लाल किले से जल संरक्षण और हर घर पेयजल आपूर्ति को अपना अहम अजेंडा बताया। उन्होंने यह संदेश भी दिया कि जो कल्याणकारी योजनाएं अभी चल रही हैंए उन्हीं पर फोकस बना रहेगा। पिछले दिनों ही पीएम मोदी ने गरीबों को मुफ्त गैस कनेक्शन देने की उज्ज्वला योजना के दूसरे चरण की शुरुआत की थी। मोदी की मंशा है कि 2024 तक वह कम से कम 20 करोड़ लोगों को ऐसा घर देंए जिसमें बिजली.पानी.शौचालय और गैस सिलेंडर की पहुंच हो और परिवार के कम से कम एक सदस्य के पास नौकरी हो। दरअसलए एनडीए सरकार को 2019 में प्रधानमंत्री आवास योजनाए शौचालय और उज्ज्वला जैसी योजनाओं का बड़ा लाभ मिला और गरीबों के बड़े तबके का वोट मिला। अब वह 2024 में अपनी पकड़ और मजबूत करना चाहते हैंए लेकिन आर्थिक संकट और कोविड ने इस बार इसे अमल में लाना मुश्किल बना दिया है। सरकार को पता है कि इन योजनाओं का सियासी लाभ तभी मिलता हैए जब आम जन तक इसका असर दिखे।

2019 में चुनाव जीतते ही प्रधानमंत्री ने जल संरक्षण और पेयजल आपूर्ति के लिए 3 लाख करोड़ से अधिक की योजना का ऐलान करके बता दिया था कि अगले चुनाव में कल्याणकारी कार्यक्रमों में हर घर पेयजल प्रतिनिधि कार्यक्रम बनेगा। केंद्र सरकार की नई योजना के तहत 2024 तक सभी घर तक पानी की पाइपलाइन और नल से पानी पहुंचाने का टारगेट रखा गया है। साथ ही संकेत दिया गया कि इस लक्ष्य को 2023 तक ही पूरा कर लिया जाएगा। इसके पीछे मंशा है कि 2023 तक सरकार के जरिए 20 करोड़ आदर्श घर बन जाएंए जिससे 2024 में होने वाले आम चुनाव में इसका लाभ उठाया जा सके। सरकार की इस योजना में कोरोना महामारी ने बाधाएं खड़ी कर दी हैं। दो दिन पहले आई इसकी प्रगति रिपोर्ट में उत्तर प्रदेश सहित कई बड़े राज्य लक्ष्य से काफी पीछे दिखे हैं। इसके अलावा प्रॉजेक्ट को पूरा करने के लिए फंड की उपलब्धता भी बड़ी चुनौती है। लेकिन रविवार को लाल किले से पीएम ने संकेत दिया कि वह अभी भी लक्ष्य को पाने के लिए पूरा दम लगाएंगे। जब मोदी ने 2019 में हर घर जल योजना शुरू की थीए तब लोगों के बीच इस योजना से जुड़ी जागरूकता फैलाने और पानी का संचय कैसे करेंगेए इसके लिए पचास हजार से अधिक गांवों में जलदूतों की तैनाती की बात भी हुई थी। ठीक उसी तरहए जिस तरह स्वच्छ भारत से जुड़े अभियान में सरकार ने स्वच्छ दूतों की नियुक्ति की थी। सरकार उन दूतों के माध्यम से हर घर तक पहुंचने की कोशिश करेगी। अब सभी राज्यों से उस लंबित योजना को भी पूरा करने के लिए कहा जा रहा है। जिस तरह हर घर शौचालय ने देश के गरीब तबकों के बीच अस्मिता के सवाल का जवाब दियाए उसी तरह हर घर पानी भी सामाजिक और सियासी रूप से सीधे लोगों के दिलों से जुड़ सकता है। एक रिपोर्ट के अनुसार देश में 20 करोड़ से अधिक लोग जल के लिए किसी दूसरे के स्रोत पर निर्भर हैं। घर में अपना नल होना अभी गरीबों के बीच एक स्टेटस सिंबल है। बिहारए उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में महज 5 फीसदी घरों में नल का कनेक्शन है। जाहिर है कि अगर इन बड़े राज्यों में मोदी सरकार इस योजना के क्रियान्वयन में सफल रहती है तो गरीबों के बीच अपनी पकड़ बनाए रखने में सफल होगी। 75 सालों में गरीब जिन बुनियादी सुविधाओं से वंचित रहेए मोदी सरकार उन्हें मुहैया कराने के लिए जोर लगाती रही है और उसे सामान्य विकास कार्यों से अधिक प्राथमिकता देती रही है। बैंक अकाउंट खोलने जैसे काम भी इसी पहल का हिस्सा थे। मोदी ने इन्हीं नीतियों की मदद से गरीबों के रूप में एक बड़ा वोट बैंक बनायाए जिसमें जातियों की भी दीवार टूटी है।

लेकिन तय समय पर हर घर जल के लक्ष्य को पूरा करना आसान नहीं है। कोविड के चलते इस योजना में पहले ही देर हो चुकी है और देश में जल संकट को देखते हुए इसे पूरा करने की राह कठिन होगी। मौजूदा आंकड़ों के अनुसार अभी लगभग 25 फीसदी की दर से सभी घरों तक पानी का कनेक्शन पहुंच रहा है। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार देश में 60 करोड़ से अधिक लोग भयंकर जल संकट का सामना कर रहे हैं। अगले दस सालों में पानी की मांग दो गुना बढ़ने का अनुमान भी इसी रिपोर्ट में किया गया हैए जबकि इसके लिए मौजूद स्रोत में 5 फीसदी की कमी आ जाएगी। पूरे देश में जल स्तर जिस तेजी से नीचे जा रहा हैए उसका कोई लेखा.जोखा इस योजना में नहीं है। ऐसे में जानकारों के अनुसारए नल लगाना तो आसान हैए लेकिन निर्बाध जल सप्लाई आसान नहीं होगी। इस पर सरकार की सोच है कि अगर योजना आंशिक रूप से भी सफल रही तो इसका बड़ा लाभ मिलेगा। साथ ही नई योजना के रूप में सरकार के सामने सबसे महत्वाकांक्षी योजना भी सिर्फ यही है। उसे पता है कि पुरानी योजनाओं का लाभ एक चुनाव में मिल गयाए दूसरी बार भी मिलेगा इसमें संदेह है।

परिष्कृत और सुखी वातावरणः आज की आवश्यकता

डॉ. सुधा कुमारी

बहुत प्राचीन समय से हमारा समाज स्वच्छता और परिष्कृत वातावरण का समर्थक और पोषक रहा है । तन की स्वच्छता और स्वास्थ्य को तन के परिष्कार एवं व्यायाम द्वाराए मन की स्वच्छता और स्वास्थ्य को योग.अभ्यास एव अनुशासन द्वाराए वातावरण की स्वच्छता को हरियाली और नदी. नालों. नलियों की सफाई द्वारा. इस प्रकारए एक परिष्कृत समाज के निर्माण का संकल्प किया गया । हड़प्पा संस्कृति भारतीय स्वच्छ नगर. सभ्यता की एक सुन्दर मिसाल थी । प्रकृति और मनुष्य के बीच संतुलन के लिये भी आवश्यक है कि सफाई तन.मन और जीवन के साथ. साथ वातावरण की भी हो । हरियाली जीवन मेंए वातावरण में और हर जगह हो । इसका एक कारण यह है कि व्यायामए योग .ध्यानए पूजादृ सब कुछ एक साफ वातावरण में संभव है । किन्तु औद्योगिक क्रिया.कलापए बढ़ती जनसंख्या और उसकी बढ़ती आवश्यकताओं के कारण क्रिया.कलापों के बढ़ने से वातावरण की स्वच्छता घटी है और जल.प्रदूषणए वायु.प्रदूषण और जमीन पर गन्दगी बढ़ी है । बढती जनसंख्या का एक परिणाम है. अशिक्षा और निर्धनता जिसने झुग्गी. झोंपड़ी और चौराहे. गलियों में गन्दगी का अम्बार लगा दिया है । हवा और जल के प्रदूषण के कारण ष्ग्रीन हाउसष् गैस. उत्सर्जन बढ़ा है और ष्कार्बन फुटप्रिंटष् समग्र वातावरण के 60ः तक हो गया है। संपूर्ण मनुष्य जाति का ष्कार्बन फुटप्रिंटष् 1961 से 11 गुना बढ़ गया है। इससे ष्ग्लोबल वार्मिंगष् और ष्क्लाइमेट चेंजष् का खतरा बढ़ा है । इससे भविष्य में मानव प्रजाति के अस्तित्व को संकट हो सकता है। यह एक बड़ी चुनौती है। 1995 से ही इस चुनौती का सामना करने के लिए संयुक्त राष्ट्र.संघ ने ष्क्लाइमेट चेंज कॉन्फरेंसष् द्वारा प्रदुषण एवं कार्बन फुटप्रिंट कम करने का प्रयास किया है । प्रतिवर्ष यह कॉन्फरेंस आयोजित होता है । 1997 में क्योटोए जापान में कार्बन उत्सर्जन ;एमिसनद्ध करने के नियम तय किये गए । क्योटो प्रोटोकोल के मुताबिक जो देश निर्धारित सीमा से कम कार्बन.उत्सर्जन करेंगे उन्हें ष्कार्बन क्रेडिटष् मिलेगा । इसके बाद से संयुक्त सहमति एवं प्रयास से सफाईए स्वच्छताए कचरे का निस्तारण योजनाएँ और ग्रीन टेकनेलॉजी को अपनाना सभी व्यक्तियों की जिम्मेदारी बनाई गई है जिसमें सरकार को सक्रिय भूमिका निभानी है । क्योटो प्रोटोकोल को सभी देशों ने स्वीकार किया है और उन्होंने 1990 के कार्बन स्तर को करीब 7ः कम करने का लक्ष्य तय किया । कार्बन क्रेडिट के साथ ही कार्बन. ट्रेडिंग की भी व्यवस्था बनाई गई है। ष्एमिशन ट्रेडिंगष् या ष्कैप एन्ड ट्रेडष् सरकार द्वारा निर्धारित बाजार की व्यवस्था है । प्रदूषण कम करने के बाद आर्थिक प्रोत्साहन की धारणा है । अंतर्राष्ट्रीय ष्ट्रेडिंग सिस्टमष् में जिन देशों ने कार्बन क्रेडिट पाया है वे अन्य देशों से इसका विनिमय कर सकते हैं। ष्कार्बन ऑफसेट रिन्यूएबल एनर्जी क्रेडिट वाटर रेस्टोरेशन सर्टिफिकेट कुछ ऐसे ही प्रचलित नाम हैं। कार्बन क्रेडिट जहाँ एक सकारात्मक प्रभाव रखता है वहीँ ष्कार्बन टैक्सष् एक नकारात्मक उपाय है। यूरोप में कई देशों ने यह टैक्स लगा रखा है जिसके द्वारा निर्धारित सीमा से अधिक कार्बन गैस उत्सर्जन करनेवालों पर यह टैक्स लगाया जाता है। इस प्रणाली को अर्थशास्त्री ष्कार्बन प्राइसिंगष् के नाम से भी जानते हैं और समर्थन करते हैं । भारत की वर्तमान स्थिति में प्रदूषण का स्तर बहुत अधिक है। जहरीली गैसों का उत्सर्जनए तेज शोर.शराबाए दीवारों और सार्वजनिक वाहनों में लिखावट और गंदगीए पानी तथा जमीन पर कचरा और सड़कों पर गन्दगी और टहलते हुए जानवरए जो काट भी सकते हैं । कचरे का डिब्बा होते हुए भी बाहर कचरा फेंकनाए इधर. उधर थूकना और पान. तंबाकू के दाग छोड़ना आम दिनचर्या का अंग है । दफ्तरों में फालतू कागजएटूटे.फूटे फर्नीचरों का ढेर और गंदी दीवारें एक सामान्य दृश्य हैं। भारत में कचरे के अंबार और लोगों में गंदगी के प्रति उदासीन दृष्टिकोण को देखते हुए कचरा फैलानेवाले व्यक्तियोंए दुकानों और अन्य सार्वजानिक स्थानों पर जुरमाना या कार्बन टैक्स या अन्य कोई आर्थिक व्यवस्था की नितान्त आवश्यकता है। सिर्फ नारेबाजीए पोस्टरों और बड़े.बड़े लोगों का झाड़ू सहित फोटो खिचवाने से यह समस्या नहीं सुलझेगी । जब गंदगी फैलाने पर ही जुर्माना लग जाएगा तो लोगों को अपना काम छोड़कर सड़क पर झाड़ू उठाने की नौबत ही नहीं आएगी । आखिर झाड़ू लगाने के लिये इतने सफाई.कर्मियों की भर्ती क्यों हुई है घ् वे अपने कार्य में मुस्तैद क्यों नहीं है घ् यदि उनकी संख्या कम है और लोगों की भर्ती क्यों नहीं की गई। अतः कचरा फैलाने वाले पर जुर्माना लगाना और सफाई. कर्मियों से कार्य अच्छी तरह करवाना आवश्यक है । उन्हें दस्तानेए टोपीए मास्क और एप्रन भी मिलना चाहिये ताकि उन्हें गंदगीए धूप और धूल से सुरक्षा मिले। गंदगी साफ करते हुए कहीं वे स्वयं बीमारी ग्रस्त न हो जायँ । वृक्षारोपण बढ़ाने के साथ.साथ भारत में कचरे पर सख्त जुर्मानाए कार्बन. टैक्स लगानाए कचरा. निस्तारण तथा उनका परिष्कार करके ष्रि.साइकलष् करनाए कम लागत से कंपोस्ट और सूखे शौचालय बनानाए दीवारों और वाहनों पर से गंदगी हटानाए बेकार जानवरों को रास्ते से हटाना बहुत आवश्यक है । अच्छी बात है कि कुछ महानगरों में कचरे का परिष्कार और निस्तार तेज गति से हो रहा है । कलकत्ताए मुंबईए दिल्ली और बेंगलुरू में यह कार्य बढ़ा है । किन्तु पूरे देश में अभी काफी प्रयास करने कि एवं सख्ती की आवश्यकता है । ओसलो ;नॉर्वे द्ध शहर के अधिकांश भाग स्वचालित कचरा निराकरण से जुड़े हैं जो ष्अंडरग्राउंड इनसिनरेटरष् में कचरे को जला देता है । वहाँ स्वच्छता दिवसों का भी आयोजन होता है। सिंगापुर ने कड़े नियमों से स्वच्छता को बनाए रखा है। अल्बर्टा ;कनाडाद्ध और कोपेनहेगन ;डेनमार्कद्ध में कचरे से कम्पोस्ट बनानाए ष्रि.साइकलष् करनाए गंदगीपरकड़ा जुर्मानाआदिउपायकियेगएहै ।एडिलेड ;ऑस्ट्रेलियाद्ध में विशाल क्षेत्रों में हरियाली और पार्क की व्यवस्था है । जापान में लोग स्वच्छता का बहुत ध्यान रखते हैं । वेंडिंग मशीन का इस्तेमाल कर वहाँ खाना. पीना करने के बाद डस्टबिन में कचरा फेंकते हैं। जापान न केवल बुलेट ट्रेन के लिये विख्यात है बल्कि अति स्वच्छ वातावरण के लिये भी । अमेरिका में कचरे पर 100 डॉलर से लेकर 1000 डॉलर तक का जुर्माना है । इसके राज्यों में ष्बोतल बिलष् नामक कानून के अंतर्गत उपभोक्ताओं को बोतल.डब्बे वापस करने पर रिफंड मिलता है । इन खाली डब्बों का निस्तारण विक्रेता की जिम्मेदारी है । भारत में इन उपायों को अपनाना अमेरिका में कचरे पर 100 डॉलर से लेकर 1000 डॉलर तक का जुर्माना है । इसके राज्यों में ष्बोतल बिलष् नामक कानून के अंतर्गत उपभोक्ताओं को बोतल.डब्बे वापस करने पर रिफंड मिलता है । इन खाली डब्बों का निस्तारण विक्रेता की जिम्मेदारी है । भारत में इन उपायों को अपनाना है अमेरिका में कचरे पर 100 डॉलर से लेकर 1000 डॉलर तक का जुर्माना है । इसके राज्यों में ष्बोतल बिलष् नामक कानून के अंतर्गत उपभोक्ताओं को बोतल.डब्बे वापस करने पर रिफंड मिलता है । इन खाली डब्बों का निस्तारण विक्रेता की जिम्मेदारी है। भारत में इन उपायों को अपनाना है अमेरिका में कचरे पर 100 डॉलर से लेकर 1000 डॉलर तक का जुर्माना है ।

गौतम गंभीर ने बताया, टी-20 वर्ल्ड कप में कौन सी टीम कर सकती है बड़ा उलटफेर

नई दिल्ली (एजेंसी)। टी-20 वर्ल्ड कप शुरू होने में अब दो महीने से भी कम का समय बचा है। दुनियाभर की टीमों ने इसके लिए अपनी कमर कस ली है। दुनियाभर के क्रिकेट बोर्ड ने आगामी वर्ल्ड कप के लिए अपनी-अपनी टीमों की घोषणा कर रहे हैं। इसी बीच भारत के पूर्व बल्लेबाज गौतम गंभीर ने सभी टीमों को अफगानिस्तान से सावधान रहने की सलाह दी है। उन्होंने कहा है कि राशिद खान की अगुआई वाली टीम को कोई भी हल्के में ना ले। उन्होंने कहा कि मोहम्मद नबी, मुजीब उर रहमान और कप्तान राशिद खान जैसे खिलाड़ियों ने दुनिया भर की टी-20 लीग में अच्छा प्रदर्शन किया है। स्टार स्पोर्ट्स के कार्यक्रम 'गेम प्लान' में इस पूर्व सलामी बल्लेबाज ने कहा, 'आप अफगानिस्तान को हल्के में नहीं ले

सकते। मेरा हमेशा से मानना रहा है कि अगर आप किसी एक टीम के बारे में बात करना चाहते हैं जो इस टूर्नामेंट में वास्तविक अंडरडॉग होगी, तो वह अफगानिस्तान होनी चाहिए। इसके अलावा, उनके पास राशिद खान, मोहम्मद नबी जैसे खिलाड़ी हैं, आप उन्हें हल्के में नहीं ले सकते।' गंभीर ने आगे कहा, 'हां टी-20 फॉर्मेट में कोई भी किसी को भी हरा सकता है क्योंकि यह बहुत ही इंडीविजुअल फॉर्मेट है और हमें किसी को भी हल्के में नहीं लेना चाहिए।

उदाहरण के लिए आपको अफगानिस्तान को हल्के में नहीं लेना चाहिए। राशिद खान जैसे खिलाड़ी परेशान कर सकते हैं।' वर्ल्ड कप में टीमों को दो ग्रुप में बांटा गया है। गौतम ने ग्रुप 1 के मैचों को लेकर काफी उत्साहित हैं। उन्होंने कहा, 'ग्रुप 1, 'ग्रुप ऑफ डेथ' है, और यही ग्रुप वास्तव में ग्रुप है। आपके पास चार टीमें हैं और टी-20 वर्ल्ड कप के पहले दिन वे खेल रहे हैं, तो शनिवार काफी रोमांचक होने वाला है। वेस्टइंडीज हमेशा से अप्रत्याशित टीम रही है। क्योंकि उनके पास जिस तरह की मारक क्षमता है, वे तीसरी बार भी वर्ल्ड कप जीत सकते हैं। इंग्लैंड के पास भी मारक क्षमता है। 50 ओवरों का वर्ल्ड कप जीतने के बाद शायद उन्हें पिछले कुछ वर्षों में सीमित ओवरों वालों सबसे अच्छी टीम है।' टी-20 वर्ल्ड कप 18 अक्टूबर से शुरू होगा।

यॉर्कशायर ने अजीम रफीक से नस्लवाद के आरोपों की जांच के बाद माफी मांगी

नई दिल्ली (एजेंसी)। यॉर्कशायर काउंटी क्रिकेट बोर्ड द्वारा नियुक्त उप-समिति ने निष्कर्ष निकाला है कि यॉर्कशायर के पूर्व खिलाड़ी अजीम रफीक अनुचित व्यवहार के शिकार हुए थे। यॉर्कशायर काउंटी क्रिकेट क्लब ने गुरुवार को पूर्व स्पिनर अजीम रफीक से इसके लिए माफी मांगी। रफीक ने दिसंबर 2020 में नस्ल के आधार पर सीधे भेदभाव और उत्पीड़न का सामना करने का दावा करते हुए एक कानूनी शिकायत दर्ज की थी। 30 साल के रफीक ने कहा था कि क्लब के रवैये की वजह से उन्हें गंभीर मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का सामना करना पड़ा था। उन्होंने कहा था कि वो इस वजह से डिप्रेशन में चले गए थे और वह आत्महत्या करने के बारे में भी सोचने लगे थे।

20 सितंबर से शुरू होगा भारत का घरेलू क्रिकेट सीजन

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने अगले साल की शुरुआत में रणजी ट्रॉफी कराने का फैसला लिया है। बीसीसीआई का महिला अंडर-19 वनडे और वीनू मांकड़ ट्रॉफी (पुरुषों की अंडर-19) टूर्नामेंट के साथ नए घरेलू सीजन शुरू करने का इरादा है।

दोनों टूर्नामेंट पिछले साल कोरोना महामारी के कारण आयोजित नहीं किए जा सके थे। इस साल ये टूर्नामेंट 29 दिन में कराए जाएंगे। इनका आयोजन अगले महीने 20 सितंबर से लेकर 19 अक्टूबर तक होगा। कोरोना महामारी के कारण पिछले साल रणजी ट्रॉफी भी आयोजित नहीं की गई थी। रणजी ट्रॉफी अगले साल 5 जनवरी से 20 मार्च तक खेली जाएगी। क्रिकबज की रिपोर्ट के अनुसार बीसीसीआई भारत सरकार, राज्य नियामक प्राधिकरणों और अन्य संबंधित हितधारकों के साथ मिलकर काम कर रहा है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि घरेलू टूर्नामेंट आयोजित करने का उद्देश्य हासिल किया जा सके।क्रिकबज की रिपोर्ट के अनुसार उसके पास बीसीसीआई सचिव जय शाह का राज्य इकाइयों का लिखा पत्र है, जिसमें बीसीसीआई सचिव ने कहा कि महामारी हम सभी के लिए कठिन रही है। हम सभी को कुछ कठोर निणय्य लेने पड़े हैं, जिसकी वजह से भारत में एक पूर्ण घरेलू सत्र को रोकना पड़ा।

पीसीबी को भरोसा, तय समय पर अफगानिस्तान के साथ खेली जाएगी वनडे सीरीज

नई दिल्ली (एजेंसी)। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) को पूरा भरोसा है कि अफगानिस्तान में राजनीतिक उथल पुथल का उनकी वनडे सीरीज पर असर नहीं पड़ेगा बल्कि तालिबान ने निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार राष्ट्रीय टीम को श्रीलंका में खेलने के लिए हरी झंडी दे दी है। पीसीबी में एक विश्वस्त सूत्र ने कहा कि उन्हें अफगानिस्तान क्रिकेट बोर्ड से सीरीज को लेकर पॉजिटिव संकेत मिले। उन्होंने कहा, 'यह सीरीज बरकरार लगती है क्योंकि तालिबान अधिकारियों ने सीरीज को हरी झंडी दे दी है। हम अपनी योजना के अनुसार चल रहे है और वेस्टइंडीज के खिलाफ 24 अगस्त को दूसरा टेस्ट खत्म होने के बाद हम अपनी टीम की घोषणा करेंगे।' अफगानिस्तान के खिलाड़ियों ने काबुल में ट्रेनिंग करना शुरू कर दिया है जबकि पीसीबी ने सीरीजके लिये 21 से 28 अगस्त तक लाहौर में एक ट्रेनिंग शिविर की घोषणा की। पाकिस्तानी टीम 29 अगस्त को श्रीलंका रवाना होगी। माना जा रहा है कि अफगानिस्तान में सत्ता बदलने के बाद तालिबान के लिए सीरीज को जारी रखकर अंतरराष्ट्रीय समुदाय में अपनी छवि को नरम दिखाने से बेहतर तरीका कुछ नहीं हो सकता था। एक एक्सपर्ट के अनुसार, 'वे यह सीरीज जारी रखेंगे क्योंकि इससे उन्हें पश्चिमी देशों को यह दिखाने का अच्छा मौका मिलेगा कि वे अफगानिस्तान पर शासन करने वाली अपनी पिछली सत्ता से अलग हैं।

'कुछ ही पलों में पूरी जिंदगी आंखों के सामने घूम गई', भारत के लिए डेब्यू करने पर बोले चेतन सकारिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईपीएल 2021 में अपने शानदार प्रदर्शन के दम पर टीम इंडिया में जगह बनाने वाले युवा तेज गेंदबाज चेतन सकारिया ने भारत के लिए अपने डेब्यू को बेहद खास बताया है। उन्होंने कहा कि जिस पल वह गेंदबाजी के लिए रनअप लेने जा रहे थे उस समय पर उनकी पूरी जिंदगी मानो आंखों के सामने घूम रही थी। सकारिया ने भारतीय टीम में चुने जाने से पहले अपने पिता को कोरोना से संक्रमित होने के बाद खो दिया था। वहीं, आईपीएल कॉन्ट्रैक्ट मिलने से पहले चेतन के भाई ने आत्महत्या कर ली थी। चेतन ने अपने डेब्यू मैच के बारे में बात करते हुए कहा, 'जब मैं पहली गेंद डालने की तैयारी कर रहा था तो रन अप लेने से पहले मेरे पास कुछ पल थे। उस क्षण मेरे जीवन में घटी हर घटना फ्लैशबैक में चल रही थी। अच्छी, बुरी, कुर्बानियां , सहयोग, आलोचना। सब कुछ। उन्होंने राजस्थान रॉयल्स द्वारा जारी एक वीडियो में कहा , 'यह जज्बाती पल था लेकिन मुझे इससे अच्छा प्रदर्शन करने की काफी प्रेरणा

मिली।' आईपीएल नीलामी में रॉयल्स द्वारा एक करोड़ 20 लाख रूपये में खरीदे गए सकारिया ने सीजन बीच में स्थगित होने से पहले सात मैचों में सात विकेट लिए थे। उन्होंने कहा, 'भारत के लिए खेलना सपना सच होने जैसा था। जब मैंने सबसे पहले इसके बारे में सुना तो कई विचार मेरे दिमाग में चल रहे थे। मुझे विश्वास ही नहीं हुआ । मैंने खुद को चिकोटी काटी कि क्या यह सही है । मैंने खेलने के बारे में नहीं सोचा था । मेरे लिए तो ड्रेसिंग रूम में रहना ही बहुत बड़ी बात थी।'

श्रीलंका दौरे पर भारत के कोच रहे राहुल द्रविड़ से पहली बातचीत के बारे में सकारिया ने कहा , 'मैं सरप्राइज था और मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि यह वही हैं। उन्होंने मुझे मेरे परिवार, अनुभव के बारे में और सौराष्ट्र क्रिकेट के बारे में पूछा । उन्होंने बताया कि आईपीएल में उन्होंने मेरा प्रदर्शन देखा और उन्हें पसंद आया। मुझे बहुत अच्छा लगा कि उनके जैसा लीजेंड मुझे जानता है।' श्रीलंका दौरे पर मैं भी चेतन ने अपनी गेंदबाजी के प्रभावित किया था।

20 अगस्त तक सभी आईपीएल फ्रेंचाइजी को जमा करनी होगी टीम की लिस्ट, बीसीसीआई ने जारी किया आदेश

नई दिल्ली (एजेंसी)। अब से ठीक एक महीने बाद आईपीएल 2021 का दूसरा चरण यूएई में खेला जाएगा। लेकिन इसके शुरू होने से पहले कई आईपीएल टीमें अपने खिलाड़ियों को लेकर चिंतित हैं। आईपीएल के दौरान इंटरनेशनल मैचों की व्यस्तता के कारण ऐसी स्थिति आ गई है। अब बोर्ड ऑफ कंट्रोल फॉर क्रिकेट इन इंडिया (बीसीसीआई) ने कथित तौर पर फ्रेंचाइजी के लिए टीम की लिस्ट जमा करने की समय सीमा 20 अगस्त निर्धारित की है, जिससे उन्हें परेशानी हो रही है। इससे पहले इंग्लैंड एंड वेल्स क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी)

और क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया ने आईपीएल के दूसरे चरण में खेलने के लिए अपने खिलाड़ियों को मंजूरी दे दी है, लेकिन अंतिम निणय्य अभी भी खिलाड़ियों को ही लेना है। न्यूज वेबसाइट 'इनसाइड स्पोर्ट' को एक फ्रेंचाइजी के अधिकारी ने कहा, 'हमें 20 अगस्त तक टीम भेजनी है लेकिन मैं पुष्टि नहीं कर सकता कि सभी विदेशी खिलाड़ी उपलब्ध होंगे या नहीं। हम अभी भी कुछ खिलाड़ियों से बातचीत कर रहे है। अच्छी बात ये है कि टी-20 वर्ल्ड कप यूएई में होगा और इससे हमें विश्वास है कि सभी खिलाड़ी उपलब्ध होंगे लेकिन हम अभी भी कुछ खिलाड़ियों के कन्फर्म होने का इंतजार कर रहे है।' एक और फ्रेंचाइजी ने कहा, 'हां, आधिकारिक तौर पर जवाब देने में बीसीसीआई की देरी ने अंतिम समय में थोड़ी परेशानी हुई। हम खबरों में खिलाड़ियों की उपलब्धता के बारे में सुनते रहे लेकिन बीसीसीआई ने आधिकारिक तौर पर अगस्त में ही इसकी पुष्टि की। इसीलिए हमारे लिए 20 अगस्त की डेडलाइन थोड़ी जल्दी है। लेकिन अगर यही नियम है, तो हम इसका पालन करेंगे।

कैसे इंग्लिश कप्तान जो रूट के बल्ले पर लगाम लगा सकते हैं कप्तान विराट कोहली, मोंटी पनेसर ने बताया प्लान

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और इंग्लैंड के बीच जारी पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में भले ही टीम इंडिया इंग्लिश टीम को उनकी ही सरजमीं पर अबतक हावी नजर आई हो, लेकिन भारतीय गेंदबाज और कप्तान विराट कोहली जो रूट के बल्ले पर लगाम लगाने में नाकाम रहे हैं। रूट ने ट्रेंट ब्रिज टेस्ट की पहली पारी में अर्धशतक तो दूसरी में शतक जड़ा था। वहीं, दूसरे टेस्ट की पहली इनिंग में तो टीम इंडिया के चारों तेज गेंदबाज मिलकर भी इंग्लिश कप्तान को आउट नहीं कर सके थे। ऐसे में तीसरे टेस्ट में विराट एंड कंपनी को रूट से निपटने के लिए खास रणनीति तैयार करनी होगी। इंग्लैंड के पूर्व स्पिनर मोंटी पनेसर ने बताया है कि कैसे टीम इंडिया रूट को सस्ते में पवेलियन भेज सकती है।

एक बातचीत के दौरान सिराज ने कहा, 'उनको आउट करने का तरीका है कि उन्हें पांचवें स्टंप की

लाइन और ऑफ स्टंप पर गेंदबाजी की जाए। उनकी विकेट को विराट ने प्लान किया था और बुमराह ने उस पर शानदार तरीके से अमल किया था। विराट को फिर से रूट के खिलाफ प्लान बनाना होगा। रूट पुल शॉट बहुत अच्छे ढंग से खेलते हैं तो उनको शॉर्ट गेंदबाजी करने की भूल ना करें। रूट के क्रीज पर आने के साथ ही विराट को गेंद बुमराह को थमा देनी चाहिए। बुमराह और सिराज दोनों के पास काबिलियत है कि वह पहली ही गेंद से बल्लेबाज पर प्रेशर बना सकें। यही उन्होंने दूसरी पारी में रूट के साथ किया और कप्तान ने अपना विकेट गंवा दिया। पनेसर ने आगे कहा, 'आपको रूट को परेशान करना होगा और उनको मजबूर करना होगा कि वह अपनी पोजीशन बदले। उनके एक बहाव में बल्लेबाजी करना पसंद है। अगर वह फ्लो नहीं बनेगा और तो वह अपनी पोजीशन और गेम प्लान चेंज करेंगे।

डिफेंडिंग चैंपियन डोमिनिक थीम इंजरी की वजह से यूएस ओपन में नहीं लेंगे हिस्सा

नई दिल्ली (एजेंसी)। डिफेंडिंग चैंपियन डोमिनिक थीम यूएस ओपन 2021 में हिस्सा नहीं लेंगे। उन्होंने बुधवार को सोशल मीडिया में इसका ऐलान किया। उन्होंने कहा कि जून में आई कलाई की चोट से पर्याप्त रूप से उबरने में विफल रहने के बाद उन्होंने इस महीने होने वाले यूएस ओपन से हटने का निणय्य लिया। उन्होंने इसे कठिन फैसला बताया। 27 साल के ऑस्ट्रिया के डोमिनिक थीम ने बताया कि पिछले हफ्ते नए सिरे से दर्द महसूस करने से पहले वो अच्छी तरह से इस चोट से रिकवरी कर रहे थे। उन्होंने कहा कि ये कठिन फैसला रहा है लेकिन मुझे पता है कि मुझे यही करना है। डोमिनिक थीम ने पिछले साल खेले गए यूएस 2020 के फाइनल में दो

सेट हारन के बाद शानदार वापसी की थी। उन्होंने ज्वेरेव को पांच सेटों तक चले मुकाबले मेंहराया। यह मुकाबला 4 घंटे 2 मिनट तक चला था। डोमिनिक थीम ने ट्वीट कर कहा कि मैं मैं वास्तव में निराश हूं कि मैं न्यूयॉर्क में खिताब का बचाव करने में सक्षम नहीं हूं, लेकिन मैं कलाई की चोट से उबर नहीं पाया हूं जो मुझे जून में मलोर्का ओपन में आई थी। गौरतलब है कि रविवार को रविवार को एक और पूर्व चैंपियन रोजर फेडरर भी यूएस ओपन से हट गए। 40 साल के फेडरर ने कहा कि उन्हें आगे घुटने की सर्जरी की जरूरत है और उन्होंने स्वीकार किया कि वह कई महीनों तक बाहर रहेंगे।

भारत ने 4×400 मीटर मिक्स्ड रिले रेस में जीता ब्रॉन्ज मेडल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की चार गुणा 400 मीटर मिक्सड रिले टीम ने बुधवार को नैरोबी में अंडर-20 वर्ल्ड एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में ब्रॉन्ज मेडल जीता। यह अंडर-20 वर्ल्ड एथलेटिक्स चैम्पियनशिप के इतिहास में भारत का पांचवां मेडल है। भारतीय टीम में भरत एस, प्रिया मोहन, सम्मी और कपिल शामिल थे।भारतीय टीम चैम्पियनशिप के फाइनल में 3:23.60 सेकेंड के समय से तीसरे स्थान पर रही। नाइजीरिया ने 3:19.70 सेकेंड के समय से गोल्ड और पोलैंड ने 3:19.80 सेकेंड के समय से सिल्वर मेडल जीता। भारत ने सुबह चैम्पियनशिप की हीट में 3:23.36 सेकेंड के रिकार्ड समय से ओवरआल दूसरी सर्वश्रेष्ठ टीम के तौर पर फाइनल में प्रवेश किया था। यह रिकॉर्ड हालांकि ज्यादा देर भारत के नाम नहीं रहा और नाइजीरिया ने दूसरी हीट में 3 : 21 . 66 के टाइमिंग के साथ इसे तोड़ दिया।

इस तरह चार गुणा 400 मीटर मिक्सड रिले टीम के ब्रॉन्ज से पहले अंडर-20 विश्व चैम्पियनशिप में भारत के लिये सीमा अंतिल (चक्का फेंक में कांस्य, 2002), नवजीत कौर ढिल्लों (चक्का फेंक में कांस्य, 2014), ओलंपिक चैम्पियन नीरज चोपड़ा (भालाफेंक में स्वर्ण, 2016), हीमा दास (400 मीटर में स्वर्ण, 2018) ने पदक जीते हैं।

एटीके मोहन बागान ने एएफसी कप ग्रुप मैच में बेंगलुरू एफसी को 2-0 से हराया

नई दिल्ली (एजेंसी)। एटीके मोहन बागान ने एएफसी कप फुटबॉल टूर्नामेंट में अपने अभियान की शुरुआत जीत के साथ करते हुए बुधवार को ग्रुप डी मैच में एक अन्य भारतीय क्लब बेंगलुरू एफसी को 2-0 से हराया। एटीके मोहन बागान की ओर से कप्तान रॉय कृष्णा ने 39वें मिनट में पहला गोल दागा जबकि सुभाशीष ने 46वें मिनट में स्कोर 2-0 कर दिया जो निर्णायक साबित हुआ।एटीके मोहन बागान ने इस तरह महाद्वीप की दूसरी टीयर की क्लब प्रतियोगिता में जीत के साथ शुरुआत की। बेंगलुरू की टीम ने गेंद को अधिक समय तक अपने कब्जे में रखा लेकिन गोल करने में नाकमा रही। एटीके ने गोल की तरफ पांच शॉट मारे जिसमें से दो को टीम गोल में बदलने में सफल रही। बेंगलुरू एफसी ने गोल की तरफ तीन शॉट मारे लेकिन टीम एक भी गोल नहीं कर सकी। इस हार का मतलब है कि सुनील छेत्री की अगुआई वाली बेंगलुरू एफसी की टीम इंडियन सुपर लीग 2019 सत्र से एटीके मोहन बागान को हराने में नाकाम रही है। छेत्री भी मैच में छाप छोड़ने में नाकाम रहे और 68वें मिनट में उनकी जगह लियोन अगस्टीन को मैदान पर उतारा गया। पूर्ववर्ती मोहन बागान के 2019-20 आईलीग खिताब जीतने के कारण एटीके मोहन बागान को इस प्रतियोगिता में जगह मिली है। टीम शनिवार को अपने दूसरे ग्रुप मैच में मालदीव के माजिया स्पोर्ट्स एंड रीक्रिएशन से भिड़ेगी।

'डिलीट कर दो तस्वीरें, जला दो जर्सी', अफगानिस्तान में महिला फुटबॉल टीम की खिलाड़ियों से बोलीं पूर्व कप्तान

काबुल (एजेंसी)। अफगानिस्तान में तालिबान के कब्जे से सबसे अधिक चिंता और डर महिलाओं को है। 1996 से 2001 के बीच तालिबान राज की क्रूरता झेल चुकीं अफगानी महिलाएं जानती हैं कि आने वाले दिन उनके फिर से उतने ही खौफनाक होने जा रहे हैं। यही वजह है कि अफगानिस्तान की महिला फुटबॉल टीम की पूर्व कप्तान ने खिलाड़ियों से कहा है कि वे अपनी जान बचाने के लिए सोशल मीडिया से तस्वीरें डिलीट कर दें और अपने किट्स को जला दें। कोपहेगेन में मौजूद खालिदा पोपल ने रॉयटर्स को बुधवार को वीडियो इंटरव्यू में कहा कि आतंकियों ने अपने पुराने शासन

में महिलाओं की हत्या की, उनके साथ रेप किया और पत्थर मारे, इसलिए महिला फुटबॉलर्स भविष्य को लेकर डरी हुई हैं। अफगान महिला फुटबॉल लीग की को-फाउंडर ने कहा कि उन्होंने हमेशा युवा महिलाओं को मजबूती से खड़े होने और सामने आने के लिए प्रेरित किया है, लेकिन अब उनका संदेश अलग है।

खालिदा ने कहा, ''आज मैं उनसे कह रही हूं कि अपना नाम बदल दें, पहचान हटा दें और अपनी सुरक्षा के लिए तस्वीरों को डिलीट कर दें। मैं उनसे नेशनल टीम की जर्सी हटा देने या जला देने के लिए कह रही हूं। यह मेरे लिए बहुत कष्टदायक है, जिसने एक्टिविस्ट के रूप में काम किया और राष्ट्रीय टीम में पहचान हासिल करने के लिए हर संभव प्रयास किया। चेस्ट पर बैच लगाने के लिए, देश के लिए खेलने के लिए, हमें कितना गर्व था।ठ 1996-2001 के शासन में इस्लामिक कानून को देश में लागू करते हुए तालिबानियों ने महिलाओं की शिक्षा और रोजगार पर बैन लगा दिया था। लड़कियां स्कूल नहीं जा सकती थीं और महिलाओं को बुर्का पहनना पड़ता था। केवल पुरुष साथी के साथ ही उन्हें बाहर निकलने की इजाजत थी। इन नियमों का उल्लंघन करने वाली महिलाओं को क्रूर सजा भुगतनी पड़ती थी। हालांकि, इस पर तालिबानियों ने कहा है कि वह इस्लामिक कानून के दायरे में महिलाओं के अधिकारों का सम्मान करेंगे। खालिदा ने अफगानिस्तान के हालात को लेकर कहा कि महिला खिलाड़ियों में काफी डर और चिंता है। ऐसा कोई नहीं है जिससे सुरक्षा या मदद मांगी जा सकती है। उन्हें डर है कि कभी भी कोई भी दरवाजा खटखटा सकता है। उन्होंने कहा, ''हम एक देश को ध्वस्त होते देख रहे हैं। सभी गर्व, खुशी, महिला सशक्तिकरण...सब व्यर्थ हो गया।

तालिबानी मानसिकता की झलक था केरल का मोपला विद्रोह, बोले आरएसएस नेता राम माधव

कोझीकोड (एजेंसी)। ब्रिटिश राज में केरल में हुए 1921 के मोपला विद्रोह की तुलना राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेता राम माधव ने तालिबानी सोच से की है। उन्होंने कहा कि वह तालिबानी मानसिकता की ही झलक था। उन्होंने केरल की वाम सरकार पर इसे वामपंथी क्रांति बताते हुए इसका जश्न मनाकर सही ठहराने की कोशिश करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय नेतृत्व 'सही इतिहास से अवगत है और इसलिए वह इस तरह के तालिबानी या अलगाववादी ताकतों को देश में हिंसा करने या लोगों को विभाजित करने के लिए जगह नहीं देगा, चाहे वह कश्मीर हो या केरल।' आरएसएस की राष्ट्रीय कार्यकारी समिति के सदस्य राम माधव केरल में 1921 के विद्रोह के दौरान हिंसा का शिकार हुए पीड़ितों की याद में कोझिकोड में आयोजित एक कार्यक्रम में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि मौजूदा समय में पूरी दुनिया में सभी लोगों का ध्यान अफगानिस्तान में तालिबान द्वारा सत्ता पर कब्जा किए जाने पर है। मीडिया लोगों को तालिबान द्वारा पहले भी और अब भी किए जा रहे अत्याचारों के बारे में बता रहा है। उन्होंने आरोप लगाया कि भारत के लिए यह 'कोई नई कहानी नहीं है क्योंकि इस तालिबानी मानसिकता का जन्म खास कट्टरपंथी इस्लामी विचारधारा से हुआ है, जिसकी पहली झलक मोपला विद्रोह के रूप में यहां देख चुके हैं। भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय महासचिव ने दावा किया कि जैसा कि उस समय की गई क्रूरता और हिंसा के बारे में सबको जानकारी नहीं है और वाम सरकार जो कुछ हुआ, उसे सही बताने के लिए इसे अंग्रेजों और सामंती ताक़तों के ख़िलाफ़ वामपंथी क्रांति बता रही है।

इस विद्रोह में शामिल नेताओं को हीरो बताने वाली फिल्मों के निर्माण को बढ़ावा देकर इसका उत्सव मना रही है। उन्होंने आरोप लगाया, 'केरल में वाम शासन है। ये मोपला विद्रोह को अंग्रेज या सामंती या ज़मींदारों के ख़िलाफ़ हुआ आंदोलन बताने की कोशिश कर रहे हैं। यह बिल्कुल अलग रूप में उसका जश्न मनाना चाहते हैं। वह चाहते हैं कि इन विद्रोही नेताओं की 'शूरवीरता के ऊपर फिल्म बने। वामपंथी उदारवादी मोपला विद्रोह को सही ठहराना चाहते हैं।' उन्होंने कहा, 'दुनिया भर में वाम तथ्यों के साथ छेड़छाड़ करने के लिए कुख्यात है और यह उनके जीन में है।'

राज्य में वामपंथी इतिहासकार यह तर्क देते हैं कि मालाबार विद्रोह को हिंदू सामंती ज़मींदारों के खिलाफ किसानों के संघर्ष के रूप में देखना चाहिए। लेकिन केरल के समाज में अब भी इस विद्रोह की प्रकृति पर बहस जारी है कि क्या यह एक उपनिवेश विरोध आंदोलन था जिसने सांप्रदायिक रंग ले लिया या सिर्फ़ कुछ धार्मिक कट्टरपंथियों की वजह से ऐसा हुआ। माधव ने आगे कहा कि 1947 में भारत के विभाजन के लिए उस समय बनी 'तालिबानी मानसिकता' ज़िम्मेदार थी। उन्होंने कहा कि इस मानसिकता की झलक बंगाल में 1946 में बंगाल में और बाद में कश्मीरी पंडितों के ख़िलाफ़ किए गए अत्याचारों में भी देखी गई।

उन्होंने कहा, 'तालिबानवाद देश में एक प्रवृत्ति बन गया है और इसे सही ठहराने की कोशिश होती है। हालांकि, अगर आप इतिहास भूल जाते हैं तो आप इतिहास को अपने सामने दोहराता हुआ पाने के लिए अभिशप्त हैं। इसे याद करने से यह तय होता है कि आप इसे दोहराने की गलती नहीं करेंगे।' राम माधव ने कहा कि 'तालिबानवाद एक कट्टर इस्लामी विचारधारा है और यह मुसलमानों समेत सभी धर्म को क्षति पहुंचाएगा। जब कभी तालिबानी मानसिकता हावी होती है, यह किसी धर्म को नहीं छोड़ती है।

ममता सरकार को हाई कोर्ट का झटका, चुनाव बाद हिंसा की सीबीआई जांच का आदेश

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में चुनाव के बाद हुई हिंसा की जांच के लिए हाई कोर्ट ने सीबीआई की जांच का आदेश दिया है। ममता बनर्जी की सरकार को करारा झटका देते हुए उच्च न्यायालय ने सीबीआई जांच का आदेश दिया है। इसके अलावा कलकत्ता हाई कोर्ट ने हिंसा की घटनाओं की जांच के लिए एसआईटी के गठन का भी आदेश दिया है। इसमें पश्चिम बंगाल काडर के सीनियर अधिकारियों को भी शामिल किया जाएगा। बता दें कि बंगाल की तृणमूल सरकार की ओर से हिंसा की घटनाओं की सीबीआई जांच का विरोध किया गया था। ऐसे में हाई कोर्ट का यह फैसला उसके लिए एक झटके की तरह है। हाई कोर्ट ने बंगाल में चुनाव के बाद हिंसा के दौरान हुए हत्या, बलात्कार के मामलों की सीबीआई जांच का आदेश दिया है। इसके अलावा अन्य अपराधों की जांच के लिए विशेष जांच दल (एसआईटी) गठित किया है। सीबीआई और एसआईटी की जांच उच्च न्यायालय की निगरानी में होगी। कोर्ट ने सीबीआई को 6 सप्ताह के भीतर अपनी जांच रिपोर्ट सौंपने का आदेश दिया है। एक तरफ बीजेपी ने हाई कोर्ट के फैसले का स्वागत किया है तो टीएमसी ने नाखुशी जाहिर की है। टीएमसी नेता सौगत रॉय ने कहा, 'मैं इस फैसले से नाखुश हूं। यदि राज्य के कानून-व्यवस्था के किसी भी मामले में सीबीआई जांच करने आती है तो फिर यह राज्य सरकार के अधिकार क्षेत्र में दखल होगा। मुझे भरोसा है कि राज्य सरकार स्थिति की समीक्षा करेगी और फिर जरूरत होगी तो उच्चतम न्यायालय में आदेश को चुनौती देगी।

यशवंत सिन्हा को बदले-बदले तालिबान नजर आते हैं, मोदी सरकार को दी नसीहत

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व विदेश मंत्री यशवंत सिन्हा ने गुरुवार को कहा कि तालिबान के मामले में भारत को खुले दिमाग से विचार करना चाहिए। उन्होंने मोदी सरकार को नसीहत दी कि काबुल में दूतावास खोल देना चाहिए और राजदूत को वापस भेजा जाए। तृणमूल कांग्रेस नेता ने यह भी कहा कि तालिबान बदला हुआ नजर आ रहा है। सिन्हा लंबे समय तक भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष नेतृत्व में शामिल रहे विदेश मंत्रालय के साथ ही वित्त मंत्री भी रह चुके हैं। एक इंटरव्यू में यशवंत सिन्हा ने कि अफगानिस्तान के लोग भारत को बहुत प्यार करते हैं। पाकिस्तान वहां लोकप्रिय नहीं है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार को यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि तालिबान पाकिस्तान की गोद में बैठ जाएगा, क्योंकि हर देश अपने हित साधता है। सिन्हा ने कहा, ''तालिबान का अफगानिस्तान के अधिकांश हिस्से पर नियंत्रण है, यह सच्चाई है।'' उन्होंने कहा कि भारत को 'इंतजार करो और देखो' की नीति अपनानी चाहिए और इसे मान्यता देने या खारिज करने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए। पूर्व विदेश मंत्री ने यह भी कहा कि तालिबान अब बदल चुका है। उन्होंने कहा, ''ऐसा प्रतीत होता है कि 2021 का तालिबान 2001 जैसा नहीं है। कुछ बदलाव दिख रहा है। वे परिपक्व बातें कर रहे हैं। हमें इस पर गौर करना चाहिए। अटल बिहारी वाजपेयी की सरकार में सिन्हा विदेश मंत्री थे लेकिन वह मोदी सरकार के आलोचक हो गए और उन्होंने भाजपा छोड़ दी थी। वर्तमान में वह तृणमूल कांग्रेस के उपाध्यक्ष हैं। उन्होंने कहा कि तालिबान के काबुल पर कब्जा करने के बाद भारत को दूतावास बंद करने और अपने लोगों को वहां से निकालने के बजाए इंतजार करना चाहिए था। गौरतलब है कि भारत ने बढ़ते तनाव को देखते हुए मंगलवार को अपने राजदूत रूद्रेंद्र टंडन और काबुल दूतावास के कर्मचारियों को वापस बुला लिया था।

अशरफ गनी को भारत में देनी चाहिए शरण, बनानी चाहिए प्रवासी सरकार : बीजेपी सांसद की सलाह

नई दिल्ली (एजेंसी)। अफगानिस्तान की राजधानी काबुल पर तालिबान के कब्जे से पहले ही वहां के राष्ट्रपति अशरफ गनी देश से भाग गए और अब पता लगा है कि उन्होंने संयुक्त अरब अमीरात यानी यूएई में शरण ली है। भारत ने हमेशा से तालिबान का विरोध किया है। इसीलिए अब तालिबान और भारत के रिश्ते के भविष्य को लेकर कई तरह के कयास भी लगाए जा रहे हैं। हालांकि, बीजेपी सांसद सुब्रमण्यन स्वामी ने अलग ही राग छेड़ दिया है। लंबे समय से बीजेपी से नाराज चल रहे स्वामी ने कहा है कि भारत को अशरफ गनी को शरण देनी चाहिए। सुब्रमण्यन स्वामी ने गुरुवार को ट्वीट किया, 'भारत को अफगानिस्तान के पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अशरफ गनी को अपने यहां रहने के लिए आमंत्रण देना चाहिए।

हिंदी में जवाब मिलने पर भड़के तमिलनाडु के सांसद एचसी पहुंचे, अदालत का केंद्र को आदेश- अंग्रेजी में ही दिया करें जवाब

चेन्नाई (एजेंसी)। गृह मंत्रालय की ओर से तमिलनाडु के सांसद को अंग्रेजी की बजाय हिंदी में जवाब दिए जाने का मामला मद्रास हाई कोर्ट पहुंच गया है। इस पर सुनवाई करते हुए उच्च न्यायालय ने केंद्र सरकार को आदेश दिया है कि सांसद को अंग्रेजी में ही जवाब दिया जाए। केस की सुनवाई कर रहे जस्टिस एन. किरुबाकरन और एम. दुरईस्वामी ने कहा, 'यदि केंद्र सरकार को कोई पत्र इंग्लिश में मिलता है तो फिर उसका जवाब भी इंग्लिश में ही दिया जाना चाहिए।' कोर्ट ने कहा कि केंद्र सरकार को ऑफिशियल लैंग्वेजेस एक्ट, 1963 के नियमों का पालन करना चाहिए। तमिलनाडु की मदुरै लोकसभा सीट से सांसद एस. वेंकटेशन ने इंग्लिश की बजाय हिंदी में होम मिनिस्ट्री से जवाब मिलने पर अदालत का रुख किया था। उनकी मांग थी कि केंद्र सरकार से तमिलनाडु के संवाद में अंग्रेजी का ही इस्तेमाल किया जाना चाहिए। इसके अलावा तमिलनाडु के सांसदों और लोगों से भी इंग्लिश में ही संवाद होना चाहिए। यह मामला तब उठा, जब वेंकटेशन ने गृह मंत्रालय को पत्र लिखा था कि सीआरपीएफ के एग्जाम सेंटर्स तमिलनाडु और पुदुचेरी में बनाए जाने चाहिए। उन्होंने यह मांग करने वाला लेटर इंग्लिश में ही लिखा था, लेकिन इसका जवाब उन्हें हिंदी में मिला। इस पर उन्होंने आपत्ति जताई और केंद्र के खिलाफ हाई कोर्ट पहुंच गए।

शायद देश का यह ऐसा पहला ही मामला होगा, जब पत्र लिखने में भाषा के इस्तेमाल का मामला कोर्ट तक पहुंचा हो। गृह मंत्रालय की ओर से हिंदी में जवाब मिलने पर विरोध दर्ज कराते हुए वेंकटेशन ने एक और पत्र लिखा और कहा कि वह हिंदी भाषी राज्य के नहीं है और उन्हें हिंदी पढ़नी नहीं आती है। इसके बाद उन्होंने कोर्ट में अर्जी डालकर मांग की कि जिन अधिकारियों ने उन्हें हिंदी में जवाब दिया है, उनके खिलाफ एक्शन लिया जाना चाहिए। सांसद ने कहा कि मुझे इस पत्र का अंग्रेजी अनुवाद भी नहीं मुहैया कराया गया। यह संविधान के तहत और ऑफिशियल लैंग्वेजेस एक्ट के तहत मिले अधिकारों का उल्लंघन है। इस पर अदालत में केंद्र सरकार ने कहा कि उनकी ओर से हिंदी में अनजाने में जवाब दिया गया था। ऐसा जानबूझकर नहीं किया गया है। इस पर अदालत ने कहा कि केंद्र सरकार को ऑफिशियल लैंग्वेजेस एक्ट के सेक्शन 3 का पालन करते हुए कोई भी संदेश हिंदी और अंग्रेजी दोनों में जारी करना चाहिए। तमिलनाडु में भाषा के आंदोलन का एक लंबा इतिहास रहा है। 1960 के दशक से ही तमिलनाडु की ओर से यह आरोप लगता रहा है कि केंद्र सरकार उन पर हिंदी भाषा को थोपने का प्रयास कर रही है।

हिंसा की सीबीआई जांच को राजी नहीं ममता सरकार, कहा- सुप्रीम कोर्ट में देंगे चुनौती, बीजेपी ने बोला हमला

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव के बाद हुई हिंसा की जांच मामले में ममता सरकार को हाईकोर्ट से झटका लगा है। कलकत्ता हाईकोर्ट ने चुनाव बाद हुई हिंसा मामले में सीबीआई की जांच का आदेश दिया है। हालांकि, इस फैसले से ममता सरकार खुश नजर नहीं आ रही है। ममता सरकार ने कहा है कि वह इस फैसले को सुप्रीम कोर्ट में चुनौती देगी। हाईकोर्ट के इस फैसले भाजपा को अब हमला बोलने का मौका मिल गया है और उसने कहा है कि इस फैसले ने सरकार को उजागर कर दिया है। ममता बनर्जी के करीबी और टीएमसी सांसद सौगत रॉय ने कहा कि मैं इस फैसले से नाखुश हूं। अगर हर कानून और व्यवस्था के मामले में, जो पूरी तरह से राज्य सरकार के अधिकार क्षेत्र में है, सीबीआई का दखल होता है तो यह राज्य के अधिकार का उल्लंघन है। मुझे यकीन है कि राज्य सरकार स्थिति को समझेगी और अगर जरूरत हुई तो सुप्रीम कोर्ट में अपील करने का निर्णय लेगी।

वहीं, कलकत्ता हाईकोर्ट के फैसले पर केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने कहा कि हम कोर्ट के फैसले का स्वागत करते है। लोकतंत्र में सभी को अपनी विचारधारा फैलाने का हक है मगर हिंसा फैलाने की इजाजत नहीं है।

एफबी पोस्ट की वजह से सऊदी की जेल में 600 दिन रहने के बाद भारतीय शख्स की हुई वतन वापसी, पर यहां है ट्विस्ट

बेंगलुरु (एजेंसी)। सऊदी अरब की जेल में 600 दिन रहने के बाद एक शख्स भारत लौट आया है और उसकी वतन वापसी में कर्नाटक पुलिस की जांच ने बड़ी भूमिका निभाई है। दरअसल, कर्नाटक पुलिस की एक जांच ने 600 दिनों से अधिक समय से सऊदी अरब की जेल में बंद एक भारतीय शख्स को घर लौटने में मदद की। 34 वर्षीय हरीश बंगेरा एक एयर-कंडीशनिंग तकनीशियन हैं, जिन्हें 22 दिसंबर 2019 को फेसबुक पर मक्का और सऊदी किंग के बारे में अपमानजनक टिप्पणी करने को लेकर ईशनिंदा के आरोप में गिरफ्तार किया गया था।

बाद में कर्नाटक पुलिस की जांच में पता चला था कि सऊदी किंग और मक्का लेकर फेसबुक पर अपमानजनक पोस्ट हरीश बंगला ने नहीं बल्कि उडुपी जिले के अब्दुल हुयेज़ और अब्दुल थ्यूएज़ द्वारा बनाए गए एक नकली अकाउंट से किए गए थे। पुलिस ने अक्टूबर 2020 में इन दोनों को गिरफ्तार किया था। जिसके बाद उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने फेसबुक पर बंगेरा की तस्वीर इस्तेमाल कर अपमानजनक टिप्पणी की थी। इसी जांच की वजह से परिवार बंगेरा को रिहा करने में कामयाब रहा। हरीष बंगेरा बुधवार को बेंगलुरु के केम्पेगौड़ा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचे। हमारी सहयोगी वेबसाइट हिन्दुस्तान टाइम्स से बात करते हुए उन्होंने कहा कि वह एक 'इन्क्वायरी जेल' में बंद थे और उनके अपने लोगों के घर वापस आने के प्रयासों की वजह से उन्हें सजा नहीं दी गई। उन्होंने कहा, 'मैं उन लोगों को कैसे धन्यवाद दूं, जिन्होंने मेरी रिहाई में मदद की। उडुपी पुलिस की रिपोर्ट ने मेरी बेगुनाही साबित कर दी। मुझे फंसाए जाने के बाद उन्होंने बहुत मेहनत की। अगर यह कोरोना का दौर नहीं होता तो मुझे बहुत पहले रिहा कर दिया जाता। उन्होंने कहा कि हालांकि, उन्हें सऊदी अरब में काम करना जारी रखने की पेशकश की गई थी, मगर वह अपने गृहनगर लौटना चाहते थे। उन्होंने कहा कि कंपनी कानून का पालन कर रही थी। इसलिए उन्होंने मुझे कोर्ट के सामने सरेंडर करने को कहा था। एक बार जब मुझे रिहा किया गया, तो उन्होंने कहा कि मैं अपना काम जारी रख सकता हूं क्योंकि मैं निर्दोष साबित हुआ था, मगर मैं अपने परिवार के साथ रहना चाहता था।

एनडीए एग्जाम, तीन तलाक से सबरीमाला केस तक, जब सरकार-समाज ने किया था इनकार, एससी ने महिलाओं के दिए अधिकार

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने महिलाओं को एनडीए यानी नेशनल डिफेंस एकेडमी की परीक्षा में भी बैठने की अनुमति देकर आधी आबादी के हक में एक और फैसला दिया है। पिछले 71 सालों के इतिहास में भारत के सवीच्च न्यायालय ने बार-बार महिलाओं के अधिकारों की हिमायत की है और ऐसे कई मौके आए हैं, जब सुप्रीम कोर्ट ने महिलाओं के हक में फैसले दिए। इतना ही नहीं, सरकार द्वारा लिंग के आधार पर भेदभाव किए जाने पर भी सुप्रीम कोर्ट उनके हक में खड़ा रहा है। तो चलिए जानते हैं कुछ सुप्रीम कोर्ट के उन फैसलों को जो महिलाओं के हक में रहे हैं। संपत्ति में बेटा-बेटी का समान हकः पिछले साल अगस्त में सुप्रीम कोर्ट ने एक ऐतिहासिक फैसला दिया और कहा कि पैतृक संपत्ति में बेटी का भी बराबर का हक है। अपने फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने हिंदू बेटियों को उसी तरह पारिवारिक संपत्ति का उत्तराधिकारी का दर्जा दिया,

जिस तरह से बेटों को पहले से मिलता रहा है। इसने 2005 के कानून का दायरा उन बेटियों तक बढ़ा दिया जिनके पिता कानून लागू होने की तारीख तक जीवित नहीं थे। फैसला विनीता शर्मा बनाम राकेश शर्मा मामले में आया था। दरअसल, कोर्ट ने कहा था कि नौ सितंबर 2005 के बाद से बेटियों के हिंदू अविभाजित परिवार की संपत्तियों में हिस्सा मिलेगा। यहां यह जानना जरूरी है कि इसे लेकर साल 2005 में कानून बना था कि बेटा और बेटी दोनों के पिता की संपत्ति पर बराबर का हक होगा। मगर इसमें यह स्पष्ट नहीं था कि अगर पिता की मृत्यु 2005 से पहले हुई हो तो क्या यह कानून ऐसे परिवार पर लागू होगा या नहीं। सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला विनीता शर्मा बनाम राकेश शर्मा मामले में आया था।

वर्कप्लेस प्रोटेक्शनः 1997 में विशाखा बनाम राजस्थान राज्य के मामले में सुप्रीम कोर्ट ने नियोक्ताओं के लिए अपनी महिला कर्मचारियों की शिकायतों के निवारण के लिए एक तंत्र बनाने के लिए दिशा-निर्देश तैयार किए थे।

दुनिया में अपनी मान्यता के संकट से जूझ रहा है तालिबान, पर मैं नहीं मानता कि वह बदल गया : जो बाइडेन

वॉशिंगटन (एजेंसी)। तालिबान पूरी दुनिया में मान्यता के लिए जूझ रहा है, लेकिन मैं नहीं मानता कि वह बदल गया है। यह कहना है अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन का।

अंखड भारत संदेश के लिए स्वामी श्री योगी सत्यम क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज 211019 से प्रकाशित एवं रामा प्रिंटिंग प्रेस 53/25/1ए बेली रोड नया कटरा प्रयागराज से मुद्रित।

मुद्रक/प्रकाशक

स्वामी श्री योगी सत्यम पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से संबंधित विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा। आरएनआई नं.

UPHIN 2001/9025

वह एक न्यूज के जॉर्ज स्टेफैनोपॉल्स को इंटरव्यू दे रहे थे जो गुरुवार सुबह प्रसारित हुआ। बाइडेन ने कहा कि तालिबान अपने अस्तित्व के लिए जूझ रहा है। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में वह अपनी मान्यता चाहता है, पर मुझे नहीं लगता कि तालिबान में कोई बदलाव हुआ है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि यह भविष्यवाणी नहीं की जा सकती कि तालिबान अमेरिकियों को अफगानिस्तान से बाहर जाने देगा। वजह, उसकी फितरत ऐसी रही है कि उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। इसको देखते हुए अमेरिकी सैनिक तब तक अफगानिस्तान में रहेंगे जब तब कि सभी अमेरिकी वहां से सुरक्षित बाहर नहीं निकल जाते हैं। अगर इसके लिए 31 अगस्त की तय समय-सीमा का उल्लंघन भी करना पड़े तब भी चलेगा। गौरतलब है कि जो बाइडेन इन दिनों अफगानिस्तान से अमेरिकी फौजों को हटाने के अपने फैसले का बचाव करते नजर आ रहे हैं। उन्हें उम्मीद है कि अमेरिकी वोटर अफगानिस्तान में 20 साल पुराने युद्ध का अंत चाहते हैं। साथ ही अफगान लोगों के देश छोड़कर भागने के दिल दहलाने वाले वाकयों के लिए भी उन्हें माफी मिल जाएगी।

इस दौरान बाइडेन ने कहा कि अमेरिकी इंटेलीजेंस को इस बात का अनुमान भी नहीं था कि सबकुछ इतनी जल्दी हो जाएगा। उनका आशय अमेरिकी सेना के अफगानिस्तान छोड़ने के तालिबान के तेजी से उभरने को लेकर था।

इजरायल में अब गे भी कर सकेंगे रक्तदान, दशकों पुराने नियम को सरकार ने किया खत्म

येरुशेलम (एजेंसी)। इजरायल में अब गे भी रक्तदान कर सकेंगे। यहां पर सरकार ने इससे जुड़े नियमों में परिवर्तन कर दिया है। इजरायली स्वास्थ्य मंत्री नितजान हॉरोविट्ज ने एक बयान में कहा कि गे लोगों को रक्तदान से वंचित रखना एक तरह का स्टीरियोटाइप था। यह पुरानी सोच को दर्शाने वाला फैसला था। बता दें कि इजरायली स्वास्थ्य मंत्री खुद गे हैं। उन्होंने आगे कहा कि कोई भी रक्तदाता चाहे वह किसी भी जेंडर या सेक्सुअल ओरिएंटेशन का हो, वह लोगों की जान बचाने के लिए रक्तदान कर सकता है। गौरतलब है कि अमेरिका और ब्रिटेन में भी गे लोगों को रक्तदान करने की इजाजत दी गई है। स्वास्थ्य मंत्रालय के बयान के मुताबिक एक अक्टूबर से ब्लड डोनेशन से पहले भरे जाने वाले फॉर्म में बदलाव किया जाएगा। इसके मुताबिक वह क्लॉज जिसमें गे से ब्लड लेने की मनाही थी, उसे कैंसल कर दिया जाएगा। हालांकि इसमें एक नया क्लॉज जोड़ा गया है। इसके मुताबिक ऐसे लोग जिन्होंने पिछले तीन महीने में ज्यादा रिस्की सेक्स संबंध बनाए हैं या फिर जिन्होंने कई पार्टनर्स से संबंध बनाए हैं, उनसे खून लेने पर मनाही रहेगी। हालांकि एक अन्य विकल्प यह दिया गया है कि ऐसे लोगों का चार महीने से रखा हुआ प्लाज्मा लिया जा सकता है ताकि किसी तरह के संक्रामक रोग का खतरा न रहे।

तालिबान के इन 7 लोगों के हाथों में अब अफगानिस्तान की कमान, कई हैं खूंखार आतंकी और मोस्ट वॉन्टेड

नई दिल्ली (एजेंसी)। तालिबान के लड़ाके अफगानिस्तान पर कब्जा जमा चुके हैं। अफगानिस्तान के राष्ट्रपति अशरफ गनी देश छोड़कर भाग चुके हैं। अफगानिस्तान में कब्जा जमाने के बाद अब तालिबानियों के नेतृत्व को लेकर संशय बरकरार है। तालिबान के नेतृत्व को लेकर पहले भी स्थिति साफ नहीं थी। खासकर जब 2001 में जब अमेरिका ने आक्रमण किया था। अफगानिस्तान पर कब्जा जमाने के बाद अब आतंकवादी खुद को और अधिक उदारवादी सांचे में ढालने की कोशिश कर रहे हैं। अफगानिस्तान पर कब्जा जमाने के बाद तालिबानी नेताओं का नया चेहरा भी सामने आया है। जिसमें वो अपने दुश्मनों के लिए माफी का वादा करना, विभिनन्-जातीय समूहों के साथ एक समावेशी सरकार बनाने का वादा करना, आतंकवादी समूहों को अफगान धरती से दूर रखना और महिलाओं को शरिया कानून की सीमा के भीतर काम करने की अनुमति देना का वादा कर रहे हैं।तालिबान के वरिष्ठ नेतृत्व में कई मुजाहिदीन लड़ाके शामिल हैं जिन्हें कभी शीत युद्ध के दौरान अमेरिका द्वारा 1980 के दशक में हमलावर सोवियत संघ बलों के खिलाफ लड़ाई के लिए प्रशिक्षित किया गया था। मौजूदा वक्त में अगर बात करें तो तालिबानी संगठन में कुल सात प्रभावशाली नेता हैं। जिनके बारे में आप नीचे पढ़ सकते हैं। 1961 में जन्मे अखुंदजादा तालिबान का तीसरा सवीच्च कमांडर है। संगठन में सवीच्च रैंक है। अमेरिका की ओर से 2016 के ड्रोन हमले में अपने कमांडर के मराने के बाद यह गद्दी मिली। अखुंदजादा की गिनती एक सैन्य कमांडर की तुलना में एक धार्मिक नेता के रूप में अधिक जाने जाते हैं। तालिबान के शीर्ष नेता बनने के बाद से अखुंदजादा को सार्वजनिक रूप से नहीं देखा गया है और उनकी कुछ तस्वीरें उपलब्ध हैं।